नवीन पुस्तक छपावनीछे

श्रीपंचपरमेष्ठीभ्योनमः

श्री जैन धर्म सिध्धात सार पुस्तक

सर्वत्र जैनधर्मी लोकोने जाहिर करुं छुं कीं ए पुस्तक छापवनी छे इणमे प्रथम चोविस तीर्थंकरनां दर्शन अनुपुरवनी नवकार मंत्र पंच मांगलीकरुप देवसी रायसी प्रतीक्रमण विधी पक्खी खामणा चैत्य वंदन विधी थाक स्तव अरिहंत स्तुती जिन पुजा काउसग्ग करवानो विधी श्रावकनां मनोरथ भगवाननां म गळीक काव्य चोवीस तीर्थंकरनां चोविस ढाळाको स्तवन दान सीळनो चोढाळीयो जीवोत्पती क्षमा छत्रीशी गातम सामीको रास नवतत्व विचार इगीआर ढाळनो चोवसि दंडकनो विचार आठे कर्मनां उत्तर प्रकृती सहित नाम नवतत्वनां उत्तर भेद स हित नाम चौद मार्गणनां भेद बत्रीश अनंत कायना नाम स मायाम्कि काळनां सक्षेपक प्रमाण इत्यादिक अनेक जुदा जुदा बोल थोकडा तत्व ज्ञान रास चोढाळ्या स्तवन प्रभातीया मंगळीक काव्य छंद होरीया छावणीया सझाउ शत्रुंजय गीर नारनां स्तवन सिद्ध चक्रजीनां स्तवन श्रावकना आचारना भी स मिश्र भातनां स्तवन प्रतिबोध उपदेश इत्यादिक आ पुस्तक मा बधामळी १९० ग्रंथ सतावमी मां आवशे तेमाटे आ पुस्त कोने महारा श्रावक धर्म पाळणहार माइऊ सारुं उत्तेजन आपिने एहनों आवश्य संग्रह करवा माटे एक एक पुस्तक लेवा लायकछे आपुस्तकोनी अगाऊ सही देणारानें फक्त किमत (सवा रुपया राखीछे)-पुस्तक तयार थया पछी पधी जोरी किंमत राखवामां आवशे

नाना दादामी गुद पुर्णे

श्रीकेशरीयानाथायनमः

॥ श्रीमानतुंगराजा अने मानवती राणीको रास लिख्यते ॥
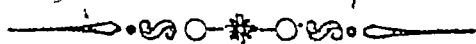
॥ दुहा ॥ ऋषभजिणंद पदांबुजे, मन मधुकर करि लीन ॥ आगमगुणसौरभ्यवर, अतिआदरथी कीन ॥ १ ॥ यानपात्रसम जिनवरू, तारण भवनिधितोय ॥ आपत रच्या तारे अवर, तेहनें प्रणिपाति होय ॥२॥ भावें प्रणमुं भारती, वरदाता सुविलास ॥ बावन अक्षरथी भरयो, अखय खजानो जास ॥ ३ ॥ शुक्र करचा केई शनीथकी, ए हवी जेहनी शक्ति ॥ किम मूकाए तेहना, पदनी कोविद भक्ति ॥ ४ ॥गुरु गुण अगणित कुण गिणे, तारक कवण गणंत ॥ कुण तर्जनीअंगुलिसिरें, धरणी अधर

॥ ५ ॥ अद्वितीय दीपक सुगुरु, करता ज्ञानप्रकास ॥ पिण हर्ता अज्ञानतम, सेवु तस थइ दास ॥ ६ ॥ जिनआगमवरदा सुगुरु, तेहना प्रणमी पाय ॥ धरमतणा अधिकारथी, ऋद्धिवृद्धि नित थाय ॥ ७ ॥ द्विप्रभेद ते धर्म छे, आगारी अणगार ॥ व्रत पिण द्वादश पंच तिहां, तेहना विविध प्रकार ॥ ८ ॥ मृषावादव्रत द्वितीय ए, मृषातणो परिहार ॥ सत्यवचन आराधिये, तो वरिये शिवनार ॥ ९ ॥ कूट मृषा तजता थका धरिये इम प्रतिबंध ॥ सत्यवचन ऊपर सुणो, मानवतीसंबंध ॥ १० ॥ अतिहि कौतुकनी कथा, सांभलजो चित लाय ॥ मत करजो श्रोता सकल, बधिर गीतनो न्याय ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चापाईनी देशी ॥ मा

नांगुल जोयण एक लाख ॥ वट्टविष्कंभ जं
बूनो भाख ॥ जगती आठ जोयण उच्चंत
॥ बार चार धुर ऊवरि दंत ॥ १ ॥ चार
अनुत्तर नामेद्वार ॥ उंचत आठ जोयण वि
स्तार ॥ पंचसयां धनु तिहां वेदिका ॥ ली
जे जोयण सवि देवका ॥ २ ॥ छ कुलगिं
री छे जंबूमझार ॥ सातमो मध्य मेरु वन
धार ॥ क्षेत्र सात वलि तिहां आद्यंत ॥ भ
रततणी सीमा हिमवंत ॥ ३ ॥ तेह भर-
तनो जोयणमान ॥ पांचसे छविस छकला
नाण ॥ बीजा क्षेत्रतणा अधिकार ॥ लेजो
शास्त्रथकी सुविचार ॥ ४ ॥ दक्षणभरते मालव
देश ॥ नहि रोरव वली नही कलेश ॥ अवर दे
साजिम फाणि परखिये ॥ एतो माणिसम करी
लेखिये ॥ ५ ॥ तिहां नगरी उझयणी ना
म ॥ अमरपुरीके लंका धाम ॥ ए आगल

ढंका वारिंडी ॥ लडथडती जलनिधिमा प
डी ॥ ६ ॥ स्फटिकरतनतणा जिहा गेह॥
नममडल तजि लखता जेह ॥ नयरी ए
वीट्यो वप्रघट्ट, युवति भातिमनु धरयो
योगपट्ट ॥ ७ ॥ ग्रह ग्रह केतु चपल थई
घणे ॥ मनु सुरग्रहने चपेटे हणे ॥ हाटे
हाटे क्रियाणा घणा ॥ पकपुंज तिहा कुंक
मतणा ॥ ८ ॥ दूदाला व्यवहारी वसे ॥
पकजसरिखा आनन हसे ॥ चद्राननी चा
ले चमकती ॥ नेपुर झाझर रमझमकती
॥ ९ ॥ हयगय रथ पायक परिवार ॥ ग
हमह अहनिम रहे दरवार ॥ मानतुगरा-
जा कर राज ॥ मकरध्वजरुपे वड लाजा॥
॥ १० ॥ वाच काछ निकलक नरेस ॥ ज
स भय मत्र शत्रुविन्ग ॥ परिजनने अमृ
तसम जिम्य। ॥ खल्न अनलसम अचरि

ज किस्यो ॥ ११ ॥ जनपद सोलतणा नृ पतणी ॥ पुत्री विलसे प्रीतेघणी ॥ महिप ति ते स्त्रीये परवरयो ॥ सोल कला लेई शशी उतरयो ॥ १२ ॥ बुद्धिनिधान सुबु द्धि परधान ॥ ते ऊपर भुपनो बहुमान ॥ न्यायें राज्य करे भूपाल ॥ इमभणे मोहन पेहेली ढाल ॥ १३ ॥

दुहा ॥ एक दिन छंदपूरी करी, बेठो अवनीनाथ ॥ ऊभा सेवक आगले, जोडी जोडी हाथ ॥ १ ॥ नृत्यकार नाटक करे, गायनपण करे गान ॥ वंदीजन बोले बि॰ रुद, भुंजे पान सुपान ॥ २ ॥ एहवे सिं- ध्यासमय तिहां, प्रगट्यो रंग असंख ॥ झल्लर झणकारा थया, गरजे घन जिम शंख ॥ ३ ॥ हयगयरथ वहेता रह्या, गह मह थई प्रतिगेह ॥ चंचल हुई पदमिनी,

कुलटा तस्कर जेह ॥ ८ ॥ दीपकज्योति य
ई सुभग, ठाम ठाम जलकंत॥मानु नयरी
नयण करी, नरप तिने निरखंत ॥९॥याम
एक गई जामिनी सभा विसर्जी राय॥श्रोता
सामलजा हिवे, जे कौतुक इहां थाय ॥ ६ ॥
॥ ढाल वीजो ॥ हमीरानी देशी ॥ म
हीपति मनमा चिंतवे, निरखुं नगरस्वरू
प ॥ चतुरनर ॥ परिजनमें इहां माहरो ॥
केहवोछे न्याय अनूप ॥ चतु. ॥ १ ॥ सू
रिजन सामलजो कथा, रसिक थई देई
कान॥च ॥ ऊपजसे रस रंगनो, चाख्या
थी जिम पान ॥ च ॥ सु ॥ २ ॥ मुझ
ऊपर माहरी प्रजा, केहवो राखेछे नेह ॥
च. ॥ के छे सरवे स्वारथी, के आज्ञाका
री एह ॥ च ॥ सु ॥ ३ ॥ ऊठ्यो परी
क्षा कारणे, नरपती लेई करवाल ॥ च.॥

नीलवसन ओढी करी, चाल्यो थई उजमाल ॥ च० ॥ सु० ॥ ४ ॥ चाचर चोहट गलिये भमे. एकलडो नरराज ॥ च० ॥ गलिये गलिये सांभले, निजजसनो आवाज ॥ च० ॥ सु० ॥ ५ ॥ लोक सकल कहे आपणे. राजासमो नहि कोय ॥ च० ॥ वाक्य वच्छल हरिचंद जिस्यो, भुजबलभीम ज्यूं होय ॥ च० ॥ सु० ॥ ६ ॥ आपणी नगरीमे नथी, चौरादिकनी भीत ॥ च० ॥ नवि लिये कोई तृणो पड्यो, रामना राजनी रीत ॥ च० ॥ सु० ॥ ७ ॥ करदंड नही कोइ ऊपरे, दंड देवल अतिचंग ॥ च० ॥ बंधन धम्मिले अछे, ताडना जलघटी संग ॥ च० ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रगट्युं भाग्य प्रजातणुं, राजननी थई रूप ॥ च० ॥ वायहजी लाग्यो नथी, कलियुगनो तनु भूप ॥ च० ॥

स० ॥ ९ ॥ ए महिपति चिरजीवजो, मत होजो ऊनो वाय ॥ च० ॥ खारे दरीये ज ई पडा, नृपनी अलाय वलाय ॥ च० ॥ सु० ॥ १० ॥प्रभु एहना मनडातणी, पूर जो नितप्रते आम ॥ च० ॥ लोढाजो ए- हना सदा, दुरजन थइने कपास ॥ च० ॥ सु०॥ ११ ॥ एह नृपने गुणेकरी खेच्यो- छ जसनो वितान ॥ च० ॥ तेहने तु त्रि भुवनधणी, मत करज नुकसान ॥ च० ॥ सु० ॥ १२ ॥ एम प्रजाना मुखथकी, जि हा तिहा सुणी वात ॥ च० ॥ मनमें अ- तिविकसित थयो, जिव जल वर्रे द्रुमपात ॥ च० ॥ सु० ॥ १३ ॥ धन धन ए मा हरी प्रजा, मुझ ऊपर धरे राग ॥ च०॥ सहुए वाछेछे भलु, माहरु पूरण भाग ॥ च० ॥ सु० ॥ १४ ॥ मोह नविजयें हे-

जशुं, भाषी बीजी ढाल ॥ च० ॥ कहीस सरस हिवे हुं कथा, सांभलो बाल गोपा-ल ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ आगल नरपति संचरयो, दीठो कौतुक एक ॥ कन्या पांचमिली भली, व धते रूप विवेक ॥ १ ॥ समरूपे सरिखे गुणे, सरखी वय सोहंत ॥ गोरी गुणणी उरडी, सुरनरमन मोहंत ॥ २ ॥ पहेरी पीतावंर प्रवर, सोल सजी सिणगार ॥ भोली टोलीयें मिली, रमवानें तिणवार ॥ ॥ ३ ॥ कुब्जरूप महीपति करी, निरखे क न्याकेलि ॥ क्रिडा आरंभे हिवे, पंचे गज गति गेल ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रमतां फाटो घाघरोरे, दसगज फाटो चीररे लूंबे ॥ आवरे उलगा पा तारा कांकणीने जूंब ॥ एदेशी ॥ करपो

बाधी घूघरारें, फरहरता करी वस्त्रे वा-
ला॥ ढलतारे मूक्या शिरथी गोफणाफूदा-
ला॥१॥ विमल कमललेई बिहू कररे, घा
ले हमि गलबाहिरे दोढी॥ जाणेरे मतवा
ला मूक्या कलभलारे छोडी ॥२॥ क्षिणमे
पयकरी एकठारे, एकएकना ग्रहे हाथरे कू
दी॥ भातीरे रस रातीताती लेवतीरे फूदी
॥ ३ ॥ घाले घुमण घुमतीरे, पयतलनी प
डतालरे रूडी॥ खलकेरे चलकारा हाथें सो
भतीरे चूडी ॥४॥ गाती गीत सुकठथीरे,
झाझग्ना झणकाररे रगें ॥ जाणेरे कहूकी
कोकिल अवने प्रसगें ॥ ५ ॥ एडीएक उ-
भीरहरे चक्रपरें फिरे फेररे थोडो॥ दोढी
नेले घरी पाणी पयनोज्यु घोडो ॥ ६ ॥ए
वएकन ताली दीयेरे, मटकती फरती हा
मरे वारु॥ ग्रमननी जोतें दीपकहार तोते

वारु ॥७॥ नाचे नवनव रीतथोरे, छंद अ
ने उपछंदरे माने ॥ पोहोचीरे नसके कोई
किन्नरीयुं गाने ॥८॥ विस्मय पाम्यो मन्न
मांरे, निरखी एहवो ख्यालरे राजा ॥ आ
लोचे एहवो तिहां आपथी दीवाजा ॥९॥
एहशुं गगनथी उतरीरे, आवी रमवा का
जरे रंगें ॥ सहुने सुख होवे वलि येहने प्र
संगें ॥१०॥ टोले मिलिये नाचतीरे, अप
च्छर मिलीने अत्ररे येहवी ॥ बीजीरे सी-
दीजे येहने उपमारे केहवी ॥११॥ नाखी
यें येहने ऊपररे, उर्वसीने उवाररे साचे ॥
खेचरीयो सुरनारी बापडीसुं नाचे ॥१२॥
केये पातालनी सुंदरीरे, आवी रमवा का
जरे रेणी ॥ नेतारे नव दीठी येवी कोई मृ
गानेणी ॥१३॥ आजभले इहां नीसरयोरे
अचरिज जोवा काजरे हुंतो ॥ नहितोये

कौतुक नयणे किहा थकीरे जोतो ॥ १४ ॥
आज नयण पावन थयारे, वदनमें अमृत
बिंदूरे पीधुं ॥ चोरीने कन्याये माहरु मन्न
हुरे लीधु ॥ १५ ॥ येहवे रूपें बालिकारे, कि
म घडी सक्यो किरतारंरे साथे ॥ येहवीरे
लिपी रुडी बेठी क्याथकीरे हाथे ॥ १६ ॥
चिंतवतो इम भूपतीरे, ऊभो समीपें आय
रे छानो ॥ साभलतो चित आणी गीत थई
येकतानो ॥ १७ ॥ मोहनविजयें रगथीरे,
भाखी त्रीजी ढालरे मीठी ॥ कहियेछे सुक
था जेहवी शास्त्रमाहे दीठी ॥ १८ ॥

दुहा ॥ एहवे थाकी बालिका, रामत क
रीने ताम ॥ खेद खिन्न हुई थकी, बेठी स
हु एकठाम ॥ १ ॥ मानवती धनदत्तधिया,
निरमी कुमरी मन्न ॥ सोहे एहवी सील जि
न, बीटयो हूतो लन्न ॥ २ ॥ रोहिणिना ता

एकपरे, सोहे कन्यापंच ॥ मांडे अंतरगतत
णी, वाता तजी खलखंच ॥ ३ ॥ नृप जोतो
हरणीपरें, ऊभो निसुणे वात ॥ वातोजे थाय
इहां, सूकी सुणो व्याघात ॥ ४ ॥

॥ढाल चोथी॥नदी यमुनाकेतीर उडेदोय
पंखीया ॥ एदेशी ॥ मानवतीभणी तामवदे
चउबालिका, रेरे सांभल प्राणतणी प्रति
पालिका ॥ रामतमांहे आज विलंब नकीजी
यें, खेली खेल अशेषके लाहो लीजीयें॥१॥
थोडामांहें काज घणो नबिगाडिये, थोडी र
हीछे रेण रमीने गमाडिये ॥ एमेलो एरात
जाये सोहणी जिसी, उठो उतरयो खेद
के ढीलकरो किसी ॥ २ ॥ जायछे आंजनी
राततें कोडिटंका समी, भोली थाए असुर
गहे पोहोचोरमी॥लटका चटकामांहे जेकोई
नमापसे, तो बालापण एहपछें शुं जाणसे

॥ ३ ॥ इमक्हे वारवार सखी आदर घणे, मानवती तव तास ईस्या वायकभणे ॥ रे स हीयो किमआज करोहठ एवडो, सहुए थ ई एकराग पुठे मुझ कापडो ॥ ४ ॥ फोगट भोगवे कोण बाई ऊजागरो, योडामाहे स वाद हिवेतो मयाकरो ॥ वलि इहा रामत काले रमसु नवनवी, हरणीढली आका- सके वेला वहूइवी ॥ ५ ॥ गीततणा भणका रजो श्रवणे वागसे, सूता लोकसवे इहा झ वकी जागसे ॥ अतिक्लेसेंजे अर्थकरे स्यो फा यदो, आवजो कालईहायके आपणो वायदो ॥ ६ ॥ मानवती भणीताम चारेचतुरा क्हे ॥ हे वेहेनी अमवातने तुंतोनवी लहे ॥ काल आम रो नात उत्सव मडावसे ॥ त्यारेने वर घार भ ला परणावसे ॥ ७ ॥ परण्या पछे तो होसे रहेवु सासरे अहर्निस वेकर जोडी पीयुर्ने

आसरे॥ सासु सुसरो जेठ नणंदी वडीशि
रें, तेहनी लाज अतीव करेवी नहूपरे॥८॥
करवो घरनो काम अहोनिस चडवडी, न
ही परवार लिगार रहे एके घडी॥ चालवुं
मन अनुजाइ सहुसुं सुंदरी, परणे भूचरी
खेचरी कोण पुरंदरी॥९॥बालपणाना मि
त्रतणो अलजो सही, नीगमवो जमवारो
खुंणे बेसीरही॥ घुंघटना पटमांहे सदा मु
ख राखवुं, हलवे हलवे कंठथी वायक भा
खवुं॥१०॥नजरथी अध खिणमात्र नमूके
धीऊडो, जिम ग्रहि घाल्यो पिंजरमां शुक
जीवडो॥ तेमाटे सखी आज रमो हुंभरभ
री, मानील्यो मनुहार घणे आदरकरी॥
॥११॥पछे एम मिलीने क्यारे रमसुं वाल
ही, गलिया वृषभतणीपरे बेसी तूंकांरही॥
ताहरां सलुणां बोल तेतो नहि वीसरे, तु

झथी रहेवु दूर रखे प्रभुतेकरे ॥ १२ ॥ चो
थी ढाल रसाल येकान जगावती, मोहन
विजयें रगें कही मनभावती ॥ निसुणी श्रो
ता लोक हृदयसुख पामसे साभलजो हि
व मानवती जे वोलसे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ मानवती सहीया प्रते, मधुरे व
चने वदत ॥ रेरे सुगुण सहेलियो, परण्या
कीधो कत ॥ १ ॥ रहेसो जइने सासरे, वहू
वारु थई सार ॥ पियूथी रहेसो बीहता, तो
धिग तुम अवतार ॥ २ ॥ जो प्रीतमवस की
जीये, तो परण्यो परमाण ॥ नहितो जिम
करी कूकसे, भरवो पेट अजाण ॥ ३ ॥ गुणव
तीने आगले, स्यो बलदाखे नाथ ॥ तिम च
ले जिम वालिये, वृषभतणी जेम नाथ ॥ ४ ॥
सुभगो नारी चरित्रनो, कोई नपाम्यो पार ॥
कोटिकोटियुग पचरहे, पाने सरजणहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ आज घरा हुवो धुंध लो होलाल ॥ एदेशी ॥ साहेलडीहे ॥ मानव तीना सुणी बोलडा होलाल, चतुरा चम कीचार ॥ साहेलडीहे, उलंभा देवाभणी हो लाल ॥ इम कहे थई हुसियार ॥ सा० ॥ मो टा बोलन बोलीयें होलाल ॥ १ ॥ नानामुखथी एम ॥ सा० ॥ बोलीयें एहवुं वरे पडे होलाल ॥ कहे अणघटतुं केम ॥ सा० ॥ मो० ॥ २ ॥ नारीनो नर आगले होलाल ॥ स्यो आसरो कहेवाय ॥ सा० ॥ कोडिटंकानी मो झडी होलाल ॥ तो पण पहेरवी पाय ॥ सा० ॥ मो० ॥ ३ ॥ कृष्णागर घणुं रुअडो होलाल ॥ पण पावकमांघलाय ॥ सा० ॥ तटनी घणुं विपमी हुवे होलाल ॥ पण साय रमां समाय ॥ सा० ॥ मो० ॥ ४ ॥ विपधर हुवे घणो वांकडो होलाल ॥ बिलमां सीधो-

होय॥सा ॥एम उखाणा छे घणा होला
ल॥पार न पामे कोय॥सा॰॥मो॰॥५॥
पीयू केम जाये छेतरचो होलाल॥अगें तो
अबला बाल॥सा॰॥ दीठे मारग सचरु
होलाल॥पीर्ने पाय पखाल॥सा॰॥मो॰॥
॥६॥कतनो गायो गायसु होलाल ॥ अ
मचो कामण एह॥सा ॥केवलि वार्ते रीं
जवु होलाल॥केकरी नवलो नेह॥सा॰॥
मो॰॥७॥के भोजन युगते करी होलाल॥
केवळी सजिसिणगार ॥सा॰॥केवली गी
तगानेकरी होलाळ॥ करसु मुदित भरता
र॥सा॰॥मो॰॥८॥ चालीये केम प्राणेश
यी होलाल॥ थइ उपराठा छेक॥सा ॥क
पटें रमीयें तेहथी होलाल॥तो दुहवाये प्र
भु एक॥सा ॥मो॰॥ ९ ॥ पालववाध्यो
जेहथी होलाल ॥ तेहथी किमहुवे कूड ॥

सा० ॥ गरुड आगल लघु चिडकली होला ल ॥ किहांलगे जाए ऊड ॥ सा० ॥ मो० ॥ ॥ १० ॥ त्रटकी मानवती तिहां होलाल ॥ बोली भृगुटी चढाय ॥ सा० ॥ रहोरे वाइ अण बोलीयुं होलाल ॥ सीकरो वातो ब- नाय ॥ सा० ॥ मो० ॥ ११ ॥ नारीयुं कामण गारीयुं होलाल ॥ नर बापडा कुणमात्र ॥ सा० ॥ नारीये केइने छेतरया होलाल ॥ सुं तुमे नवि सुणीवात ॥ सा० ॥ मो० ॥ १२ ॥ उमयाईस नचावीयो होलाल ॥ वलि अहि ल्यायें सुरेश ॥ सा० ॥ अपछरायें ऋषि भो लव्यो होलाल ॥ गोपीयें वली गोपेश ॥ सा० ॥ मो० ॥ १३ ॥ युवती जोरावर जोहु वे होलाल ॥ वालिम थई रहे दास ॥ सा० ॥ पीउनेवश नारी थई होलाल ॥ जनम अ- लेखें तास ॥ सा० ॥ मो० ॥ १४ ॥ मोहनवि-

जयें रगसु होलाल ॥ इमभणी पाचमीढा
ळ॥ सा॰ ॥जेजे मानवती कहे होलाल ॥
ते सामळे भूपाळ॥ सा॰ ॥ मो ॥ १५ ॥

दुहा ॥ सहीयु मानवती भणी, कहेय-
दि तू परणेस॥ त्यारें वश करजे पिऊ, कि
म भोली राखेस॥ १ ॥वलतु मानवती क
हे, ज्यारे परणिस कत॥ एतीविध त्यार क
रीस, ते निसुणो उद्दत॥ २ ॥पीसे चरणो
दक पीयु, जिमसे झुठु अन्न॥ सहसे टुबा
मस्तकें, करसे कोढ जतन्न॥ ३ ॥ घरसे क
रपट मुझतणे, इम वस करसु तास ॥जोये
सघला हु करु, तो कहेजो शाबास ॥४॥
श्यारेकहे हारीअमे, तुझथी माचु मान ॥ इ
मकही उठी ग्रहमणी, पाचे रूपनिधान॥५॥

॥ढाल छठी॥दोरी मारी आवेहो रसि
या कहनले ॥ एदेशी ॥ धरणीधव तव घू-

ज्यो सांभली, मानवतीनारे बोल ॥ चतुर नर ॥ किमए बाला इम बोलीगई, एहवा वयण निटोल ॥ च० ॥ १ ॥ सांभलजो हिवे कौतुकनी कथा, चूंपकरी चितलाय ॥ च० ॥ जोजो लिखित लेख नमिटे कदा, करजो कोडि उपाय ॥ च० ॥ सां० ॥ २ ॥ रूपें रूडी पिण कूडी हिये, न्हानी पिण विपकंद ॥ च० ॥ अमृतरूपें विप दिसे अछे, जुवो जुवो एहनारे फंद ॥ च० ॥ सां० ॥ ३ ॥ हुंसतो मनमां घणी राख अछे, मोटी मेरु-समान ॥ च० ॥ हजी ए बाला उच्छरछे हिवे, निठ हुई बिहुपान ॥ च० ॥ सां० ॥ ४ ॥ आवेछे फाण हजी पय पानना ॥ घालेछे नभबाथ ॥ च० ॥ वांछे सायरतरवो भुजेकरी, अचरिज ए जगनाथ ॥ च० ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ एकिम पीयुने पाय लगाडसे, त्रट-

की बोलीरे एह ॥ च० ॥ मेंतो पाचमे रूडी गणी हुती, रूपवती गुणगेह ॥ च० ॥ सा० ॥ ६ ॥ पिणए रुप देखो नवि राचिये, अधिको गुण सुप्रमाण ॥ च० ॥ काम पडे कांई काम आवे नही, गुणविण लालकवाण ॥ च० ॥ सा० ॥ ७ ॥ दीधी खोड एकेकी रतनमें, दैवे थई निःशक ॥ च० ॥ खारो पयोधि तरुणी करघो आकरो, शशिने दीध कलक ॥ च० ॥ सा० ॥ ८ ॥ तिमए घणु ए बीजे गुणेभरी, पिण अवगुण एक एह ॥ च० ॥ वांगडबोलीने धीठी घणु, निगुणिने निसनेह ॥ च० ॥ सा० ॥ ९ ॥ एहछे पुत्री केहनी किहारहे, जोउं येहनोरे गेह ॥ च छलबल कलकरी साहमु छेतरी, परण कन्यारे येह ॥ च ॥ सा० ॥ १० ॥ पिछेये मुझने जोउ वश किमकरे, किम धुवारसे पा

य ॥ च० ॥ येतो सही में पारखुं पेखवुं, पाडुं खोटीतो हुं राय ॥ च० ॥ सां० ॥ ११ ॥ राज्ञा मानवतीने पूठल, क्रोधथी चाल्योरे जाय ॥ च० ॥ कुवचन होय सहुने अलखामणुं, सुवचन सहूने सुहाय ॥ च० ॥ सां ॥ १२ ॥ मंदिर पोहोती नृप दिठो नही, पोढी सेजे रे तेह ॥ च० ॥ करि सहिनाणी तांबुल पीकतणी, राये धारयोते गेह ॥ च० ॥ सां० ॥ १३ ॥ चंपक पादप घरने आंगणे, कुसुम कुरंभ सुवास ॥ च० ॥ एह सेंधाणी धारीने वल्यो, आव्यो भूप आवास ॥ च० ॥ सां० ॥ १४ ॥ सुखभर सेजें नृप जई पोढीयो, भांखी छठीये ढाल ॥ च० ॥ मोहनविजयकहे तुमे सांभलो, आगल वातरसाल ॥ च० ॥ सां० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥ नयणेनावे निद्रडी, घटपटि नृ

पने चित्त॥ क्षण क्षण हियामे साभरे,। मा
नवतीनु चरित्त॥ १ ॥आतुर हूवो परणवा,
चतुर महीप तिणवार॥ रयणी विहाणी
प्रहथया, वर्त्या जयजयकार ॥ २ ॥ अरुण
उदय अबरथयो,, भुतलथयो प्रकाश॥ धे
नु वलगा वाछरू, कैरव कोध विकास ॥
॥ ३ ॥ सिंहासन बेठो नृपति, चामर छत्र
धरत ॥ खलक्क मलक खिजमत करे, भाट
बिरुद बोलत ॥ ४ ॥ भूपति तेडी सचिव
ने, दीधो आदरमान ॥ भाषे वाता रात-
नी, हियडु खोली ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमा ॥ करमपरीक्षा करण
कुमर चल्यारे ॥ एदेशी ॥ रयणीये आज
नयरमा येकलोरे ॥ हुगयो चर्चा हेत ॥ क
न्या पाच मेंदीठी क्रीडतीरे, अभिनव वि
द्रुम खेत ॥ राजन भापेरे सचिवने वातडीरे

॥ १ ॥ जेजे दीठी रेण, मंत्रीपिण ते मन
मांहे धरेरे, थइने नृपनो सेण ॥ रा० ॥ २ ॥
कन्या एक धुतारी पंचमेरे, कडुवा बोली-
रे तेह ॥ वृश्चिक विषथीते घणुं आकरीरे,
सुं कहुं घणुं बुद्धिगेह ॥ रा० ॥ ३ ॥ कह्युं ति
णे पीयुने पाय लगाडशुंरे, टुंबे घडशुंरे शी
स ॥ एहवां वांकां बोलती बोलडांरे, किम
करी वालुंरे रीस ॥ रा० ॥ ४ ॥ एहवां वच
न सुणीने मुझनेरे, परण्यानी थइ हूंस ॥
सेजे सुता नींद आवी नहीरे, सुझने ता-
हरा सूंस ॥ रा० ॥ ५ ॥ तेमाटे तुं पुछत पा
धरोरे, पोहोचजे तस आगार ॥ पीकसाहि
नांणी भिंते जोयनेरे, वली चंपकतरुद्वार ॥
रा० ॥ ६ ॥ जिम तिम करीने तेहना तात
नेरे, भोलवी करजे हाथ ॥ कहेजे ताहरी पु
त्री जाचवारे, मूक्योछे महिनाथ ॥ रा० ॥

॥ ७ ॥ करजे प्रणिपति तु माहरी वतीरे, मा
निस ताहरो पाड ॥ जीवित सुधीगुण न-
ही वीसरूरे, पालीस रूडा लाड ॥ रा० ॥
॥ ८ ॥ ए कन्यायी वेघछे वयणनोरे, अवर न
वीजो कोय ॥ जोए परणुं ताहरी बुद्धियीरे
तो मुझने सुख होय ॥ रा ॥ ९ ॥ वचन सु
णीने महीपतिना इस्यारे, वोल्यो अमात्य
तिणवार ॥ ए कन्यानो केहो आसरोरे, अ
वनीपती अवधार ॥ रा० ॥ १० ॥ एतो मु
झथी कारज सहेलछेरे, करिस हु दाय उ
पाय ॥ कहोतो लावु हरिनी पुरदरीरे, क-
रीने तुम पसाय ॥ रा० ॥ ११ ॥ मणिधर
माथे नाचे डेडकीरे ते गारडीने प्रसाद ॥
ईमने उपरे करीने पोठीयोरे सिंहृयकीकरे
नाद ॥ रा० ॥ १२ ॥ तिम हुपिण ऊपरथी
ताहरेरे, स्यों नकरीसकु काज ॥ तोहु सा

चो सेवक राउलोरे ॥ जो परणावुं आज ॥ रा० ॥ १३ ॥ इम महिपतिने देई धारणा रे, उठ्यो ताम प्रधान ॥ नयर संचरयो मंदिर पेखतोरे, आणी मन अभिमान ॥रा० ॥ १४ ॥ मोहनविजयें भाषी सातमीरे,सुंदर ढालए जोय ॥ मीठी आगल एहथी वात डीरे, सांभलजो सहु कोय ॥ रा० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ सेरीसेरी ढूंढतो, पीकांकित आवास ॥ जाणे मृगकस्तूरीयों, हिंडे लेतो वास ॥ १ ॥ मूके एक मंदिर सचिव, पेसे बीजे ओक ॥ गुणमोताहलनी परे, पामे विस्मय लोक ॥ २ ॥ इम भमतां दीठो तिहां, चंपकतरु सछांहिं ॥ सहिनाणी सघली मिली, हरख्यो घणुं मनमाहिं ॥ ३ ॥ कह्याथकी अधिपति तणे, हुं जोवंतो जेह ॥ ते अनुमाने मानता, निश्चय मंदिर एह ॥ ४ ॥ पेसे

भहमे धसमसी, दाससहित शुचिअंग॥जि
म प्रतिबिंबे मुकुरमे, आननभूषणसंग॥५॥

॥ ढाल आठमी ॥ अलबेलानी देशी ॥

धनदत्ते दीठो आवतोरे लाल ॥ निजघर
माहे प्रधानरे ॥ रंगीला ॥ चंचलचित्त अ
ति हुउ तदारे लाल ॥ जिम हाथीना कान
रे ॥ रंगीला ॥ प्रायें सुहालो वाणियोरे ला
ल ॥ १ ॥ वोबहु बोलणहाररे ॥ र ॥ वातो
सो गरणे गलेहो लाल ॥ ढाह्यो जेह व्या
पाररे ॥ र ॥ प्रा ॥ २ ॥ धवधव ऊठ्यो
ध्रूजतोरे लाल ॥ छेहडो हाथ विचालरे ॥
र ॥ पडती धोती पहिरतोरे लाल ॥ खड
खड हसतो आलरे ॥ र ॥ प्रा ॥ ३ ॥चिं
तवतो मनमा इस्योरे लाल ॥ केम सचिव
मुझ गेहरे ॥ र ॥ ढोसीने घरे वाघलोरे ला
ल, केम समाय एहरे ॥ र ॥ प्रा० ॥ ४ ॥

हूं व्यापारी वाणिउंरे लाल ॥ एतो नृपनो अंगरे ॥ रं० ॥ धाईने जाई मिल्योरे लाल॥ कारमो करी उछरंगरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ दीधुं अमात्यने बेसणुंरे लाल॥ भगति यु-गति करी कोडरे॥ रं० ॥ तांबूलादि आगें धरयारे लाल॥ ऊभा बेकर जोडरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कहो किम स्वामी कृपाकरीरे लाल ॥ मुझ ऊपर धरी प्रेमरे ॥ रं० ॥आज कृतारथ हुं थयोरे लाल ॥ प्रगटी मुझ घर गंगरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ कोण प्रयोगें पधारियारे लाल ॥ कहो मुझ लायक कामरे ॥ रं० ॥ हुं पदरजछुं रावलोरे लाल ॥ पाम्यो घणुं आनंदरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ८॥ फरमावो कोई चाकरीरे लाल ॥ ते करूं शिरने जोररे॥ रं० ॥सांडी साकर घोलवारे लाल॥ मुखथी करी नीहोररे॥ रं० ॥ प्रा० ॥

॥ ९ ॥ वचन सुणी धनदत्तनारे लाल ॥ रं ज्यो प्रधान विशेषरे ॥ र ॥ अतिहि आग तस्वागतारे लाल ॥ वलि निपुणाइ पेखरे॥ र० ॥ प्रा० ॥ १० ॥ सचिव कहे मिलवाम णीरे लाल ॥ आव्याछु अमे आजरे ॥ र ॥ तुमे सज्जनछो सेठजीरे लाल ॥ तुमभणि रूडा काजरे ॥ र ॥ प्रा ॥ ११ ॥ नृप बहु तुम ऊपर कृपारे लाल ॥ राखेछे निसदीस रे ॥ र. ॥ जेहवा सामलिया तेहवारे लाल॥ दीठा अमे सुजगीसरे ॥ र ॥ प्रा ॥ १२ ॥ माडी माह्योमाहे वातडीरे लाल ॥ पूछे स-चिवजी वातरे ॥ र ॥ कहो व्यापार किस्यो करोरे लाल ॥ केता तुम अगजातरे ॥ र ॥ प्रा ॥ १३ ॥ सेठकहे प्रवहण तणोरे लाल॥ छे व्यापार कृपालरे ॥ र ॥ पुत्री एक माह्र रे अछेरे लाल ॥ मानवती सुकमालरे ॥ र.

॥ प्रा० ॥ १४ ॥ सांभलजो श्रोताजनारे लाल ॥ आगल वात रसालरे ॥ रं० ॥ मोहन विजयें रुअडी होलाल ॥ भाषी आठमी ढालरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ कहेप्रधान धनदत्तने, तेपुत्री छे क्यांहिं ॥ नयणे तेह्नने निरखियें, तेडावो तुमे आंहिं ॥ १ ॥ शेठकहे ते बालिका, गइ अछे सुणोदेव ॥ भणवा अध्यापकक्न्हे, जिमवा आवसे हेव ॥ २ ॥ केहो शास्त्र भणे अछे, तुम पुत्री गुणवंत ॥ जैनधर्म अम श्राद्धनो, साधु समीप भणंत ॥ ३ ॥ कहे प्रधान तुम धर्मनो, समझावो मुझमर्म ॥ श्रवण देइने सांभलो, पामीने सुखशर्म ॥ ४ ॥ धनदत्तकहे सुण साहेबा, श्राद्धधर्मनो मूल ॥ जेहवो गुरुमुख सांभल्यो, निसुणो थइ अनुकूल ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ तेतग्चिा भाई तेतरिया ॥ एदेशी ॥ जं विदया गुणधर्म अमारा ॥ दुहवुनही अमें कोइनेरे ॥ मजन प्रमुख जलवावरियें, भुनलजंतु जोइनेरे ॥ जी• ॥१॥ मत्र नवकार जपीजे अहर्निस, भावें द्रढ मन राखीरे ॥ एहथी केई नर सपद पाम्या, शास्त्र अछे केई साखीरे ॥ जी ॥ २ ॥ तर पातागण जिन पचमनाणी, करियें तस पदमेवारे ॥ कर्मसुभटने दूर करेवा शिवपद ना सुख लेवारे ॥ जी ॥ ३ ॥ जीयकोइ जीयमान महामुनि, तेहना मुखनी वाणीरे ॥ दानादिक अधिकारे भावि, ते सुणियें हितआणीरे ॥ जी ॥ ४ ॥ शास्त्र जिनालय जिननी मूरति, सघ चतुर्विध भव्यरे ॥ ए साते क्षेत्रें वावरियें, शक्ति यथोचित द्रव्यरे ॥ जी ॥ ५ ॥ व्रत पचखाण पोसह

पडिकमणुं, विधिपूर्वकथी करियेंरें, ए सं-
सार असार निहाली, विनयाभ्यास अनु
सरियेरे॥ जी०॥ ६ ॥ पृथिव्यादिकनो जे
आरंभ, थोडो भारते लीजेंरे॥ पूरो आरंभ
निवारीन सकिये, तोपिण थोडुं कीजेरे ॥
जी० ॥ ७॥ जेहवो जीव पोतानो तेहवो,
परनो पिण जाणीजेंरे॥ द्वादशव्रत धारक
कहेवाउं, परनिंदा नवि कीजेंरे ॥ जी० ॥
॥ ८॥ मिथ्यामतिने तोनवि मानुं, गोगा-
दिक नवि पूजूंरे॥ कोई जीवने वध बंधन
करतां, देखीने अमे धुजूंरें॥ जी०॥ ९ ॥
भेद गहन जिनधर्मतणाजे, नाणी विण
कुंण जाणेरे॥ तत्वज्ञान विण निजनिज म
तने, अज्ञानें मत ताणेरे॥ जी० ॥ १०॥
अंधपुरुष जिम गजने पेखे, अवयव गज
ने प्रमाणेरे॥ दृष्टिवंत गज पूरण देखे, ति

म नयभेद वखाणेरे ॥ जी० ॥ ११ ॥ एहवा वचन धनदत्तना निसुणी, प्रमुदित हुउ प्रधानरे ॥ वाहवाह भाई धर्म तुमारो ॥ पावन कीधा कानरे ॥ जी० ॥ १२ ॥ एहवे रमझम करती आवी, मानवती मनरंगेरे ॥ विनयसहित प्रणिपात करीने, बेठी तात उछंगेरे ॥ जी० ॥ १३ ॥ लावण्यता सुंदर देखीने, नृपसेवक इम जाणेरे ॥ न्यायेए कुमरीने ऊपर, नृपति एकगो ताणेरे ॥ जी० ॥१४॥ए कुमरी नृपने परणाविस, चिंतव्युं छे जो कृपालरे ॥ मोहनविजये छेजे भापी, नवमी ढाल रसालरे ॥ जी० ॥ १५ ॥ ~

दुहा ॥ चकितचित्त हुउ सचिव, रूप निहाली जेह ॥ शु शशिमुख दिसे सही, मुखप्रतिछाया एह ॥ १ ॥ कोटि विरची जो लिखे, पण छिपनो न लिखाय ॥ रचित र-

चाणो रूपए, जिम अमराक्षर न्याय ॥२॥ सचिव कहे तव शेठने, रसनां वचन अ-मोल ॥ जोमानो माहरो कह्यो, तो भाखुं एक बोल ॥ ३ ॥ कहियेने मानो नहीं, तो कहवुं ते आलि ॥ कचरामें नाखे कवण, मुख कंचन झालि ॥ ४ ॥ शेठ कहे भाषो प्रभु, जेमुझ लायक काम ॥ हुंछुं राजनो टेलीउ, तुमे स्वामी अभिराम ॥ ५ ॥

॥ढालदसमी॥ केसरवरणोहो काढ कसुंबो मारालाल॥ एदेशी॥ सेठ पयंपेहो सचिवने आगें ॥ मारालाल ॥ कहेतां तुमनेहो हालसुं लागे ॥ मा० ॥ आव्या मोरेहो इसकां विचारो ॥ मा० ॥ सोजां पाणीहो विणकां उतारो ॥ मा० ॥ १ ॥ एहवो क्यांथीहो भाग्य अमारो ॥ मा० ॥ कीजे साहिबहो काम तुमारो ॥ मा० ॥ जेतुमे कहेसोहो ते

अमे करसु ॥ मा ॥ विगर कहेयीहो माये-
न पीरस्युं ॥ मा० ॥ २ ॥ इम अति आदर-
हो सेठनो जाणी ॥ मा० ॥ सचिव तिवारे-
हो बोल्यो वाणी ॥ मा० ॥ ए छे विनतीहो
सुभग अमारी ॥ मा० ॥ भुपति चाहेहो पु-
त्री तुमारी ॥ मा० ॥ ३ ॥ आव्योछु कहेवा
हो तेहु तुमने ॥ मा ॥ राजी करीनेहो सि-
खथो मुझने ॥ मा० ॥ राजन सरिखोहो हो
से जमाई ॥ मा ॥ ईश्य तुमारीहो पूर्ण क-
माई ॥ मा० ॥ ४ ॥ पुत्री तुमारीहो होसे सो
हेली ॥ मा ॥ कोइ वातेहो नहि थाय दो-
हेली ॥ मा ॥ अवसर एवोहो फिरि नहि
आवे ॥ मा ॥ गान प्रमाणेहो गावण गावे
॥ मा० ॥ ५ ॥ जेसो वायरोहो उलो लीजे ॥
मा ॥ पिण नृपमेंतीहो हठ नवि कीजे ॥
मा ॥ कारज तनक्षिणहा कीजे विचारी ॥

मा० ॥ कंबल भीजेहो तिम होय भारो ॥
मा० ॥ ६ ॥ खोली मनडोहो कहो हूंकारो ॥
मा०॥ नहितर पूछेहो नृपति अटारो॥मा०॥
थरक्यो धनदत्तहो निसुणी वाणी ॥ मा० ॥
सचिवने भाखेंहो कांकहो ताणी ॥ मा० ॥
॥ ७ ॥ नृपथी अलगोहो हूंछुं किवारे॥मा०॥
पुत्रीछे हाजरहो कहेसो जिवारे ॥ मा० ॥ ते
दिन होवेहो जे दिनराजा ॥ मा० ॥ आवे
अंगणहो वधते दीवाजा ॥ मा० ॥ ८ ॥ आ-
सरो केहोहो पुत्री केरो ॥ मा० ॥ बीजो को
इ कहो काज उवेरो ॥ मा० ॥ वस्तु केहीहो
नृपने नघटे ॥ मा० ॥ ते श्यां फूलडांहो शि
वने न चढे ॥ मा० ॥ ९ ॥ जावो पधारोहो नृ
पने भाखो ॥ मा० ॥ लगन लेवाडोहो मुहुर०
त दाखो ॥ मा० ॥ चोकस कीधोहो सचि-
वें सगाई ॥ मा० ॥ उठो नृपनेहो दीधी

घाई ॥ मा० ॥ १० ॥ रच्यो महिपतिहो के-
तव गेही ॥ मा० ॥ खटके चितनेहा वायक
तेही ॥ मा० ॥ तेड्यो पडितहो लगन नि
हाली ॥ मा० ॥ करशु राजीहो आछे
ताली ॥ मा० ॥ ११ ॥ भाख्यु भापो
हो पडित जोई ॥ मा० ॥ नीमी आपो-
हो सुलग्न कोई ॥ मा० ॥ खोले पुस्तकहो
लालच वाध्या ॥ मा ॥ जोतिप केराहो पु-
स्तक साह्या ॥ मा ॥ १२ ॥ दूपणविदूणोहो
लगन तेलाधो ॥ मा ॥ भूपे तेहनेहा अति
धन दीधो ॥ मा ॥ आतिसननानीहा गृहे
पोहोचाव्या ॥ मा ॥ पाग्ना ढलीयाहो नृप
मन भाव्या ॥ मा ॥ १३ ॥ दर्पपयोधि (द
ये नृपने ॥ मा० ॥ उत्सव महोत्सव
हो पूरि उपावे ॥ मा ॥ पिण कोई नृपना
हो गुह्य नजाणे ॥ मा० ॥ सहुको साचुहो

करीने प्रमाणो॥सा०॥१४॥ आगले जोजोहो करमनी कांणी॥सा०॥ पिण तेटालेहो वहेसे पाणी॥सा०॥ढालए दसमीहो मन थिर राखी सा०॥सोहनविजयेंहो रंगे भाखी॥सा०॥१५॥

दुहा ॥ सेवक नृप आदेशथी, जलासिक्तभूमि ॥ सिणगास्यो पूर विवाहपर, कृष्णागरकृत धूम ॥ १ ॥समियाणा ताण्या भला, तिम तोरण लहकंत ॥ झाणो घंटा घन झंनहीं, केकी नृत्य करंत ॥ २ ॥ मृग मद सूधा अरगजा, परिमल करता भूरि॥ घरघर ढोल धमाल अति, नेह सरुदंता तूरि ॥ ३ ॥ कनधजीया जानेमिल्या, केशर मे गरकाव ॥ ताता तुरी कुदावता, आलुंदा नरराव ॥ ४ ॥ धनदत्ते हिवे मंदिरें, मांडयो अति उछरंग ॥ वहिल सुखासन पालखी, सिणगास्या शुचि अंग ॥ ५ ॥

॥ढाल इग्यारमी॥ करडो तिहा कोटवाल॥ एदेशी ॥ मानतुग महीपाल, जान सजीनेहो परवरया रगशुजी॥ गुहिरा घुरेरे निसाण, ताल कसालने भुगल जगसुनी॥ १॥ गजहलका सोहत,सोवन सागत घोडा घूमराजी ॥ गुडिया गयण गुजेत, आगल ढोहे अलवे ऊवराजी॥ २ ॥ नृपशिर सोहे छव, वली शुमपुजित फवतो सेहरोजी॥ चामर ढले चिहु उर, फरहरतो वागो केहरोजी॥ ३॥ लीधा श्रीफल हाथ, कुंकमतिलके तदुल भावियाजी॥ इणे आडबरे राय, घनदत्त शेठने मंदिर आवियाजी॥ ४॥ तोरण मोतियें वधाय, वरकन्याने चोरियें पधरावियाजी॥ रति मकरध्वज जेम, रूप उभयना सहुने सोहावियाजी॥ ॥ ५॥ पचामृतनो होम, द्विज वेठा वेद च

र्थां करेजी ॥ वाजे मंगलतूर, गाजे अंबर-
लोकां गहगहेजी ॥ ६ ॥ सोहला सरले सा
द, गावे गोरियां करगल बाहडीजी ॥ वर
कन्याने शीस, ऊपर कीधी सखरी छांह-
डीजी ॥ ७ ॥ मानवती मनमांहे, हरषे पी
युनां सुखने निरखतीजी ॥ घुंघटना पटमांहे,
वारंवारें नयणां फेरतीजी ॥ ८ ॥ छेहडा छे
हडी बांधी, फेरिया फेरा चारे चोरियांजी ॥
आरोग्या कंसार, दंपतीमुखमां दिये, को-
लियांजी ॥ ९ ॥ भोजनयुगति अशेष, स
हुने संतोषी कीधा वरणागियाजी ॥ वरत्या
जयजयकार, मानवतीने महिपति परणि
याजी ॥ १० अर्थीजनने दान, देई सहुनां
मान वधारियांजी ॥ सुंदरी लेई संग, मान
तुंग राजा महेल पधारियाजी ॥ ११ ॥ पुरि
जन करे प्रशंस, धन्य धन्य कन्या एवर

ने वरयोजी ॥ युगतो जोडो एह, किहाथी व्रम्हाए पेदा कस्योजी ॥ १२ ॥ धनदत्त चिंतवे चित्त, हुई सगाई घणु मनमा गमीजी ॥ नृपसरिखा जामात, छे हिवे माहरे सानी कर्मीजी ॥ १३ ॥ गिरुइ ग्रहियें जोवाहिं, तो सवि वातो रुडी थइ रहेजी ॥ आसरे नागरवेलि, पत्र पलासनो नृप कर जइ चढेजी ॥ १४ ॥ नीच सरीसी गोठ, किहा लगें कीधी आखर थिर रहेजी ॥ जिम उन्मत्त खरनाद, ऊंचो ऊंचो केतोक निवहेजी ॥ १५ ॥ मुझ पुत्रीनो भाग्य, हुई नृपनी रूडी अंतेउरीजी ॥ इम फूले मनमाहे, भत्रक धनदत्त वेठो फिरि फिरीजी ॥ ॥१६॥ पिण महिपतिनी वात, कोई डाह्या पिण जाणे नहीजी ॥ एह इग्यारमी ढाल, मोहनविजयें भलि ढलकती कहीजी ॥ १७॥

दुहा ॥ मानतुंग महिपति हिवे, मंदिर में मनरंग ॥ मानवती माननी सहित, बेठो धरि उछरंग ॥ १ ॥ मानवती निज मन थकी, हरखे पियुमुख पेख ॥ द्रुमकरयणने न्यायपरें, वहे आश्चर्य विशेष ॥ २ ॥ किहां राजा किहां वणिक धुय, किहांथी मेलो एह ॥ए साचुंके सोहणो, लिखित लेख थयो तेह ॥ ३ ॥ पियुने हुं गुण दाखवी, वशकरी राखिस हाथ ॥ एह सलूणी गोठडी, जो मेलीछे नाथ ॥ ४ ॥ एकण वक्रकटाक्षमें, पाडिश प्रेमने पास ॥ वेधालूने वेधतां, वार न लागे तास ॥ ५ ॥ एहवी मन अस्या धरे, मृगनयणी तिण वार ॥ सांभलजो सहु ए जना, जे करशे किरतार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ हो कोई आणमिलावे साजना ॥ एदेशी ॥ नृप नयण नमेले नार-

थी, नकरे वलि मनोहारहो ॥ थई रह्यो चि त्रतणीपरे, मुखे नकरे वात लिगारहो ॥ नृप० ॥ १ ॥ जिम फणिधरने गारडो, खिले मत्रप्रभावहो ॥ जिमरहे वेसी करडमे, तिम थई रह्यो नररावहो ॥ नृप० ॥ २॥ कोपें दृग वाकी करी, रमणीथी थयो रूठहो ॥ प्रीतम मन चोरी करी ॥ वाली वेठो पुठहो ॥ नृप० ॥ ३ ॥ मानवती चित्त चिंतवे, कत न मले का मीटहो ॥ रसमा अनरस काक-रे, फेरी का वेठो पीठहो ॥ नृप० ॥ ४ ॥ शु काई मुजमा वालहे, दीठो अवगुण कोयहो ॥हजी नथी मुझशु वोलतो, सहि इहा कारण होयहो ॥ नृप० ॥ ५ ॥ आजथी मा-ऱ्यो एहवो आगल केम निवहायहो॥ प्रथम ज कवले माक्षिका, ते भोजन किम ख वायहो ॥ नृप० ॥ ६ ॥ करजोडी कहे कामि-

नी, अहो अहो प्राणआधारहो ॥ किम तु से आमणदूमणा, दिसोछो केणे प्रकारहो ॥ नृप० ॥ ७ ॥ हुंछुं कनडी राउली, मुझऊ पर स्यो रोपहो ॥ वाड भखे जो जीभडां, तो केहने दीजे दोषहो ॥ नृप० ॥ ८ ॥ आवी व लगी हुं पालवे, तेकिम अलगी थायहो ॥ तेहने ठेली नाखतां, परमेश्वर दुहवायहो ॥ नृप० ॥ ९ ॥ बोलो नाह मयाकरो, कहुं-छुं विछावी गोदहो ॥ धीरज हुं नधरी स-कूं, उपजावो आमोदहो ॥ नृप० ॥ १० ॥ कटकीसी कीडी ऊपरे, तृण ऊपर स्यो कोठारहो ॥ सांहमुं जूवोरे साहिबा, जो बु द्धि दिये किरतारहो ॥ नृप० ॥ ११ ॥ अ बलानो बल केटलो, तुम आगल महारायहो ॥ पाय पडुं करुं वीनती ॥ पियुने घ-णुंशुं कहेवायहो ॥ नृप० ॥ १२ ॥ वचन सु

णी रनितातणा ॥ बोलमे हिमे महीपाल-
हो ॥ मोहनविजयें सोहामणी, इमभणी बा
रमी ढालहो ॥ नृप० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ मानतुग माननीतणा, वेधाला
सुणि वयण॥ बोल्यो तव हसिने तदा, अ
रुण करी दो नयण ॥ १ ॥ साभलजे तू हे
प्रिया, आजनी एनथी रीश॥ में तुझने क
पटे करी, परणी धरी जगीश ॥ २ ॥ हि-
वे चरणोदक पावजे ,देजे झूठु अन्न ॥ ता
हरे पाय लगाडजे ॥ करजे जाण्यो मन्न॥
॥३॥ उछ किसी मत राखजे, पूरजे सघ-
ळी हूम ॥ जो मुझने वश नहिकरे, तो तु
झने मुझ सूम ॥ ४ ॥

॥ढाल तरमी ॥ प्रितडी न कीजेरे ना
री परदेसीयारे॥ एदेशी॥ प्राणजीवननारे
निसुणी बोलडारे, चमकी चतुरा तिणवा

र ॥ पीउडे निहेजेरे वात एसीकरीरे ॥ हैहै सरजणहार ॥ नाहलोउ निहेजेरे थइरह्या नारथीरे ॥ १ ॥ नवि हुं मनाव्योरे जाय ॥ म नविण मायारे किम करीने हूवेरे, अवला आकुल थाय ॥ ना॰ ॥ २ ॥ रे विधि मुझनेरे कंतकां मेलव्योरे, निसनेहीने निटोल ॥ आ गल निगमसुंरे दिनडाकिणपेरेंरे, पीयुने ए हवेरे बोल ॥ ना॰ ॥ ३ ॥ सुरतरु जाणीरे बा थ भरीहतीरे, पिण थई निवड्यो बंबूल ॥ जोजो करमतणीगती माहरीरे, वालो थ- यो प्रतिकूल ॥ ना॰ ॥ ४ ॥ मनमां आश्यारे मेरूजिसी हुंतीरे, पीयुंथी करीस विलास ॥ दैवअठारोरे देखी नवि सक्योरे, पयनी की धीरे छास ॥ ना॰ ॥ ५ ॥ छयल छबिलेरे मु झने छेतरीरे, परणी थईने कठोर ॥ सींचि इणेरे कूपक अन्दरेंरे, कापवा सांडीरे दो

र॥ना ॥६ ॥ केशु वेरणरे किणाहिक आ
वीनेरे, इमभभेरचो कत॥ एकहु केहनेरे दु'
खनी वातडीरे, कोइन दीठो सत॥ना०॥
॥७॥ लाखीणो करीनेर हुतो लेखतीरे,
पामी नृप प्राणेश ॥ पिण इण वालेरे पेहे
लीज वाजीयेरे, दखाड्यो करीवेश॥ना०॥
॥८॥ राजा मित्रन होव केहनारे, तेसवि
साचीरे वात्त॥ मुझने एहभणी परणावता
रे, पानरियो मुझ तात॥ना ॥९॥ जो हु
वुरथीरे एह गति जाणतीरे, तो सारती
विणनाह॥ रहेती कुआरीरे पिण परणत न
हीरें, एहवो दुस्तर दाह॥ना०॥१०॥ जे
युवतीनेरे सुख नहि स्वामिनोर, जीव्यो
तस अप्रमाण॥ राजा मुझथीरे रूसीने र
ह्योर, ते हु पुन्य विन्नाण॥ना ॥११॥ क
हो का प्रीतमर मन मलो नहीरे, एहवा

सुझनो स्यो बंक ॥ खोले घालोरे जे गुन-
हो होवेरे, भाषो थईने निःशंक ॥ ना० ॥
॥१२॥ सुझने धुरथीरे परहरवी हुतीरे, तो
सुझ परण्यारे केम ॥ हिवे तुमे एहवारे मु
जने वालहारे, मेंणा द्योछोरे एम ॥ ना० ॥
॥१३॥ नाह कहे अमें जूठन जंपियेंरे, खो
टुं केम कहेवाय ॥ वचन संभारोरे तुमे क-
ह्यां हतांरे. रामतमा रसलाय ॥ ना० ॥ १४ ॥
कह्युं हतुं वृपभतणीपरे नाहनेरे, फेरसुं घा
लीरे नाथ ॥ तेमें सघलारे वचन ते सांभ
ल्यांरे, तेहथी थयो हुंनाथ ॥ ना० ॥ १५ ॥
मानवतीना उघड्या कांनडारे, नृपतनी
निसुणीरे वाण ॥ अंतरजामी एसाचूं कह्युं
रे, सीहित्रे ताणोताण ॥ ना० ॥ १६ ॥ मान
वतीना पुण्यतणे बलेरे, होसे मंगलमाल ॥
मोहनविजयें इमभणी प्रेमसूंरे, सुंदर ते-

रमी ढाल ॥ ना० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मानवतीकहे रायने, अहो जीव आधार ॥ रामत माहे वयणए, कह्या हसे अविचार ॥ १ ॥ एहवे वयणे वल्लहा, नवि राखीजे रीस ॥ मूक्यो आवीने हिवे, खोळे ताहरे सीस ॥ २ ॥ विश्वासी परणी तुमे, हिव दियोछो छेह ॥ ए पातक किहा छूटसो,हृदय विचारो तेह ॥ ३ ॥ मुझसुंका थो डे गुने, नेहविणासो कत ॥ गोद बिछाइने कहु, मतलिजो अबला अत ॥ ४ ॥ जिम जिम लागुछु पगें, तिमथाओछो वीर॥लोहा बलता ऊपरे, किम छाटोछो नीर॥५॥ तेगो राखो मियानमा, करो विचारी काज ॥ न हिचाले नारीथकी, मूठ भली बछराज ॥६॥

॥ ढाल चौदमी ॥ वीछीयानी देशी ॥

हारेलाल वालाना सुणी बोलडा, चमक्यो

भूप तिवाररे लाल ॥ जाणीयें मूक्यो आ-
करो, केणे खंध ऊपर जेम खाररे लाल ॥
लहिणुं लहिये आपणुं ॥ १ ॥ एहमा नही
मीनने मेषरे लाल ॥ जोमन तूं जाणे वृथा,
तो तूं परगट पेखरे लाल ॥ ले० ॥ २ ॥ त्रिव
ली निलाडे आरोपिने, बोल्यो नृप कडुवा
बोलरे लाल ॥ कहेरे कहे नर आगले, त
रुणी ते केटले तोलरे लाल ॥ ले० ॥ ३ ॥
नरजे चाहे तेकरे, लीये लंका जेहवा को
टरे लाल ॥ सिंह सरिखाने हणे, मयगल
ने करे लोटपोटरे लाल ॥ ले० ॥ ४ ॥ देवदा
नवने वश करे, जलउपर बांधे पानरे ला
ल ॥ गिरिवरने नर फेरवे, वलि मांजे अ
रियण सानरे लाल ॥ ले० ॥ ५ ॥ नारी दा
सी नरतणी, जाणे सहु संसाररे लाल ॥
जो नर मूके हाथथी, तो नारीने कवण आ

धाररे लाल॥ ले०॥ ६ ॥ आयउपाय करी घणा, नारीनो नर भरेपेटरे लाल ॥ नारी बिचारी बापडी, करे घरनोकारज नेटरे लाल॥ ले ॥७ ॥ पियुथी विगानी जत्रि या, तेहनो मुख किम देखायरे लाल ॥ घ णु ए भली कचनछुरी, पिण पेटेन मारी जायरे लाल॥ ले. ॥ ८ ॥ तू जोरावर जग तमा, थई दीसेछे नारी पेदासरे लाल॥मु खजो ताहरु बापडी, जे पीयुने करीस तु दासरे लाल ॥ ले ॥ ९ ॥ नरसु नजायो चक्रणे, जे राखीस पीयु करीदासरे लाल॥ खोटी पाडू जो तुझने, तो देजे मुझ सा बासरे लाल ॥ ले० ॥ १० ॥ चिंतवे मा-नवती तदा,पीयुनी सुणी वातो आमरे लाल ॥ पडमा पेठी नाचवा, हिवे घुघटनो स्यो कामरे लाल ॥ ले० ॥ ११ ॥ बोली

प्रिया प्रीतमप्रतें, इम निपटन छेडो नाररे लाल॥नारीचरित्रने दैवनो, किणहिन पायो पाररे लाल ॥ले०॥१२॥ जेकाम होवे नारी थी, ते नरथी, नवि थायरे लाल ॥ नरतो बिगारी मजुरिया, नित नारी आगल कहियरे लाल ॥ ले० ॥ १३ ॥ नारीकहे जे मुखथकी, ते किमही खोटुं केम थायरे लाल ॥ मयंगलदंत जे नीसरया, ते पाछा न समायरे लाल ॥ ले० ॥ १४ ॥ नारी जाणमुजने तुमे, छोडोछो निपट जदायरें लाल॥ पाय लगाडुं तुमभणी, तो मानजो मुजरो रायरे लाल ॥ ले० ॥ १५ ॥ तो हुं मानवती खरी, जो हुं बोल्या पालुं बोलेरे लाल ॥ उछ तुमेमत राखजो, अहोनाह निगुण निटोलरे लाल ॥ ले० ॥ १६ ॥ आगलजे होवे वातडी, ते सुणजो बालगोपाल-

रे लाल ॥ मोहनविजयें हेजथी, भाषी अ
भिनव चोदमो ढालरे लाल ॥ ले० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सुणी वचन वनितातणा, मन
चिंतें महिपाल ॥ तेडाव्यो तव सचिवने, भा
षे वचन विशाल ॥ १ ॥ अधुना ऊघाडो ज
ई, एकथभो आवास ॥ सजल सरोवर जि
हा अछे, तिहा जई करसु विलास ॥ २ ॥ अश
न वसन घृत गुडभरो, ततक्षण तिणहि-
ज गेह ॥ सचिवे तिमहीज सविकरी, आ
ज्ञा सोंपी तेह ॥ ३ ॥ मानवतीनो कर ग्र-
ही, नृप पोहोता तिण गेह ॥ बेसारी ति
हा नारीने, गीरा पयपे एह ॥ ४ ॥ इहां र
हेजो एकाकिनी, करजो विविध आहार ॥
प्रतिदिनमे लेसु खबर मतकरिस फिकर
लिगार ॥ ५ ॥ पिण तु पाय लगाडजे, मु-
झने करजे दास ॥ वचन रखे तु वीसरे, हो

ती रखे उदास ॥ ६ ॥ इम कही ते घरबा
रणें, यंत्र समर्पी भूप ॥ पोहोरायत परठी
तिहां, आव्यो गेह अनूप ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ आछे लालनी देशी
॥ विरहिणी नारी तेह, रहि एकथंभे गेह॥
आछेलाल ॥ निंदे पुरातन कर्मनेजी ॥ पा-
प आलोवे ताम, त्रिकरण करिने ठा-
म ॥ आ० ॥ मनमां धरी जिनधर्मनेजी
॥ १ ॥ एकेंद्रियादिक जीव, दुहव्या होसे
सदैव ॥ आ० ॥ के तिलयंत्रमें भावियाजी ॥
के कोइने करी रोष, दीधा कूडादोष ॥
आ० ॥ के खत खोटा लिखावियाजी ॥ २ ॥
पय पीतां लघु बाल, मातथी लीधा उदा
ल ॥ आ० ॥ के कीडी बिल पूरियाजी ॥ व्र-
त लेई थइ शिष्य, कीधा भक्ष अभक्ष ॥
॥ आ० ॥ के कंदादिक चूरियाजी ॥ ३ ॥ पा

पकर्म फल तेह, उदये आव्या एह॥आ ॥ कर्म करयां छूटे नहींजी ॥ एसवि आपणो वक, एहमा नहि काइ शाक॥ आ. ॥ इम आलोचे रही रहींजी ॥४॥रेरे सरजणहार, पियुविरहिणी थइ नार ॥ आ॰ ॥ एहवा कीम लिख्या अक्षराजी ॥सी चोरी तुझ्न कीध, वालिम विरहो दीध॥ आ ॥एतुज लखणन सखराजी॥ ५॥ नारितणो अवतार, का दीधो किरतार॥आ ॥ पीयुडो का एहवो मेलव्योजी ॥ मात पिता रह्या दूर, पीयू पिण नही हजूर ॥आ ॥स्यो तुज ग्रास मे भेलव्योजी ॥ ६ ॥मात पिता सुविशेप, राखता गोद हमेस॥ आ ॥ ते पिण मूकी किहा गयाजी ॥ अवला एकाकी एह, नाखी इणे गेह॥आ ॥प्रभु तुझने नावी दयाजी॥ ७ ॥ कुलगुरु गोत्र

ज देव, जेहनी करती सेव ॥ आ० ॥ ते-
पिण किहां गया इणसमेजी ॥ हिवे कांई उ
पावुं बुद्ध, बेठी मंदिरमुद्ध ॥ आ० ॥ नाह नि
ठुरकिणपरे नमेजी ॥ ८ ॥ स्युं हिवे विलखवुं
आम, धैर्यतणुंछे काम ॥ आ० ॥ रोयां रोज-
न पामियेजी, इहां कुण करीसके भीर, ज
स दूखे तस पीर ॥ आ० ॥ तप करूं जिम
दुःख वामियेजी ॥ ९ ॥ मांड्यो तप बहु भं
त, नवपद सुभग जपंत ॥ आ० ॥ मन दृढ
करी तिण मेहेलमेंजी ॥ जेहने धर्म सहाय,
आपद विलये जाय ॥ आ० ॥ चाहे तेलहे
सेहेलमेंजी ॥ १० ॥ जोतां इण संसार ॥ अ
डवडिया आधार ॥ आ० ॥ धर्मछे भीरू भा
गातणोजी ॥ पापी नतरे कोय, करीदेखो
सहुको ॥ आ० ॥ धर्मथकी जसजय घणोजी ॥
॥ ११ ॥ प्रतिक्रमणां बिहु टंक, साकर

ई निसक ॥ आ ॥ सामायिक व्रत साचवे जी ॥ नृपने लगाडवा पाय, आलोचे आय उपाय ॥ आ० ॥ कौतुक भावि सुणजो हिवं-जी ॥ १२ ॥ बेठी सदनमझार, करसे बुद्धि प्रचार ॥ आ० ॥ पालसे वचन कह्या सही जी ॥ पनरमी ढाल रसाल, करणी मगलमाल ॥ आ ॥ मोहनविजयें भली कहीजी ॥ १३ ॥

दुहा ॥ दिन केता तिहा निगम्या, एक लर्डा आवास ॥ झूर विरहिणी व्याकुली, मुख मेले निसास ॥ १ ॥ अजन मजन परिहर्या, नवे वलि सिणगार ॥ मगन रहे वैरागमा टाल विषयविकार ॥ २ ॥ मानवती चित चितवे वटा नगरे काम ॥ सुखमा पिण पमे करल उद्यम कीधे जाम ॥ ३ ॥ यामयुगम गइ यामनी, वनिता ऊठी सत ॥ ऊघाडी लघुजालिका, मुख काढी निरखत ॥ ४ ॥

॥ यामिकमां जे वृद्धछे, तेहने कीधो साद॥
ते पिण जाली हेठले,आव्यो तजी प्रमाद॥८॥
॥ढाल सोलमी ॥ गौतम समुद्र कुमार
रे॥ एदेशी ॥ पोहरायत कहे तामरे ,मानव
ती भणी॥ किम बोलाव्यो मुझ भणीए ॥
॥ १ ॥ नृपनें कहेवुं जो होयरे, कोय संदेस
डो॥ कहो सिरजोरें तेकहूंए॥ २ ॥ केम उ
घाडी जालीरे॥ बहु प्रयासथी, चढिने अ-
टारी ऊपरें ए॥ ३ ॥ के सुं इणें आवासरे,
सांभलतुं नथी॥ कहो पडदो खोली करी
ए॥ ४ ॥ किम जाएछे दींहरे, एकलडा र-
ह्यां॥ स्यो तें नृपनो बिगाडियोए॥ ५ ॥ए
दुख ताहरुं बेहेनीरे, सही सकतो नथी ॥
पिण स्वामीथी जोरो नहीए॥ ६ ॥ दुःभर
भरवा काजरे, हुंपिण इहां रह्यो ॥ चोकी
करवा तणीए॥ ७॥ कोलीड

हनोरे, तेहनो धोलियो ॥ बांधियें एह जग रीतछेए ॥ ८ ॥ दाणाने जे कोईरे, मुख मा डे जिको ॥ ते मुख मांडे चोकडेए ॥ ९ ॥ स्वामी हाथे द्यतिरे, दासतणी अछे ॥ ते जिम कहे तिम तेकरेए ॥ १० ॥ वाक म जाणसो अम्मरे, वाकए रायनो ॥ अमे व दा तस पायतणाए ॥ ११ ॥ मानवती तव बोलीरे, गदगद कठयी ॥ रे वीरा सुण वा तडीए ॥ १२ ॥ छे तुझ लायक कामरे, जो करेतो कहु ॥ पाड हु मानिस ताहरोए ॥ ॥ १३ ॥ आपु नवसर हाररे, जा तू उताव लो ॥ काज करो मयाकरीए ॥ १४ ॥ विरह अगाध समुद्ररे, दे तू वाहडी ॥ करुणावत कृपा करीए ॥ १५ ॥ इम कही दीधो हाररे, ने जामिक ग्रत ॥ तेपिण लोभवसें पत्र्यो ये ॥ १६ ॥ द्रव्येस नावि होयरे जेजे नि।

वे ॥ मुनिजनसरिखा भोळव्याये ॥ १७ ॥ क
हे अनुचर कर जोडीरे, कहो ते स्वामिनी॥
काज करी मुजरो करुंये ॥ १८ ॥ राणी क
हे मुझ तातरे, लगें संदेसडो ॥ कहुं त ज
इ पोचावजेये ॥ १९ ॥ भूपें करीने कूडरे, प
रणी मुझने ॥ खबर पडी नही तुझनेये ॥
॥ २० ॥ हिवे येकथंभे आवासरे, रेहेवुं ये
कलुं ॥ ये जइ कहेजे तातनेये ॥ २१ ॥ प-
डखो वली क्षणमात्ररे ॥ कागल दीयुं लखी
॥ हाथो हाथे सुंपजेये ॥ २२ ॥ आंसु मसी
पटपत्ररे, अंगुली लेखणे ॥ दीधो लिखीत
स जालियेये ॥ २३ ॥ पत्र लेई सिर चा-
डीरे, चाल्यो चडवडी ॥ जिम बीजो जाणे
नहीये ॥ २४ ॥ पहोतो धनदत्त गेहरे, अ-
नुचर पाधरो ॥ शेठें द्वार उघाडियांये ॥
॥ २५ ॥ दीधो [illegible] पत्ररे, वात कही

॥ जे मुखवचनें कही इतीये ॥ २६ ॥ इमभ णी सोलमी ढालरे, अति मन मानती ॥ मोहनविनयें, सहु को सुणोये ॥ २७ ॥

दुहा ॥ धनदत्त चित्त विस्मय थयो, देखी चीवर लेख ॥ खोल्यो ततक्षण वाचवा, मन आश्चर्य विशेप॥ १ ॥ दीठा आसु अक्षरा, शेठ थयो दिलगीर॥ गुप्त वात सवि प्रोछवा, वाचे थई सधीर ॥ २ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सुबखडानीदेशी ॥अर्हज्जिनपदपकजेरे, चित्ततरु प्रहितलेख॥सनेही साभलो॥ मानवल्यातनु महीपतेरे, कैइतवगर्भित एप॥ स० ॥१॥ भवता पादप्रसादान्मेरे, सौख्य वर्त्तते चात्र ॥ स ॥ परमेकेयं विज्ञप्तिरे, अवधार्या गुणपात्र ॥स० ॥ २ ॥ भूपतीना करपीडनेरे, मम सोत्सवतो विधाय॥ स ॥ विरह दत्त तेनमेरे, का

यें तस्य उपाय ॥ स० ॥ ३ ॥ अवद्गारादा रभ्यसेरे, गृहयावद्भयो तात ॥ स० ॥ भित्वा भूमिं विधातव्यंरे ,मार्गं खलु विख्यात ॥ स० ॥ ४ ॥ येनमया आगम्यतेरे, उपभवतो हि सदैव ॥ स० ॥ तात करिष्यामि तदारे, वार्त्ता दुषजं चैव ॥ स० ॥ ५ ॥ येकाकिन्या वासो मेरे, सुरंगगेहे पूज्य ॥ स० ॥ किंवहु- नेयं विज्ञप्तिरे, स्तोकाद्वेयं गुह्य ॥स०॥६॥ येह समाचार वांचिनेरे, धनदत्त धूज्यो अ तीव ॥ स० ॥ पाछो पत्रसेवक भणीरे, दी- धो लिखीने तदीव ॥ स० ॥ ७ ॥ सेवक मा- नवती भणीरे, जाई उपजावी प्रीत ॥ स० ॥ धनदत्त करे विचारणारे, शी हिवे करवी रीत ॥ स० ॥ ८ ॥ येहवे प्रातसमय थयोरे, तेडाव्या गृहकार ॥ स० ॥ येकांते सघलो क ह्योरे, सेठे रहस्यविचार ॥ स० ॥ ९ ॥ वाहि

र वात म काढसोरे, तुमने करसु प्रसन्न ॥ स ॥ कारीगर तत्पर थयारे, इभ्यनु जाणी मन्न ॥ स० ॥ १० ॥ केतेक मासे पाधरीरे, सुरग विभाइ तत्र ॥ स० ॥ मानवती ये-काकिनीरे, नित्य निवमेछे यत्र ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ गूढ उघाड्यो बारणुरे, येकथभे आवास ॥ स ॥ द्वार निहाली वियोगणी रे, पामी अतिहि उल्लास ॥ स० ॥ १२ ॥का रागरे जई वीनव्युरे, साहभणी तिणवार॥ स० ॥ वचन निवाह्या राउलारे, सुरग कीध तइयार ॥ स० ॥ १३ ॥ बहुधन आपी ते हनेरे, शेठें कीध विदाय ॥ स ॥ नारी थ की तुमे जोयजेरे, स्यो कीधोछे उपाय ॥ ॥ स० ॥ १४ ॥ मानवती गृह ताननरे, आ वी थइने सुरग ॥ स ॥ प्रणम्या मात पि-ताभणीरे, हियडे धरी उछरग ॥ स० ॥ १५॥

चतुरा चरित्र निहालजोरे, सहुको बाल गोपाल ॥ स० ॥ मोहनविजयें कही भलीरे, ए तो सत्तरमी ढाल ॥ स० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ मातपिताने आगले, मानवतीयें ताम ॥ नृप वृत्तांत कह्यो सकल, मन मोळो अभिराम ॥ १ ॥ पितर पयंपे धुअभणी, स्यो हिवे कीजे सोच ॥ पीपाणी घर पूछवुं, ते किम आवे टोच ॥ २ ॥ पुत्री कहे ए नृपतिने, पाधरो करुं प्रवीण ॥ आणी आपो तातजी, जो मुझने एक वीण ॥ ३ ॥ धनदत्ते पुरमांहेथी, विणा आणावी एक ॥ सुंपी मानवती भणी, यारू करिय विवेक ॥ ४ ॥ योगणीरूप धरयुं भलुं, मानवतीयें ताम ॥ हिवे श्रोता जन सांभलो, त्रिकरण राखी ठाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥ सनेही पासजिणंदा वे ॥ एदेशी ॥ मानवती नृप धुतवा माटे

प रच्यु अदभूत॥ढलती मूको सिरथी ज टा, वली अगलगाय बभूत॥सनेही योगण रूडीबे, अरे हाहा मीतर कूडीबे॥ १॥ केडयकी कस्यो वज्रकछोटो, पादुका पेहेरी पाय॥माला गले रुद्राक्षनो, करी अरुणनयण चितलाय॥सने०॥ २॥ पीतांबर ऊढ्यो पछेडो, ते ऊपर योगपट्ट ॥ थापीं कधरे सोहती, तिण वीणा घाटसुघट्ट ॥ सने०॥ ३॥ रूपरच्यो अभिनव वारु, केहेतां नावेपार ॥ जाणे युगनी योगनी, प्रगटी इण ससार ॥ सने०॥ ४॥ मातपितानी सीखडी मागी, मानवती सोछाहि॥सच री वेसे एहवे, ते तो नयर उज्जेणिमाहि ॥सने०॥ ५॥ सेरीये सेरीये दीये फेरी,गाये मधुरा गीत॥गुहिरा कोकिलकठथी, जे सुणतां उपजे प्रीत॥सने०॥ ६॥ अगे गौ

रीने गुणनी डरी, रंजे पुरिजन तेह ॥ नर नारी ठारे फिरे, घणुं नादे विंधाणा जेह ॥ सने० ॥ ७ ॥ तृणाचर पिणते नाद सुणी- ने, सोंपे मृगलां प्राण ॥ अनचरनो कहेवुं किस्युं, जे वध्या चतुर सुजाण ॥ सने० ॥ ८ ॥ जेकोई नादे नर नवि रींज्यो, जीव्युं तस अप्रमाण ॥ नररूपेते रोजडा, भरे पेट थ- ई अजाण ॥ सने० ॥ ९ ॥ योगणिने गुण जे नर रींज्या, तेकरे घणी मनोहार ॥ सापण निसनेही थइ, करे वीणतणा झणकार ॥ सने० ॥ १० ॥ नादे जेहने नारद हर्यो, खेंच्यो देवविमान ॥ फणिधर फणमांडी र हे, एतो योगणनां सुणी तान ॥ सने० ॥ ॥ ११ ॥ रूडो रूपने गायेवारू, ते केहने- न सुहाय ॥ पुरमे प्रसंसा थइ घणी, जे यो गण रूडुं गाय ॥ सने० ॥ १२ ॥ इम दिवसे

दिये पुरमा फेरी, घेरी सघला लोक॥ हरे
सहु मुख सामुहो, जिम इदूने हरेकोक ॥
॥ सने० ॥ १३ ॥सध्यासमये तातने मदिर,
आवीकरे आसास॥ सयनसमय माई सुवे,
जिहाएक थभो आवास ॥ सने० ॥ १४ ॥
वलि तिम प्राते सुरगे थईने, लेई वे हि-
ज वेस ॥ वलि तिमहिज सहु लोकने, कहे
मुखथी आदेस आदेस ॥ सने० ॥ १५ ॥श्रो
ताजन साभलजो सहुको, आगल वात र
साल ॥ मोहनविजये कही भली, एतो रू
डी आठारमी ढाल ॥ सने० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ लोकमुखे सोभा घणी, निसुणी
श्रवण नरेस ॥ ज योगण गाये भली, पु-
रमें बाले वम ॥ १ ॥ अतिउछक थयो नि
रखवा, यागण केरू रुप ॥ मूक्यो सचिव
ने तेडवा, पुरमाई तिणे भूप ॥ २ ॥ सचि

व नमी सामणी प्रते, भाखे वयण उदार ॥ नृपति अतिआतुर अछे, देखण तुम दीदार ॥ ३ ॥ तेमाटे करुणा करी, नृपने करो सनाथ ॥ चलो पधारो अलेखणी, घो वीणा मुझ हाथ ॥ ४ ॥ मनथी हरषी योगणी, ऊठी लेइवीण ॥ चलो सिताब इम उच्चरे, आगल थइ सुप्रवीण ॥ ५ ॥ खमा खमा कहेतो सचिव, पहोतो राजदुवार ॥ सामणि दीठी आवती, नृप साचवे आचार ॥ ६ ॥ दोडीने लागो पगे, आदर दीधो भूर ॥ बेसाडी सिंहासने, सामण भणी सनूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ बावा किसनपुरी॥ ए देशी ॥ इमभणे भूपति वायक ताम, करी अवधूतणने परणाम ॥ सामणि साच कहो॥ आया किहांथी किहांजी रहो ॥ सा० ॥

( )

निसुण्या जेहवा गुण आवान, तेहवा तुमने दीठा आज ॥ साम. ॥ १ ॥ भले पधारया नगर मझार, जेमें पतिर्ते पाम्यो दीदार ॥ सा. ॥ तुम बलिहारी जेथइने निग्रथ, पालोजी शुद्ध निरजन पथ ॥ सा. ॥ २ ॥ ग्यान ध्यानमा रहोछो मगन्न, मन वचथी तुमने धन्य धन्य ॥ सा० ॥ कहो तुमे एहवे बालेवेश, किम योगेंद्रनो धरयो भेप ॥ स. ॥ ३ ॥ बोली मानवती ततकाल, सुनवे दीवाने तु भूपाल ॥ सा ॥ हमहे गेवी जीव अतीत बुझे कोन हमारी रीत ॥ सा. ॥ ४ ॥ रहेरमता राम हमेश, भेटे तीरथ देशविदेश ॥ सा ॥ आए निरखण नयर उझेन, खेलत पावतहे सुखचेन ॥ सा ॥ ५ ॥ कोन किसीके आवे जाय दानापानी लेत बुलाय ॥ सा ॥ भजे भगवान जगावे अलेख, एस

ब कूडो दुनीयां देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ किसके माता किसके बाप, जीव एकिला आपो-आप ॥ सा० ॥ योगकी युगति नजाने कोय, अगमअगोचर भेदहै सोय ॥ सा० ॥ ७ ॥ अ-तिआनंदमें जो दिनजाय, सो जीवितका सफल कहाय ॥ क्याले आया क्याले जा-य, सब स्वार्थके बनेहि आय ॥ सा० ॥ ८ ॥ रीझ्यो महिपति निसुणी वाण, बोल्यो ति म वलि जोडी पाण ॥ सा० ॥ वीण वजाडी गावो गीत, विनति मानो करिने प्रीत ॥ ॥ सा० ॥ ९ ॥ नृप अति आतुर जाणी ते-ण, गाया गीत त्यां मधुर स्वरेण ॥ सा० ॥ वली तिम मधुरी वजाइ वीण, भूपादिक सहु थया लयलीन ॥ सा० ॥ १० ॥ पिण यो गिण लिखी चिंते भूप, दीसेछे मानवतीरे सरूप ॥ सा० ॥ कीधो रखे होए एह उपाय,

मुझने इणे लगाडवा पाय॥ सा०॥ ११ ॥ पिण बहुजतने राखो तास, आवी नसके ताजि आवास॥ सा०॥ तिहां जई जोऊ करी ग्रहस्पर्श, करककणने शो आदर्श॥ ॥ सा०॥ १२॥ योगणें चलचित्त दीठो राव, जोजो केहवो खेलेछे दाव॥ सा०॥ नृप जो शे जई तेहिज धाम, तेमाटे उठ्यानुं काम॥ सा०॥ १३॥ यत्र लेई ऊठो धूतणं ते इ, भूपतिनी लेई शीख सनेई॥ सा०॥ पो होती तात तणे आगार, गई एकथंभे सु रग मझार॥ सा ॥ १४॥ उतारयो धसम सी योगण वेष, मुलवस्त्र पहिरया सुविशे ष॥ सा०॥ पोढी हींडोले खाट तिणवार, एहवे नृप पिण आव्यो दुवार॥ सा ॥ १५॥ यंत्र खोली नृप गेहमझार, आव्यो दीठी पोढी नार॥ सा ॥ अचरज मनमा पामे भूप,

रूप कला देखीने अनूप ॥ सा० ॥ १६ ॥ ए तो बिचारी अबला बाल, सूति दिसेछे सेज विचाल ॥ सा० ॥ एहने उकेल किहां- थी उपाय, जे मुझनेए लगाडे पाय ॥ सा० ॥ १७ ॥ भोलो राय नजाणे भेद, मानवती जेपूरशे उमेद ॥ सा० ॥ ए उगणीशमी रूडी ढाल, मोहनविजयें कही रसाल ॥ सा० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ भूपें मानवती भणी, जई जगाडी जास ॥ ऊठी झबकी सेजथी, कर जोडी र हि तास ॥ १ ऊलंभो अवनीशने, नारीकहे धरिनेह ॥ स्वामी किम करुणा करी, मुझ अबलाने गेह ॥ २ ॥ शुं तुमें भूला आवि- या, धसमसि मंदिरमांहि ॥ माहारा सम साचुं कहो, एस काहि झाली बांहि ॥ ३ ॥ नाह कहे ताहरी खबर, जोवा आव्यो आज ॥ जो कांइ जोइतुं होय ॥ तेकहो सारुं क न

॥४॥ प्रिया कहे माहरी खबर, शु पियु थोडी लीध ॥जेलेवा आव्या हजो, मया घणीघणी कीध॥५॥ आ मदिरमा एकली, तुमविण राखे कोण॥ए किमही नहि वीसरे, पियु तुम गुणना गुण ॥६॥

॥ढाल वीशमी,॥,भूपति कहे सुण भामिनी, एकलडा मदिरमें निगमियें किम करी दीहा होराज॥वाक नजाणीश माहरो, धुरेथी का नवि राखी पाधरी ताहरी जीहा होराज॥१॥अमृत विष इण जीभमें, अनरस पिण इण जीभें बहुली प्रीत लगाडे होराज॥ कोकिलवाणी सहु सुणे, वायसनी भणी वाणी पथर नाखीं उडाडे होराज॥२॥आंत अविचारयो नभापियें, जो अल्वे ने भास्युं तो एफल तु पामी होराज ॥ आज पछेपिण एहवी, महेती

वहेती वातो करसो मा अभिरामी हो-
राज ॥ ३ ॥ बोली मानवती तदा, पीउडा
में अणघटतां वायक कांइ नथीभाख्या
होराज ॥पालीस सघला बोलडा, रामतमां
साहियोने रमतां जेमें दाख्या होराज॥
॥ ४ ॥ तो मुजरो मुझ मानज्यो, लोटिं
गणजो लेता लागो माहरे पाय होराज॥
एहमां झुठनजाणसो, देजो तव सावासी
दीयुं देणुं सवाइ होराज॥ ५ ॥ तुमेतो तु-
मारी तरफथी, करवुं हतुं ते कीधुं हछ कि
सी नविराखी होराज॥ मुझ अबलानो सा
हेबा, सुखदुःखनो इण वेला सरजणहार-
छे साखी होराज ॥ ६ ॥ भूपें वचन सुण्या
इस्या, कोप्यो अतिव्याकुलताथी कीधां नेत्र
विकरालां होराज॥ घृत सिंच्याथी जेहवी,
वाधे वायुसंयोगें ऊंची पावकमाला होरा

ज ॥ ७ ॥ रेरे निगुणी कामनी, लाज वली नही तुझने तेहवी हजी तु दीसे होराज। टेक हजीनथी मूकयी, असमजस अहदी वो भुडी तुका पीसे होराज ॥ ८ ॥ वोल वो लेछे एहवा, तो तु रहिछे अलाधि एहवा मदिरमाहे होराज ॥ हजीभ लगणसु वाप ढी, मुझने पायलगाडे चिंतथी साचुजाणे होराज ॥ ९ ॥ रीस चढावी राजवी, उठ्यो अति वनिताने मदिरमाहे मेहली होराज ॥ यत्रादिक तिम पूरिया, आव्यो नृपदर वार करीने रीत नवेली होराज ॥ १० ॥मा नवनी पिण तानने, आवीने गृहमांहिं ते हिज जेम वनाव्यो होराज ॥ तिमहिज पु रषा मचरी वली तिमहिज नृपने आगे ज[illegible] [illegible] जगाव्यो होराज ॥ ११ ॥ भ पनि यागणने पग, शीमप्रते सोहावे रज

तिम शिसें लगावे होराज ॥ सामणी अव
सर अटकली, वाये वीण सुरंगी कोकिल
कंठें गावे होराज ॥ १२ ॥ नृपनुं तनमन व
श करयुं, धूतारी जोगणीयें कांइक भुरकी
नाखी होराज॥ अतिहि वेश सोहामणो, जो
वा सरिखो जाणी जोवे भूपति झांखी हो
राज ॥ १३ ॥ सा योगण चित चिंतवे, पी-
उने पाय लगाड्यो पूरयो एक उल्हासो
होराज ॥ चरणोदक पावुं हिवे, आगल जो
उं किम थासे नृपथी माहरे तमासो होरा
ज ॥ १४ ॥ ढाल कहीए वीसमी, मोहनवि
जयें सुपरें मीठे वयणें बनाइ होराज ॥ जो
जो सवि श्रोता जना, अबलाए पीउं धूत
ण केहवी बुद्ध उपाइ होराज ॥ १५ ॥

दुहा ॥ नरपति योगण आगले, मूकी
बेठो मान॥श्रवण देइने सांभले. झीणा झी-

णा तान ॥ १ ॥ नरपति कहे करजोडीने, अहो योगण गुणधाम ॥ दास करी राखो तुमे, मुझने सही विणदाम ॥ २॥ केही खिजमत तुम तणी, मुझथी कीधी जाय ॥ अविनाशीजे आदमी, मुझथी किम वश थाय ॥ ३ ॥ तुमे अवधू आवी इहां, गाइ सुरंगी वीण ॥ कोइक कीधी मोहनी, मुझ ऊपर सुप्रवीण ॥ ४ ॥ हिवे तुमे जासो किहां, मुझथी लाइ प्रीत॥ नेह करी निरवाहियें, तो रहे उत्तम रीत ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ आसणरा योगी॥ ए देशी ॥ नृप कहे तेहने वेकर जोडी, हिवे जावो किहां मुझ छोडीरे, योगण मन मानी ॥ रहो इण मंदिरमांहे सदाई, अमे आपशु युगते गदाइरे ॥ यो. ॥ १ ॥ लेशु खबर हमेम तुमारी, तुमे जोजो नफरी ह

मारीरे ॥ यो० ॥ अमे अहोनिश उलंगमां र
हेशुं, तुमे कहेसोते वहेशुंरे ॥ यो० ॥ २ ॥रा
खशुं करीने हाथें छाया, घणी लागी तुम
थी मायारे ॥ यो० ॥ हिवे अधक्षण तुम वि
ण नरहाइं, तुम विरहो केम सहाइरे॥ यो०
॥ ३ ॥ जो तुमे माहरा राख्या नरहो, तो पे
लो करीने निवहोरे ॥ यो० ॥ सामण ताहरी
सो में विगाडी, में एवडी प्रीत लगाडीरे॥
यो० ॥ ४ ॥ में मन ताहरे पालव बांध्युं, व
लि नेहडो करीने सांध्युंरे ॥ यो० ॥ तोहिवे
ताहरा चरण नमुकुं, ए अवसर किम हुं
चूकूंरे ॥ यो० ॥ ५ ॥ दरसण ताहरो किहांथी
फेरी, आवी कोकिल पवने प्रेरीरे ॥ यो० ॥
लेख लिखित थयो तुम अम मेलो, हिवें
महेर करी मन मेलोरे ॥ यो० ॥ ६ ॥ ताहरे
मुझसम दास अनेका, पिण माहरे साम०

ण त एकाग ॥ यो ॥ वाणी सुणीने नृपनी अमोली, तत्र वलती यागण, बालीरे ॥ यो० ॥ ७ ॥ हम किनहीके राखें नरहे,, कोण पेट हमारा भरहेरे ॥ यो. ॥ हम पछिन किनहीके सनेही, मनम महर नहि केहीरे ॥ यो ॥ ८ ॥ यागी भोगी केही सगाई, हम, सें क्यों प्रीत लगाईरे ॥ ॥ यो. ॥ हम परदेसी प्राहुण लोगा, साधे फिर योगिका योगारे ॥ यो. ॥ ९ ॥ योगी किनके नसुणे मिता, यागी निरुएहि अणभित्तारे ॥ यो. ॥ अवधु योगीाकि आस्या कीज, पिण योगी का अत नलीजरे ॥ योगी भला जोई रहे निल्य रमता वरे योगी नकिनसु ममतारे ॥ यो ॥ मातपिताका दिया जोछेहा, तो नझगु क्या कर नेहारे ॥ यो. ॥ ११ ॥ नहि परवाह किसीकी हमको, फिर वहोत

कहा कहुं तुमकोंरे ॥ यो॰ ॥ जो तैं हमकूं राखण केरी, मन चाहधरे अभिनेरीरे ॥ यो॰ ॥ १२ ॥ तो तूं कह्या एक मान हमरा, तो रहेवे तुझ दरबारारे ॥ यो॰ ॥ कहे नृप तेहने देइ दिलासो, मुझ सरिखो काम प्र कासोरे ॥ यो॰ ॥ १३ ॥ तुम वचनथी नरहुं अलगो, हुं तो ताहरे पालव वलगोरे ॥ यो॰ ॥ एहवो भाग्य किहांथी अमारो, जेक ह्यो करिये तुमारोरे ॥ यो॰ ॥ १४ ॥ नृपनो अतिहि आग्रह जाणी, हिवे बोलसे योगण वाणीरे॥यो॰॥इम एकवीसमी ढालए भाखी, मोहन विजयें मनथिरराखीरे ॥ यो॰ ॥ १५ ॥

दुहा ॥ तोरहुं में तेर निकट, जो तुं न जावे दूर ॥ लाख लाख गालीसहे, तोही रहे हजूर ॥ १ ॥ जब तूं मुझकुं छोरके, र हे दूर छिनएक ॥ ऊठ चलंगी में लवे

याहे मेरी टेक॥ २ ॥ तु जो इतनी करसके, तोमोको इहा राख ॥ नहितो अवाहिं कर विदा, पीछा उत्तर भाख॥ ३ ॥ नृप पाय लागीने कहे, अहो योगण महाराय ॥ नि वहीस ए सघलु कह्यु, हुकमे रहिश सदा य॥ ४ ॥ गाळी गणीस तुमारडी, करिनें घीनी नाळ॥ साखी प्रमुए वातनो, आपण विहू विचाळ॥५॥ अतिआग्रह जाणीकरी, रही योगण नृप पास ॥ जोनो धूतण धूतसे, देई देई विसास॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी॥ मोतीडानी देशी ॥ योगण नृपना विहू दिल मिलिया, जाणे पयमें पतासा भलिया ॥ सामण चरिताली धूताली॥ राजकाज नृपें मूकी दीधू, जाणे योगणियें काई कामण कीधु॥ सामण चरिताली धूताली, रामकी मतवली॥ १ ॥

भूपति भोलो भेदन लेखे, धोलुं सघलुं प्र य करी पेखे ॥ सा० ॥ ते अवधूतण नृपमन भावी, जाणे अंगण गंगा आवी ॥ सा० ॥ रा० ॥ २ ॥ क्षणमांसा एक आंखें हसाडे, क्ष णमां नृपने पाय लगाडे ॥ सा० ॥ दूधने डां गनो न्याय देखाडे, वलि क्षणमें भूपतिने मारे ॥ सा० ॥ रा० ॥ ३ ॥ क्षणमां नृपने तमा चे मारे, क्षणमां बालपरे बुचकारे ॥ सा० ॥ जिम योगण लत्ता निरथाटे, तिमतिम पु रपति तलियां चाटे ॥ सा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ नर पति जाणे रखे दुहवाती, पंखणीनीपरे उ डिजाती ॥ सा० ॥ खुंद्युं खमे धूतारीनो रा- जा, जिम खमे डंका घायने वाजा ॥ सा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ जे गुणिजन गुणिने वश पडि- या, तेतो नंग जेम हीरे जडियां ॥ सा० ॥ रसनी रीझने सुगुणनी वातो, अमियसमा

णी ते विख्यातो॥सा॰॥रा॰॥६॥गुणव
तने सहु आदर आपे, गुणथी कूपक घट
जल थापे॥सा॰॥गुणियणने सेवे नर अ
मरा, जिम गुणलीणा पंकजममरा॥सा॰॥
रा ॥७॥ एक गुणे अवगुण बहु ढके, जि
म फणिपति माणे पोहोतो ढके ॥सा॰॥जे
गुणियणनो गुण नवि जाणे, लो तेहनु जी
वित अप्रमाणे॥सा ॥रा ॥८॥ तिम गु॰
ण जाणी सामणि अभिरामी, त्रिकरण र
जव्यो उग्रेणी स्वामी ॥ सा॰॥नृप आग
ल मधुरे स्वरें गावे, वली तिम मधुरी वी
ण वजावे ॥सा ॥रा॰॥९॥ वली योगण
पुरमा दियें फेरी, हरखें खेले अवधूचेरी॥
सा ॥वली तिम ताततणे घर आवे, सु-
रग थइ एकधमे जावे ॥ सा॰ ॥ रा॰ ॥
॥ १० ॥ यामिकनी पिण माडे वातो, मा-

नवती एम खेले घातो ॥ सा० ॥ नृप योगि
णाविण अधक्षण नरहे, तलफे मछ परेति
णे विरहें ॥ सा० ॥ रा० ॥ ११ ॥ नृप यदि जो
वा अनुचर मूके, योगणि आवे समयन चू
के ॥ सा० ॥ इम करतां निगम्या दिन के-
ता, तनमनथी थयो वश नृप तेता ॥ सा०
रा० ॥ १२ ॥ रागनेरंगे छबीलो छाके ॥ यो
गण आवे समयने ताके ॥ सा० ॥ सामाणि
अवसर काहियें नपामे ॥ जे अवनीशने बो
लें दामे ॥ सा० ॥ रा० ॥ १३ ॥ पिण जिनध
र्म पसाएं रूडो, थासे तेमां नहीं कांइ कू
डो ॥ सा० ॥ धर्मथकी मनवंछित थासे ॥
धर्मथकी चिंतित सुखपासे ॥ सा० ॥ १४ ॥
हिवे आगल अचरजनी वातो ॥ श्रोता नि
सुंणो तजि व्याघातो ॥ सा० ॥ ढाल बावी
समी मन थिर राखी ॥ मोहनविजयें रस

नार्ये भाखी ॥ सा० ॥ रा ॥ १८ ॥

दुहा ॥ एहवे उज्जेणीथकी, दुभरभरवा माट ॥ चाल्यो कोइक वाणियो, लेई दक्षण वाट ॥ १ ॥ पहोतो तेहवे अनुक्रमे, सुगोप इण ताम ॥ तापे पीडाणो थको, बेठो तरु विश्राम ॥ २ ॥ पूछ्यों पुरवासी भणी, इहा कुण राजेराय ॥ पाछो तेणे तिणने कह्यु, इहा दलथभणराय ॥ ३ ॥ राणी तस गुणम भरी, सकलकलायेपूर ॥ रतनवती तस पुत्रिका अगणित गुणे मनूर ॥४॥ हमणा ते नृपपुत्रिका, आवमे रमण वसत ॥ जोजोवानो ग्वप करो तो रहो इहा एकत ॥ ५॥ पथिके जाण्यु जायसु, साझे नगरीमाहि॥ जीन्या पे जायु भलु, इम धरि रह्यो तरुछाहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेत्रीसमी ॥ सखीरी आयो व-

संत अटारडो ॥ एदेसी ॥ सखीरी एहवे आ
वी क्रीडवा ॥ क्रीडवा ॥ रतनवती वनमां-
हि, चतुर नर सांभलो ॥ स० ॥ खेले संग
साहेलियां ॥ साहे० ॥ गालीने गलबांहि ॥
चतु० ॥ १ ॥ स० ॥ ताली देई केइक छि-
पे ॥ के० ॥ वेली सदनमझार ॥ च० ॥ स० ॥
ढुंढी काढे तिहांथकी ॥ ति० ॥ रतनवती ति
णिवार ॥ च० ॥ २ ॥ स० ॥ केइ कदंबना
गुछमें ॥ गु० ॥ रहे लघुंगात्र छिपाय ॥
च० ॥ स० ॥ श्रमसीकर लेइ मुखे ॥ लेइ० ॥
मुगतासम रह्या आय ॥ च० ॥ ३ ॥ स० ॥ ना
खे गेंदुक कुसुमनां ॥ कु० ॥ आमासांहमां
केइ ॥ च० ॥ स० ॥ छोटी कमरीये बालिका
॥ बा० ॥ दोडे मिलीने सवेइ ॥ च० ॥ ४ ॥
स० ॥ जाणीयें उरवसी ऊतरी ॥ ऊ० ॥ इं
द्रपुरीथी सूर ॥ च० ॥ स० ॥ सोभायें वन

छाहीउ ॥ व ॥ ऋतुनृप तो रह्यो दूर ॥
च० ॥ ५ ॥ स० ॥ तेपथी नृपपुत्रिने ॥नृ०॥
निरखे ओछे नेण ॥ च० ॥ स० ॥ चोरपरे
छानो रह्यो ॥ छा ॥ मुखथी न जपे वेण॥
च० ॥ ६ ॥ स० ॥ ते नर वासी उज्जेणनो
॥ उ ॥ रतनवतीयें दीठ ॥ च० ॥ मूकी ते
हने तेडवा ॥ ते० ॥ बाला एक विशिठ ॥
च० ॥ ७ ॥ स० ॥ रे परदेसी प्राहुणा ॥
॥ प्रा ॥ किम छपी रह्योगे अबूझ ॥ च ॥
॥ स ॥ ऊठ अमारी स्वामिनी ॥ स्वा० ॥
तेडेछे अह्ये तुझ ॥ च ॥ ८ ॥ स ॥ आ-
व्यो बटाउ वाणियो ॥ वा ॥ रतनवतीने
पास ॥ च ॥ स ॥ करी प्रणिपत ऊभो र
ह्यो ॥ ऊ० ॥ मा पूछे मुविलास ॥ च०॥९॥
स० ॥ आव्या क्हिाथी किहा जसो, मापो
मत्यवचन ॥ च० ॥ स० ॥ नर कहे आव्यो

उज्जेणथी ॥ उ० ॥ जेहे भूतळे धन्य ॥ च० ॥ १० ॥ स० ॥ मानतुंग राजा तिहां ॥ रा जा० ॥ राजे वधते वांन ॥ च० ॥ स०॥ रूपकलागुणें आगलो ॥ गु० ॥ नही कोई तेह समान ॥ च० ॥ ११ ॥ स० ॥ जेहना सु जस निसाणना ॥ नि० ॥ दह दिस सुणि यें अवाज ॥ च० ॥ स० ॥ जेहथी डरतो ग गनमें ॥ ग० ॥ नासी रह्यो सुरराज ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ स० ॥ अंगतणी चकचोधमे ॥ च० ॥ पाम्यो हार अनंग ॥ च० ॥ स० ॥ वहे अ- होनिसि जस अंगण ॥ अं० ॥ दान गंगा- ना तरंग ॥ च० ॥ १३ ॥ स० ॥ ते नृप जे णें दीठोनही ॥ दी० ॥ जीव्युं तस अप्रमाण ॥ च० ॥ स० ॥ दीठांहिज आवे बनी ॥ आ० ॥ केता करियें वखाण ॥ च० ॥ १४ ॥ स० ॥ जे कन्या तेवरवरे ॥ व० ॥ तेहनुं पूरण भाग ॥

॥ च.॥स. ॥ पथिकना वचन सुणी इस्या ॥
॥ सु ॥रतनवती धरयो राग॥च.॥१५॥
॥स. ॥अतुर हुइ परणवा॥प॰ ॥ उज्जे
णीधणी तेह ॥च॰ ॥स॰॥ गुण निसुणी
परगमी गया ॥प॰ ॥ रोमा रोमे तेह ॥
च ॥१६॥स ॥वनहूती आवी घरे ॥
आ॰॥ रतनवती ततकाल॥च॰ ॥ स ॥
मोहनविजयें लहकती ॥ ल॰ ॥ कहि त्रे-
वीसमी ढाल ॥ च॰ ॥ १७ ॥

दुहा॥ चेटीने नृप धुव कहे, गतिशेश
व मुझ हेव ॥ यौवन आगत तनुविषे, अ
नुमाने अहमेव॥ १॥ वर वरवा इछा थई,
मुझने हिवे सुविलास॥ तेमाटे तुमने कहु,
इछा पूर उल्हास॥ २॥ वर वरवो उज्जे-
णपति, नहि तो पावकसग ॥ तू जा कहे
मुज मातने, करकरुणा तो रग ॥ ३॥ चे

टी दोडा ततूक्षणे, राणी निकट पहूत ॥ रतनवतीनी वातडी, कहि मधुराई युत्त ॥ ॥ ४ ॥ गुणमंजरियें रायने, इमभणी सकल प्रवृत ॥ मानतुंग नृप परणवा, पुत्री थइ उनमत्त ॥ ५ ॥ दलथंभण निजनारिने, कहे त्रिय मकरिश खेद ॥ पुत्रीने परणावसु, ए पूरीशुं उमेद ॥ ६ ॥ माताएं पुत्री भणी, ज इ दीधी आसास ॥ इछावर परणावशुं, पू रुं तुझ मन आस ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ धणरा ढोला ॥ एदे शी ॥ दलथंभण निज मंत्रीनेरे, तेडी कहे एकंत ॥ गुणना लोभी, तुं जा नयरी उझे णीयेरे ॥ मानतुंग जिहां संत ॥ गु० ॥ मानो मानो सुगुण कह्यो मानो, तुमेए महारी अरदास ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कहेजे लागीने पगेरे, माहरो संदेसो तास ॥ गु० ॥

रतनवतीने परणवारे, वेहेला आवो आवास ॥गु ॥२॥याशे जेमुझ चाकरीरे, नेह करीश महाराय॥ गु०॥रहेसु दास थई सदारे, इम जई कहेज भाय॥ गु०॥ ३ ॥ वहेजे पथ उतावलोरे, विलब नकरजे क्याहि॥ गु० ॥ वहिलो वलजे नृप भणीरे, तेडी आवजे आहिं॥ गु ॥ ४॥ मत्री नृप आदेशथीरे, चाल्यो चडीने तुरग॥ गु ॥ साथे लीधो सबलोरे, भट लीधा वलि सग॥ गु ॥५॥ पथे वहेना पाधरोरे जोतो धरागिरिनेण॥ गु ॥ अनुक्रम केतेदिनेरे आव्यो पुरउज्ञेण॥ गु ॥ ६ ॥ लक्षिणपतिने मत्रियेरे, भेत्र्यो नप माननुग। गु ॥ भेटथयो चित भेटणर हरन्याप्रण पुरपुग॥ गु ॥ ७॥ ढलथभणराजान्गार [illegible] ज्यो सचि

रै तद्दीव ॥ गु० ॥ ८ ॥ मंत्री उतस्यो तिहां जइरे, भोजन कीधां सार ॥ गु० ॥ पेहेरी व सन संध्यासमेरे, आव्याते दरबार ॥ गु० ॥ ९ ॥ एकांते बेसी करीरे, मांडी, भूपथी वा त ॥ गु० ॥ राजलगें आव्यो अछुंरे, सूक्यो नृपनो विख्यात ॥ गु० ॥ १० ॥ मुझ नृपनी जे पुत्रिकारे, तिणे प्रतिज्ञा कीध ॥ गु० ॥ वरवो उझेणीधणीरे ॥ नहीतो अमे व्रत ली ध ॥ गु० ॥ ११ ॥ तेमाटे पण पूरवारे, तिहां लगें आवोस्वाम ॥ गु० ॥ दलथंभणें प्रेरयो अछेरे, मुझने इणेकाम ॥ गु० ॥ १२ ॥ हि- वे सजथई स्वामी तुमेरे, कीजे प्रयाणो आज ॥ गु० ॥ पाणी नखमे पातलीरे, लाजे विणसे काज ॥ गु० ॥ १३ ॥ मानतुंग निसु णी रह्योरे, तेह सचिवनां वयण ॥ गु० ॥ उत्तर देइ नवि सक्योरे, नीचाकरीरह्यो ने

ण ॥ गु० ॥ १४ ॥ कहे मत्री किम साहि-
वारे, अणबोल्या रह्या आम॥ गु० ॥ पाछो
उत्तर आपतारे, सुकाइ वेसेछे दाम ॥ गु०
॥ १५ ॥ नृपकहे माहरी नानथीरे, आवीस
शिरने जोर ॥ गु० ॥ अलगो नथी तुमवच
नथीरे, पिणछे एक मरोर ॥ गु० ॥ १६ ॥
उत्तर एहवो मत्रिनेरे, दीधो तव भूपाल ॥
गु ॥ मोहनविजयें एकहीरे ॥ सुभग चो-
वीसमी ढाल ॥ गु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ भूप विचारे चित्त थकी, जावु
अतिहिदूर ॥ योगण दुहवासे खरी, जो हू
नरहू हजूर ॥ १ ॥ एकममे वेहु क्रिया, कि
म सचवाणी जाय ॥ नृप चित्त आवी मि-
ल्यो वाघ नदीनो न्याय ॥ २ ॥ जो नवि
जाऊ परणवा तो रीसामे भूप ॥ ए वेहु-
ना मन राखवा, मी वुद्ध करू अनूप ॥ ३ ॥

एहवे फिरती योगिणी, आवी जिहांछे रा
य नृपते मंत्री देखतां दोडी लागो पाय॥
॥ ४ ॥ बेठी सामण बेसणे, वीण वजावे
सार॥ पिण नृपनो झांखो वदन, फिरफिर
जोए निहार ॥५॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ राग बंगालो ॥ बोले
योगणी नृपथी वाण, आज एसे क्यों दिसो
सयाण॥ मन मानले ॥ क्या कछु फिकरहै
हृदय मझार, कहे चिंतायुं दियुं बिडार॥
म०॥ १ ॥ कहेतो तेरे आगे इंद, जकरपक
रकर ल्याऊं बंद॥ म० ॥ कहेतो बकरीसें ह
राउं गजराज, कहेतो चिडीपें उडाउं बा
ज॥ म० ॥ २ ॥ कहेतो शशिकला सूरज मे-
र, तेरे आगें करुं ढमढेर ॥ तेरे मनमें हो
वे चाह, तो शशि पास गहावुं राह॥ म०
॥ ३ ॥ कहेतो लराउं हरिसें कुरंग, कहेतो

ऊलट वहाउं गंग॥ म ॥ कहेतो करु सूर्य का चद कहेतो चदको करि ल्यु दिणद॥ म ॥ ४॥ इत्यादिक विद्या मुझ पास, कहेतो करी दिखाउ तमास॥ म ॥ जो एक हू मैंतेरी भीर, तो तू होत्तहै क्यों दिलगीर॥ म०॥ ५॥ दिलकी वातकहो धरी हूस, जो नकहेतो तुझकू सूस ॥ म ॥ तव योगणने कहे भूमीस, तोकहु जोनचढावो रीस॥ म ॥ ६ ॥ कहेवा जीव धरेछे ईह, पिण कहेता नीव चाल जीह॥ म०॥ सामणि कहे तूं सुणवे राय, जैसी होए तैसी देवताय॥ म ॥ ७ ॥ नृपकह मुगीपट्ठण गाम, राजा तिहा दलथंभण नाम॥ म॰॥ पुत्री रतनवती नामेण, मुझपऊर पण कीधु तेण ॥ म ॥ ८ ॥ नेमाटे तिणे राजान, मुझने तेडवामूक्यो प्रधान॥ म ॥ तिहा जइ पर

णु कन्या तेह, वाततणुंछे कारण एह॥ म०
॥ ९॥ योगण त्रटकी बोली वाण, रेरे अ-
धम क्या बोल्यावाण॥ म० ॥ क्यातें दिया
था कोलसंभार, दिन थोरेमें क्यों दिया
बिसार॥ म०॥ १०॥ नसक्या तुंतो वचन
निवाह, तो हमकुं तें राखे कांह॥ म० ॥ दे
इ वचन युंचूके पुमान, ताको जीयो अजी
यो जान॥ म०॥ ११॥ जानीबे तेरी कूडी
प्रीत, अब तेरेपर क्या परतीत॥ म० ॥ तु
झसेंतो नीका मंडलीक, जो पोतेसें रहत
नजीक॥ म०॥ १२॥ धिग धिग धिगतेरा
अवतार, किससुले घड्या तोहें किरतार॥
म० ॥ तुमसेंतो भले हम योगीस, वचने
तुझपे रहे निशदीस॥ म०॥ १३॥ हमभि
चलेंगे तीरथकाज, क्या योगीकुं संभारना
साज॥ म० ॥ एक दार मुंदे खुले दार ला

ख, ए योगी मुखकीहै भाख ॥ १४ ॥ तोसें क्या देणांहै राय, यो कछु दियो होयतो वताय ॥ म० ॥ अहि अरि योगी नकिनके मित्त, तू राजातो हमहैअतीत ॥ म०॥१५॥ तू तेरेघर करे नितराज, अवहमसें क्या तेरा काज ॥ म० ॥ इम योगणना निसुणी व चन्न, नृप ढालीरह्यो नीचाकन्न ॥ म० ॥ ॥ १६ ॥ सामणने पाये ततकाल, लागी म नावे हिवे भूपाल ॥ म ॥ इमभणी ए पच-वीसमी ढाल माहनविजयना वचन र-साल ॥ म० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ अहो अहो सुभगे सामणि, हु अपराधी आज ॥ ए गुनहो बगसो मुने, रखे चढावो रीस ॥ १ ॥ चाकर चूके चाकरी पिण स्वामि नचवे साच ॥ अवगुण ऊपर गुणकरे ते माणस जाति साच ॥ २ ॥

कृष्णागर बाल्यो थको, सांहमु दिये सुवास ॥ कोसजो नाखीयें नीरमां, तो पिण जल दिये तास ॥ ३ ॥ केसरने घसतांथकां, बिमणो दाखे रंग ॥ सोनाने परजालियें, अतिहि दीपावे अंग ॥ ४ ॥ इक्षु पिलेजोयंत्रमा, तोपिण रस देअंत ॥ तिम निह्नेजा ऊपरे, कदीहिन कोपे कंत ॥ ५ ॥ तिमहूं चूको सामिनी, पिण तुमे चूको केम ॥ बेहू सरिखा होवतां, किम रसवाधे एम ॥ ६ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ कपूर होवे अति ऊजलोरे ॥ एदेसी ॥ नृपकहे बेकर जोडीने-रे, अहो अहो आतमराम ॥ वीणा मूको कंधथीरे, रीस चढावो कां आमरे ॥ योगण छटकीन दीजे छेह, हुंछुं पगनी रेहरे ॥ योगणा मानो वीनति एहरे ॥ योगण छटकीन दीजे छेह ॥ एआंकडी ॥ सरस नजर मेला

तणीरे आवतीसु नथी चित्त ॥ छेहनयो तु
मे मुझ भणीरे, हु इम जाणतो नित्तर ॥
यो० ॥ २ ॥ माहरा हृदयमाहे वसीरे, मन
हरी जावाछो एम॥किहा रह्यु तुम योगीप
णुरे, ए पातिक छूटसो केमरे ॥ यो० ॥ ३ ॥
जासो जो गोद बिछावतारे, तो अमवल
स्यो माम ॥ करि किम रहे काने ग्रह्यारे,
निम तुमे अभिरामरे ॥ यो० ॥ ४ ॥ माया
लगाडी कारमीरे मुझथी तुमे महाराय॥पि
ण कनीहि योगीसरारे आपणना नवि था
यरे ॥ यो० ॥ ५ ॥ परदेशीथी प्रीतडीरे, क-
रवा नहिज स्नेह ॥ नेह निवाहि नवि सके-
रे जाए विहगपर ऊडर ॥ यो० ॥ ६ ॥ तेमें
नयण पारखरे तमचा दीठा आज ॥ जो
ह पहरु जाणतारे तो नकरत नेह समा
जर ॥ यो० ॥ ७ ॥ पिण नहिनमु साचुरे,

होए होवणहार ॥ क्षौरकरम कीधा पछे-
रे, पूछे सुं तिथीवाररे ॥ यो० ॥ ८ ॥ जे जी
में तुमें कह्यो हलोर, रहिसुं सदा इणठो-
र ॥ तिणहि जीमें जायसोरे, कहेतां किमव-
हे सोररे ॥ यो० ॥ ९ ॥ नेहसुरद्रुम पालिने
रे, नांखो कांइ उछेद ॥ करुणानीरें सिंचि-
येंरे. पूरो एह उमेदरे ॥ यो० ॥ १० ॥ हुं न
ही सहीसकुं तुम तणोरे, विरहो अधक्षण
मात्र ॥ द्राख ज्यु वेली विछुटियेंरे, झुरी कृ
शकरे गात्ररे, ॥ यो० ॥ ११ ॥ तनु कोमल
मधुरी गिरारे, दीसेछे प्रगट प्रसिद्ध ॥ तो
कठणाई एवडीरे, हियडे किहांथी लीधरे
॥ यो० ॥ १२ ॥ मनपण करीने कवलुंरे, मा
नो मुझ मनोहार ॥ कोईकना मुख साहमुं
रे, जुउ जीवन आधाररे ॥ यो० ॥ १३ ॥ अ
ति ताण्यो किम पूरवेरे, नेहथयो जिहां ए

म ॥ नाम्बी निरहस्योथिमारे, नामी जासो कमर ॥ यो० ॥ १४ ॥ कूडो आल चढावीने रे, जासो तुमे महाराय ॥ दाढी हाल्यानो किस्योरे, माड्यो मुजथी न्यायरे ॥ यो० ॥ ॥ १५ ॥ हुकमकरोता परणवारे, जाऊ करु णागार ॥ कहोतो नजाऊ इहा रहुरे, कहो ते करिये विचाररे ॥ यो० ॥ १६ ॥ किम चाले तुम दुहव्यारे, वीनवे इम भूपाल ॥ मोहनविजये वरणवीरे, एह छवीसमी ढालरे ॥ यो० ॥ ७० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ नृप आतुर जाणीकरी, सामणि बोली ताम ॥ रवते नारान्यके, क्यों कलपतहै आम ॥ १ ॥ दखन नग पारखा, इत ना किया विलाम ॥ वन्यवन्य तेरी मातकु, तोमहे मावाम ॥ २ ॥ दलथभनकी पुत्रीभि कर वियाह नगग ॥ कहेतो मे सा

थे चलुं, वीणा लेई संग ॥ ३ ॥ तूं दक्षणकु ऊठचले, हम रहे इहां कुणकाज ॥ जित तूं तित हमही चले, मतकर फिकर महाराज ॥ ४ ॥ राजा अतिहर्षित थयो, सामणनो लहि हेज ॥ जिम हरखे निद्रालुउ, पामी सुंदर सेज ॥ ५ ॥ हारेल जेम वाहन मिले, भूख्याने जिम अन्न ॥ तिम योगण वचनें थयो, नवपल्लव नृप मन्न ॥ ६ ॥ योगिण नुं मन थिर थयुं, देखीने भूपाल ॥ दलथं-भणना सचिवने, तेडाव्यो ततकाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ जगजीवन जग वालहो ॥ एदेशी ॥ तेह सचिव कहे रायने, ढील किसी करे राय लालरे ॥ चालोजी पंथछे वेगलो, आवे जो तुमारे दाय लालरे ॥ चतुर सनेहि सांभलो ॥ १ ॥ तिहां नृप वाट जोतो हसे, हुउ तुमे तइयार॥ ला०॥

वरमकरनगति शाम्नी, तान्त रहीं सु विचार॥ला ॥च ॥२॥नृप पिण तेहना म्हणथी, सजी चतुरगो सैन्य॥ ला ॥नि सान हश्राथया नाटें पूरयो गयण॥ला०॥ च०॥ ३ ॥यागणियें निनयत्रमा, राख्या भुपण खास॥ ला०॥ लाना राख्या गोपवी, नृपनि नजाणे तास॥ला ॥च ॥४॥चा ल्यो नृप नजिग न्शि, सचिवन आगल कीध॥ ला ॥ नाणि पिण सार्यें चली र थम बेसारी लीध॥ला ॥च ॥५॥वाटें द ल मवला वह जाण ऊमह्यो मह॥ला ॥ क उ र्गलिया क रतथी आरामविछे एह ॥ला ॥च ॥६॥ नं पकन ऊपरं, हय चाल हामन॥ला ॥मदनरना मयगलच ल गुलाब रग्त॥ला ॥ला ॥७॥पाय पा पयरगा न्या साथ वह ॥

ला० ॥ मुछाला मच्छरायता, तिरकसी चले धरि कंध॥ला०॥च०॥८॥इम सेन्याये परव र्यो, मंजलसर थयो राय॥ ला० ॥क्षणक्ष ण नृप सामणतणी, खबर लिये चित्त ला य॥ला०॥च०॥९॥क्षणक्षण विहुं एक वा हने, बेठा करे गुणगान॥ला०॥गीतसुणे तस सुखथकी, भूधर देई कान ॥ ला० ॥ च० ॥ १० ॥ इम वहेतां दिनपांचमे, पा- म्या एक उद्यान॥ला०॥सदल सरल म- हीरुह घणा, ऊंचा लगे असमान॥ला०॥ ॥ च० ॥ ११ ॥छाया सघन देखी जिहां, रविपिण नकरे जोर॥ला०॥द्रुमगुछें बेठा थका, मधुरां टहुके मोर॥ला०॥च०॥१२॥ सजल सरोवर जिहां तिहां, अति रमणी यक वन्न॥ला०॥देखी महीपतिनुं थयुं, घ णं आणंदित मन्न॥ ला० ॥ च० ॥ १३ ॥

योगणिने पूछीकरी, डेरा दीधा तत्र ॥ला॰ खेदाक्रात थया भटा, ऊतरिया सर्वत्र ॥ ॥१४॥ धूतासे योगेण थकी ए वनमें भू पाल॥ ला ॥ मोहनविजयें भली कही स त्तावीसमी ढाल॥ ला॰॥ च॰॥ १५॥

दुहा॥ डेरा दीधा देखीने सामणार्चिंति चाव ॥ ए कानननमे कतने धूत्यानोछे दा व॥ १॥ ढील नकरवी कामिनी ऊखाणो कहे लोय ॥ जिम जिम भीजे कवली ति मतिम भारी होय॥२॥इम चिंती ऊठी तुरत वीणा करधरि तेह ॥ मानतुग महीपति म णी इमभाषे धरि नेह॥ ३ ॥ सुणवे तू उ ज्ञेणपति कहे तो इणउद्यान ॥ हम खेले जइ सरवरे कर आवे असनान॥४॥ छि नुकमें फिर आउगी करिके मुनि आचार ॥ तव नरपति कहे स्वामिनी वनछे अ-

ति विस्तार ॥ ५ ॥ वाघ सिंघ गुंजे घणा. तुमेछो अस्त्री जात ॥ कहो तो आवुं वोलाववा. सा बोली सुणि वात ॥ ६ ॥ कौन वोलावे सिंहकों. इम कहि ऊठी तेह ॥ वीणा लेई वनमां. आवी धरिने नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठावीशमी ॥ के तट सरोवरनोरे अति रलियामणोरे, चिहुंदिशि भरियो गुहीर गंभीर ॥ मछकछपनांरे पूंछ अछाटतीरे, उछले जल सरतीर ॥ तट सरो० ॥ १ ॥ हंस चकोररे बगने सारसीरे, जेणे तट करता बहुलि केलि ॥ केइक उडतारे केइक बेसतारे, केई रह्या जलथी चंचू भेलि ॥ तट० ॥ २ ॥ जंबु लिंबुरे अंब कदंबनारे. तिहां रह्या लुंबित जुंबित झाड ॥ जलराखणरे जनने कारणेरे. जाणियें कीधी एहनी वाड ॥ तट० ॥ ३ ॥ अति रम

णिकरे थानक जोइनेरे, योगण पामी मन आणद ॥ साभलजो सहु कोइरे नृपने घूत वारे, जे इहा रचसे रामा फद ॥ तट० ॥ ॥ ४ ॥ मूकी वीणारे अलगी कधथीरे, तरु घर कोटरमाहि छिपावी ॥ पेठी धीठीरे ऊडा नीरमारे, कीधु मजन युगती बनावी॥ तट० ॥ ५ ॥ मजन करिनेरे जलने बाहिरे रे, आवी केस निचोव नार ॥ टप टप टब केरे जलना बिंदुवारे जाणे तूटो मोतीहार ॥ तट० ॥ ६ ॥ सुदर अबर पीताबरतणारे, काढ्या वीणा माहेथी ताम ॥ पहिरुया झिलनाग वमन ने अगथीरे ॥ जेणे छबि माहे मुरअभिराम ॥ तट० ॥ ७ ॥ कज्जलरेखार सारा नेणथीरे, जाणे समारयो मनमथ वाण ॥ भाधी गतीरे कुकम बिंदुकारे, जाणे उग्या ऊगव भाण ॥ तट० ॥ ८ ॥ अ

गो अंगेरे भूषण भाविया रे, नेउर घमके चरणे जोर ॥ जाणियें पियुनेरे इणपरें जी पवारे, धमससी दीधी नगारे ठोर ॥ तट० ॥ ९ ॥ अपछरसारिखुंरे रूप बनावियुंरे, हींचे वड साखाग्रहिबांहि ॥ गाए मधुरांरे गीत आलापीनेरे, ऊंचे स्वरथी तिणे वनमांहि ॥ तट० ॥ १० ॥ इम तिहां करतांरे पहोरज थइ गयोरे, पाछल नरपति जोवे वाट ॥ हजियन आवीरे योगण सुं थयुंरे, पडीहसे भूली विषमे घाट ॥ तट० ॥ ११ ॥ रखे होए एहनेरे जीवें पराभवीरे, रखे होसे बूडी सरोवरमांहि ॥ के रखे मुझनेरे वाही गइ हसेरे, में पिण मूकी एहने कांहि ॥ तट० ॥ १२ ॥ हजियन आवीरे वेला बहु थइरे, किहां गइ योगण मूकी नेह ॥ जोइ काढुरे जइने वनमांरे, जिहां तिहां होसे

इमणा गह॥तट०॥ १३ भूपति ऊव्योरे एकलो आपमुरे, मेवक कोइ नलीधो स-ग॥धीरज हुइर रायमणी तढारे फुरक्यो ज्यारे जिमणो अग॥ तट०॥ १४॥चढ वढो चाल्यारे खडग सबाइनेरे, वनमा जो वे तव भूपाल॥ मोहनविजयेरे भापी रग थीरे, अढावीममी ढालरसाल॥त०॥१५॥

दुहा॥लतागुच्छ ढढोलतो, तस जोवे नृपराट॥भमे जिम मयगल विखरयो, फि रे करे गललाट॥१॥ यूयभ्रष्ट जिम हरण लो फिरे प्रचारे फाल॥ तिम नेहे वेध्यो थको, वनमा फिरे भूपाल॥२॥ पिण यो गण लाभे नही, जोवे पगभूपीठ॥ मानव तीर्य कतने, वनमा भमतो दीठ॥३॥जा ण्यु आव्यो वल्लहो, मम्मने जोवा काज॥ दिन वोले धृत्या तणो, अवमर मिलियो

आज ॥ ४ ॥ नाहमणी आकर्षवा, गाए गी त रसाल ॥ जाणे टहुके कोकिला, बेठी आंबाडाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकोणत्रीशमी ॥ राजाने देखीनेहो, कामणी कूडी बुद्धि उपावे ॥ साद करी करी नाहने तेडे, अहो लाल विदेसी मित्ता, माहरे इण सरवरियें पधारो ॥ ही चोले हिंचीनेहो, पंथी माहरा अरज करुं छुं ॥ तार पछी तुमे वेह जोहो पाणी॥अ० ॥ १ ॥ पंथीडा पंथनेहो, पंथी मारा रखेर वहेता ॥ दीसोछो कोइ प्रेम पियारा ॥अ०॥ वाटडली वालीनेहो ॥पंथी०॥मुझपें पधारो ॥ आहूंने अवलूं कांइ विचारो ॥ अ० ॥ २ ॥ आगले जाताहो ॥ पंथी० ॥ इहांहिज आवो ॥ पगले बेचारे पगसुं होसे मेला ॥ अ० ॥ इम किम वनमेंहो ॥ पंथी० ॥ भलता भमो

छो ॥ किण कामणिय करयां इम गहिला ॥ अ ॥ ३ ॥ व न्डामें व याणेहो ॥पर्यी०॥ नृप चित चिंतें, मझने मादकरे कुण नारी ॥ अ ॥मामणिना मारिखोहो ॥ पर्यी० ॥ स्वर तेनदीसे पतो अमेंथो मादछे भारी ॥ अ० ॥ ४ ॥ वाणिने अनुमारेहो ॥ प०॥ नृप निहा आव्यो दीठी नारी हिंचती डाले ॥ अ० ॥ भामाने भरोंमेहो ॥ पर्यी० ॥ अपछर नीसे, राजा फिरि फिरि तास निहाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ शाभाने देखीनेहो ॥ पर्यी० ॥ नृप जोइ रहियो परणे नमीने ताम हिंचोले ॥ अ० ॥ वेवडीये वेयाणोहो ॥ पर्यी० ॥ विकट कटाक्षे नारी भणी भूपति तवबोले ॥ अ० ॥ ६ ॥ किहाथी आवीहो, भामनि भोली ॥ किहा तु रहेछे, इहा एकाकी किम तु हिचे ॥ अ० ॥ नाह

लिये निहेलेहो ॥ भा० ॥ दुहवी दीसेछे, किं वा कोयथी प्रीतडी सिंचे ॥ अ० ॥ ७ ॥ नानडीयें वेपेंहो ॥ भा० ॥ विहती नथीशुं, कहे मुने साच हृदय तुं खोली ॥ अ० ॥ राजाना मुखथीहो ॥ भा० ॥ वचन सुणीने, तत्क्षिण धुतण मधुरुं बोली ॥ अ० ॥ ८ ॥ अकह कहाणीहे ॥ पंथी० ॥ तुझपे कहुंछुं, बालपणे पण कीधो अटारो ॥ अ० ॥ पयतल धोइनेहो ॥ पंथी० ॥ जे जलपीवे, तो हुं-तेहने करुं प्रीतमप्यारो ॥ अ० ॥ ९ ॥ पटकाने पलवटेंहो ॥ पंथी० ॥ प्रीतम नाथुं, रुपभतणीपरे इहां फेरुं ॥ अ० ॥ एहवो तो नाहलियोहो ॥ पंथी० ॥ नवि मिल्यो कोइ, पण नरहुं कोइ मुझ पण केरुं ॥ अ० ॥ १० ॥ खेचरनो स्वामीछेहो ॥ पंथी० ॥ जनक अमारो, तेणे मुज पणनी वातडी

जाणी ॥ अ० ॥ तातडीयें रीसढलीहो ॥प
र्थी० ॥ मुझ भणी कीधी, वर परणाववा
घणु ए ताणी ॥ अ ॥ ११ ॥ पीयरथी री
सावीहो ॥ पथी० ॥ इणे वन आवी, पण
पुरुषाविण किम परणाय ॥ अ० ॥ आज मु
ने दीहढलाहो ॥ पथी० ॥ चार व्यतीता,
चार तेचार युग सरिखा गणीए ॥ अ० ॥
॥ १२ ॥ कामिणिनी केलवणीहो ॥ प० ॥
सहीकरी मानी, नृप जाणे इणे साची दा
खी ॥ अ ॥ मोहनविजयेंहो ॥ पंथी० ॥सु
परे वनावी, उगणत्रीशमी ढालए भाखी॥
अ० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ नरपति रमणी निरखिने, थयो
घणु ल्यर्गन ॥ निम आमिष पेखीकरी,
उलसे जलचर मीन ॥ १ ॥ भप विचारे ए
हने, परणु वनहमझार ॥ दुजन विस्मय

कारणे, सफल करुं अवतार ॥ २ ॥ नृप भाषे नारी भणी, अहो रतिने अवतार ॥ जे तुझ चरणोदक पीये, तास करे भरतार ॥ ३ ॥ हुं तुझ चरणोदक पिऊं, थइ फिरुं वृषभ सरूप ॥ जो मुझने परणो तुमे, तो पण पूरुं अनूप ॥ ४ ॥ सा भाषेरे पंथिया, तोछे केहनीढील ॥ हुं एहिज इछुं- अछुं, त्यो मनमथनो मील ॥ ५ ॥ अंध- हि वांछे आंखने, पंगू वांछे पाव ॥ तिम हुं वांछूछूं पीयु, वरुं पण पूरे राव ॥ ६ ॥ योगणतो भूलीगयो. विकलथको महिपा- ल ॥ दंभफंदमांहे पड्यो. भरीय नसके फाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल तीशमी ॥ मुजरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ एदेशी ॥ आतुर हुवोजी परणवा, भुपति वन्नमझार ॥ साकहे लावो

जी निर्मल नीरने, ल्यो चरणोदक सार, हिवे सहु जोजो कौतुकवातडी ॥ १ ॥ कामिनी कपटभंडार, नविलहे कोई तास चरित्रनो, ब्रह्मादिक पिणपार ॥ हिवे०॥२॥ नृप तव दोड्योजी नीरने कारणे, पेठो सरोवर माहे ॥ पात्र निपाव्योजी पोयणपत्रनो, भरचो जल तेहमा उछाहे ॥ हिवे० ॥ ॥ ३ ॥ जल लेई आव्योजी नारी आगले, कहे इम वेकर जोड ॥ पाउ कहोतोजी हु धाई पीयु, पूरो मनतणा कोड ॥ हिवे० ॥ ॥ ४ ॥ नारिये दीधो पद नपद्दाथमा, मूर्कीन कहे धोय ॥ ल्योकरो आचवन तोयनु माहेरी वाउना होय ॥ हिवे० ॥ ५ ॥ अरहो परहाजी त्या अवलोकिने, पुरपति धाय पाय ॥ पीत्र पखाली मानवेला तिहा, चरणात्क चिनलाय ॥ हि ॥ ६ ॥को

टमें नाखीजी सुंदर फालीयुं, वृपभ सरिखो बनाय ॥ चाबख देई सरवरने तटे, फेरव्यो नारीयें राय ॥ हि० ॥ ७ ॥ जिहां त्रिय मूकेजी पायतणा तलियां, तिहां नृप मांडेजी हाथ ॥ मानवतीयें तिहां वननें विषे. धूत्यो अवंतीनो नाथ ॥ हि० ॥ ८ ॥ चारें दिशायै चार कलस मीसे, रेणुना तुंग बनाय ॥ तरुवर तणीजी साख करी तिहां, परण्यो प्यारीने राय ॥ हि० ॥ ९ ॥ धिग धिग होजोजी काम विटंबना, कामथी न रहेजी माम ॥ कामथी कामी कामिनी आगले, नर धूतायेछे आम ॥ हिवे० ॥ १० ॥ मानवती त्यां मनमांहे हसे. अहो अहो नाहनी बुद्धि ॥ धुंतुंछुंजी तोहि हजी लगे, पडतो नथी कांई सुद्धि ॥ हि० ॥ ११ ॥ एवल सारुंतो इणे नारीने, निश्चछी मूकी के

ण ॥ मेंतो पाल्याजी मारा बोलडा हरपे एम हिएण ॥ हि० ॥ १२ ॥ ॥ नृप कहे केमनो हसोलो प्रिया, उलस्यु केम तुझ हीयु ॥ साकहे केमनो हु नवि उल्लसु, पामी तुम सम पीयु ॥ हि० ॥ १३ ॥ आज कृतारथ हु एहवे थई पण पूरयो मनख त ॥ भाग्यते वाघ्योजो हिवे इहा मुझतणो, दुखनो पोहोतो अत ॥ हिवे० ॥ १४ ॥ कर ग्रहीने कहे नृप नारने, चालो डेरेजी हेव ॥ पीयूनो आग्रह घणु इम पेखीने, सा बोली ततखेव ॥ हि ॥ १५ ॥ स्वामीजी हमणा तुम सगें आवता, मुझने आवे लाज ॥ आवीस तिहाहोजी घडी एक अतरे, जावो तुम महाराज ॥हि ॥१६॥ हरस्या नारीना वयण सुणी तिहा, डेरे आ[illegible] भपाल॥ मा[illegible]विजयजी भाषी ढ

हकती, तीसमी ढाल रसाल॥ हि० ॥१७॥

दुहा ॥ मानवती वसुनाथने, विदा करीने ताम॥ वस्त्रादिक फिरी वीणमें, संगोप्या अभिराम ॥ १ ॥ थई अवधूतण फेरिने, भस्म चढावी अंग ॥ २ ॥ कोई वाटे पेहेली गइ, आवी बीजी वाट॥ योगण दिठी आवती, अति हरण्यो नृपराट ॥३॥ बेसाडी सिंहासने, भगति युगति बहु किध ॥ संतोषी अशनादिके, गीत गानरस पीध ॥ ४ ॥ नृपति विचारे चित्तमां, हजि यन आवी नार ॥ केसुं वनदेवी हती, गइ मुझने विप्रतार ॥ ५ ॥ के ठगणि कोइ ठगिगई, इस्यो थयो प्रकार ॥ मुखमां आव्यो कोलीयो, गयो हिवे किस्यो विचार॥ ॥ ६ ॥ जोए योगण जाणशे, तो होसे निस नेह ॥ गइतो आगी जाणदे, गया त

णी शी ईह ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकतीशमी ॥ मानो मानो स ज्जन मुझरो मानो ॥ एदेशी ॥ नृपना म नमा खेचरीरे ॥ सूरिजन ॥ खटके थइने सा ल ॥ कामनी धूतारी ॥ भोलेवे सुरनरको डी ॥ माननी मतवारी ॥ माने नृप इंद्रजा लनोरे ॥ सू० ॥ कोइक थइ गयो ख्याल॥ का० ॥ १ ॥ पिण नृप नकहे कोयनेरे ॥ सू० ॥ रुपभ ग्यो तेवात ॥ मा. ॥ को- ठीमा मुख घालिनेरे ॥ सु ॥ रोवे ज्यु तस्कर मात ॥ का ॥ २ ॥ योगण पि- ण अण जाणतीरे ॥ सू० ॥ थइ वेठी नृ पपास ॥ मा ॥ एक एकथी राखे छुपीरे ॥ सू ॥ वातडली सुविलास ॥ का० ॥ ३ ॥ हेग उपाड्या मनहरनीरे ॥ भ ॥ चाल्यो निमहिज मन ॥ मा ॥ निमहा मामण

गोठडीरे ॥ सू० ॥ मांडे पती उज्जेण ॥ का०
॥ ४ ॥ अनुक्रमें आव्या चालतारे ॥ सू० ॥
मुंगी पट्टण तिणीवार ॥ का० ॥ सामिण क
हे महारायनेरे ॥ सू० ॥ सुण एक मेरा वि
चार ॥ का० ॥ ५ ॥ में योगी तें भोगियारे
॥ सू० ॥ चहेरावरे कुछ लोग ॥ मा० ॥ तेरे
संगें सहेरमेरे ॥ सू० ॥ केसें आवनका योग
॥ का० ॥ ६ ॥ में रहुंगी इण वागमेंरे ॥ सू० ॥
तुंजा नगर मझार ॥ मा० ॥ योगी सोही
जाणियेरे ॥ सू० ॥ राखे लोकाचार ॥ का० ॥
॥ ७ ॥ व्याहके रतनवती त्रियारे ॥ सू० ॥ तूं
इत आए वेग ॥ मा० ॥ राखे जैसाहै तिसा
रे ॥ सू० ॥ तेरे मेरे नेग ॥ का० ॥ ८ ॥ फेर उ
ज्जेणि आउंगीरे ॥ सू० ॥ रे नृप तेरे संग ॥
॥ मा० ॥ योगणनी वाणी सुणीरे ॥ सू० ॥ पा
म्यो भूपति रंग ॥ का० ॥ ९ ॥ योगणा गलि

ते वाडीयेंरे ॥ सू ॥ नृप आयो पुरमाहि ॥
॥ मा० ॥ दलथभण पिण सामुह्योरे ॥ सू० ॥
आव्यो धरि उछाहि ॥ का० ॥ १० ॥ मान-
तुग अतिहेजसुरे ॥ सू० ॥ पुरमें कीध प्रवे
श ॥ मा ॥ दीधा उतारो महेलमारे ॥ सू० ॥
उतरयो दल सुविशेष ॥ का० ॥ ११ ॥
मानतुग मही पालनेरे ॥ सू ॥ दलथंभण
करे सेव ॥ मा ॥ भोजन भगति भली क-
रीरे ॥ सू ॥ माने करीने देव ॥ का ॥ १२ ॥
रतनवतीने परणवारे ॥ सू० ॥ सुदर महुरत
लीध ॥ मा ॥ दक्षिणपति पुत्रीतणारे ॥ सू०
मनह मनोरथ सिद्ध ॥ का० ॥ १३ ॥ रतनव
ती गिणे माहरोरे ॥ सू ॥ सफल थशे अव
तार ॥ मा ॥ परणशे मुझने चोरियेंरे ॥ सू० ॥
मालवपती सिरदार ॥ का० ॥ १४ ॥ योगण
नी जोजो कलारे ॥ सू ॥ करशे खेल रसा

ल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें वरणवीरे ॥सू० ॥ए एकत्रीशमी ढाल ॥ का० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ योगणवेश उतारीने, पेहेरयो अदभुत वेश ॥ वीण छपावी बागमां, आवी नयर निवेश ॥ १ ॥ रतनवती पासे गइ, मिलो घणे मनोहार ॥ रतनवती जाणे हिये, ए कुण सुंदरनार ॥ २ ॥ पूछे आव्या किहां थकी, कवण तुमारो नाम ॥ मानतुंगराजा तणो, हुंछुं वडारण भाम ॥ ३ ॥ आवी उझेणी थकी, मानवती मुझ नाम॥रूपें अमो तुमसारखी, नवि निरखी कोय वाम ॥ ४ ॥ मुझने भूपें मुकी अछे, तुमने जोवा काज ॥ तेमाटे आवी अछुं, तुज मंदिरमां आज ॥५॥

॥ ढाल बत्तीशमी ॥ चित्रोडा राणारे ॥ एदेशी ॥ दलथंभण कन्यारे, हरषे थइ धन्यारे, मानवती सम अन्या नेणों निरखी न

नदे भरिया नृपे नारी वरीरे ॥ ९ ॥ मान
तुग महीधरियारे, पुरुषें परवरियोरे ॥ आ
वीने उतारियो डेरे मूलगेरे ॥ रयणी थई जा
णीरे, पुत्रीभणी राणारे, सुणोरे सयाणी
मूके ऊमगेरे ॥ १० ॥ मानवती तव बोली
रे, कपटालय खोलीरे, राणी अहो भोली
सुण मुझ वीनतीरे ॥ कुल देवी अमारीरे,
छे अतिहि अढारिरे, विलससे नही नारी अ
म नृपते वतीरे॥ ११॥उज्जेणी जाई, कुलदेवी
मनाईरे, रतनवती चित्त लाई विलससे तदा
रे॥सवि भेदहु लहुछुरे,तेमाटे कहुछुरे,नृपभे
ली रहुछु तिणे जाणु सदारे ॥ १२ ॥ खो
टु नकहु छुरे, मत मानजो उछरे, कहोतो
जइ पूछु मारा रायनेरे ॥ छत्तीसमी ढालें-
रे कहि मगल मालेरे मोहनें सुविशालें
कठे गाइनेरे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ राणी मानवतीभणी, कहे जई पूछो राय ॥ जेहवी दीये आगना, तेहवी सूंपो आय॥१॥मानवती ऊठी तदा, भूषण सजी विशाल ॥ लेई चाली हाथमें, भरि कंसारे थाल ॥२ ॥ मानवती रमझमकती, आवी प्रीतम पास ॥ पीउडेतो नवि उलखी, अहो अहो दंभविलास ॥ ३ ॥ प्रणिपति करी उभीरही, आगल मूकी थाल ॥ मानतुंग मधुरे स्वरें, बोल्यो तास निहाल ॥ ४ ॥ कहे कुण तूंछे कामिनी, किम आवी भरराते ॥ भरि कंसारे थालिका, शीछे कहो मुझ वात ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेंतीशमी ॥ नांह्नानो नांहलोरे ॥ एदेशी॥ बोली मानवती सतीरे, करी घूंघटपट लाज॥राजन सांभलोरे॥गुरुणीछुं रत्नवती तणीरे, मानवती मुझ नाम॥ रा० ॥ १ ॥ कं

हीरे ॥ जननीने जणावीरे, वातडली बना वीरे, आपणने घर आवी वडारण गहगहीरे ॥ १ ॥ तस रूप सरिखुरे, हुतो नवि परखुरे, कहोतो आकरपु तुमपें अदिरेरे ॥ जननी कहे जावोरें, इहा तास बोलावोरे, किसिवार मत लावो तेडा मदिरेरे ॥ २ ॥ रतनवती लेइ चेडीरे, फिरी आवी नेडीरे॥ वडारण नेडी माताने मेलवीरे, कहो पुत्री ये जेहवीरे॥ द्रगें दीठी तेहवीरे, मानवती ये कला केहवी केलवीरे ॥ ३ ॥ नित वेस बनावेरे, गुण आप जणावेरे, गाई गीत सुणावे सहुनें वश करेरे ॥ हिल मिल सवि सगरे चरिताळी मचगेरे, हिवे जोजो रंग नृप रनिता वरर ॥ ४ ॥ दलथभण राजारे वजडाव वाजार ॥ ताजा अतिसाजा ढेग वाजियार, चागी रची सारीरे॥ मुहर

त निरधारीरे, उत्सव कस्या भारी सुरभि सुगंधियारे ॥ ५ ॥ कन्या सिणगारीरे, पहिस्या जरतारीरे ॥ मोतिओमें समारीरतन वती भणीरे, सरणाइ वाजेरे ॥ नटनाटिक साजेरे. गुंजाला धाजे गाजे मृदंग विधं घणारे ॥ ६ ॥ वनिता मिली वादेरे, कौतुक ने उमादेरे ॥ मानवती शुभसादें गाए सोहलारे, वडारण करी थाणेरे ॥ कोइ भेदन जाणेरे, सहु कोइ वखाणो लोक भली भलीरे ॥ ७ ॥ मानतुंग महीशेरे, सजी जान विशेषेरे, निसाणे नरेशे पडति ठोरियेंरे ॥ रतनवती करी संगेरे. जोरावर जंगेरे, आवी बिहु रंगे बेठां चोरियेंरे ॥ ८ ॥ मानवती थइ माझीरे, करे हलफल झाझीरे, सहुकोने मन वाझी वडारणतो खरीरे ॥ वरकन्या वरि[illegible], चिहुं फेरा फारियारे,

नदे भग्गिया नृपे नारी वरीरे ॥ ९ ॥ मान तुग महीधरियारे, पुरुषे परवरियोरे ॥ आ वीने उतरियो डेरे मूलगेरे ॥ रयणी थई जाणीरे, पुत्रीभणी राणीरे, सुणोरे सयाणी मूके ऊमगेरे ॥ १० ॥ मानवती तव बोली रे, कपटालय खोलीरे, राणी अहो भोली सुण मुझ वीनतीरे ॥ कुल देवी अमारीरे, छे अतिहि अढारिरे, विलससे नही नारी अम नृपते वतीगे॥११॥उज्जेणी जाई, कुलदेवी मनाईरे, रतनवती चित्त लाई विलससे तदा रे॥मांव भेदहु लहतुरे तेमाटे कहुछुरे,नृपभेली रहतु तिणे जाणु सदारे ॥ १२ ॥ खोटु नकहु छुरे, मत मानजो उछरे, कहोतो जड पडु मारा रायनर ॥ छत्तीसमी ढालें-रे कहि मगल मालर माहने सुविशालें कठे गाइनेरे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ राणी मानवतीभणी, कहे जई पूछो राय ॥ जेहवी दीये आगना, तेहवी सूंपो आय॥१॥मानवती ऊठी तदा. भूषण सजी विशाल ॥ लेई चाली हाथमें, भरि कंसारे थाल ॥२ ॥ मानवती रमझमकती, आवी प्रीतम पास ॥ पीउडेतो नवि उलखी, अहो अहो दंभविलास ॥ ३ ॥ प्रणिपति करी उभीरही, आगल मूकी थाल ॥ मानतुंग मधुरे स्वरें, बोल्यो तास निहाल ॥ ४ ॥ कहे कुण तूंछे कामिनी, किम आवी भरराति ॥ भरि कंसारे थालिका, शीछे कहो मुझ वात ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेंतीशमी ॥ नांह्लानो नांहलोरे ॥ एदेशी॥ बोली मानवती सतीरे, करी घूंघटपट लाज॥राजन सांभलोरे॥गुरुणीछुं रत्नवती तणीरे, मानवती मुझ नाम ॥ रा० ॥ १ ॥ कं

सारजे लावी अछुरे, तेहनो निसुणो विवे
क॥ रा ॥ अम घर एहवी रीतछेरे, अति
हि अपूरव एक॥ रा ॥ २॥ जे अम नृपनी
पुत्रिकारे, परणे जोकोई वसुधार ॥ रा ॥
तेतो पठो माहरोरे चाखे एह कसार ॥
॥ ३ ॥ चाखो एह कसारनेरे, होमे कोड क
ल्याण ॥ रा ॥ नहीतो वरकन्या भणीरे, उ
पजे कोई विन्नाण॥ रा ॥ ४॥ जो सुख वा
छो राजनेरे तो जिमो झुटु एह॥ रा ॥
भामाये भोलव्यो भर्त्तनेरे, नारी कपटनो
गेह॥ रा ॥ ५॥ नप जाण्यु साचु कह्युरे,
एतो सुन्दर नार॥ रा ॥ रीन हस हद्दा ए
हवीरे, तोग करीय प्रचार॥ रा ॥ ६॥ क
हे नृप पठाने लाउर जिम चाखु कसार॥
॥ रा ॥ नण दाउ उठ करीर, नकरघो
कोइ विचार॥ रा ॥ ७॥ नर जागग्यो को

लियोरे, करिने तेह कंसार ॥ रा० ॥ नृप
सुं करे केहने कहेरे, धूर्त निजघर नार ॥
॥ ८ ॥ आचमन जलथी करीरे, बोल्यो भू
प तेवार ॥ रा० ॥ वलि जेंविध होयते कहो
रे, करियें सयल आचार ॥ रा० ॥ ९ ॥ पिण
मुझ किम परणी त्रियारे ॥ हजिय नआवी
आवास ॥ रा० ॥ किम तेडी नाव्यां तुम्हेरे,
कारण स्योछे तास ॥ रा० ॥ १० ॥ मानव
ती बोली तदारे, सुणो उज्जेणाधीस ॥ रा० ॥
मिलशे षटमासें पछेरे, सा तुम विश्वावी
स ॥ रा० ॥ ११ ॥ गुरुगोत्रज पुज्या नथीरे,
पुजतां होए छमास ॥ रा० ॥ तुमने चालवा
नही दीयेरे, राखसे एह आवास ॥ रा० ॥
॥ १२ ॥ मत ए कोईने जणावजोरे, समझी
रहेजो चित्त ॥ रा० ॥ वातडी करवा तु
सथकीरे, इहां हुं आवीश नित्त ॥ रा० ॥ १३ ॥

धूतीने एम भूपनेरे, आवी राणी पास ॥ रा ॥ कहे नृप कोई व्रत माढियोरे, रहे- शे इहा छमास ॥ रा० ॥ १४ ॥ त्यार पिछे तुम पुत्रीनेरे, विलससे नइ उक्षेण॥रा०॥ कोईने कहेता रखेरे, छानी वातछे तेण ॥ ॥ रा ॥ १५ ॥ पट मासनो इयो आसरोरे, दिनजाता सीवार ॥ रा० ॥ राणीयें सहु जा ण्यु खरुरे, जूठन बोले ए नार ॥ रा० ॥ ॥ १६ ॥ बाजीगरीना गोटकारे, केहवा र माढेछे वाल ॥ रा ॥ मोहनविजयें वरण- वीरे, रूडी नेत्रीसमी ढाल ॥ रा० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मानवती बीजी रयण, आवी प्रीतमपास ॥ नृप त्रिय गुरुणी जाणीने, आदर दीधो तास ॥ १ ॥ जोवे वक्रकटा क्ष भरी सा टाली अदोह ॥ आकृति दें- खी तहना नृप पाम्या व्यामोह ॥ २ ॥

मूर्छांगत राजा थयो, व्याप्यो विषय वि-
कार॥तिम तिम सा दाखे घणा, हावभा
व अधिकार ॥ ३ ॥ नृपें लटपट मांडी घ
णी, विलसवातें नार॥पिण नवि जाणे रा
जवी, जे इणें कीध प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोतीशमी ॥ मेंदीरंग लागो॥
एदेशी ॥ नृप कहे मानवतीभणीरे लाल,
हुं रंज्यो तुझ देख ॥ विषयी वसुधाता ॥
तुं पिण करुणा नेहथीरे लाल॰ हसि करी
साहमुं पेख ॥ वि० ॥ १ ॥ वाणी सुणी इ
म रायनीरे लाल, मानवती कहे ताम ॥
वि० ॥ रे मालवपति मुझनेरे लाल, वचन
कहो कां आम ॥ वि० ॥२॥ रतनवती प
रणी त्रियारे लाल, परणे नपोहोती आस
॥वि॰ ॥ जे मुझनें प्रार्थो अछोरे लाल,धि
ग धिग मदन विलास ॥ वि॰ ॥३॥ वाह

र जोईये जिहा थकीरे लाल, तिहाथी क्यु आवे धाड ॥ वि० ॥ मूकी द्यो भोंलामणीरे लाल, रहेवा द्यो एलाड ॥ वि० ॥ ४ ॥ परणी घरणी नेहुवेरे लाल, तेहने कहियें एम ॥ वि० ॥ परनारीने एहवीरे लाल,वा तो कहियें केम ॥ वि० ॥ ५ ॥ इम निश्र ञ्छी शयनेरे लाल, कहिने कडुवा वेण ॥ वि० ॥ तो पिण मानवती थकीरे लाल, चोरे नही नृप नेण ॥ वि० ॥ ६ ॥ कामा तुर हुउ घणुरे लाल, फिरफिर चाहो स-ग ॥ वि० ॥ मानवती तव कतनेरे ला-ल भाषे वरी उच्छरग ॥ वि० ॥ ७ ॥ अहो अहो प्यड आकलारे लाल, किम हवाछो महाराज ॥ वि० ॥ हु दासी राउ-लीर लाल जाति नही काइ भाज ॥ वि०॥ ॥ ८ ॥ वचन सुणी वनितातणार लाल, ह

रण्यो तव मही पाल ॥ वि० ॥ कामविषयं सुख भोगव्यांरे लाल, थई उच्छुक उजमा ल ॥ वि० ॥ ९ ॥ इम अनुदिन सुख भोगवे रे लाल, मानवतीथी राय ॥ वि० ॥ गर्भ ध र्यो तव अनुक्रमेंरे लाल, पूरवपुण्य पसा य ॥ वि० ॥ १० ॥ एक दिन मानवती कहेरे लाल, सांभल प्राणाधार ॥ वि० ॥ गर्भ ध- र्योमें ताहरोरे लाल, स्यो तस करवो उ पाय ॥ वि० ॥ ११ ॥ पूत्रजनम थासे जिसेरे लाल, त्यारें तुमे महाराय ॥ वि० ॥ उज्जेणी भणी चालसोरे लाल, मुझने अत्र विहाय ॥ वि० ॥ १२ ॥ अंगजने केणी परेरे लाल, पालीस हुं कहो नाद ॥ वि० ॥ केम सहिस हुं अहोनिसेरे लाल, लोकमांहि अपवाद ॥ वि० ॥ १३ ॥ थानारोतो थयोहिवेरे लाल, सोच कर्यासुं होय ॥ वि० ॥ तेमाटे मुझने

तुमेरे लाल, दियो सहिनाणी कोय॥ वि ॥
॥ १४ ॥ जिम तुम अगज उलखोरे लाल,
आवे तुमारे पास॥ वि० ॥ ते कारण मागु
अछुंरे लाल, सहिनार्णी सुविलास ॥ वि ॥
॥ १५ ॥ वचन सुणी वनितातणारे लाल,
दिये सहिनाणी सार॥ वि ॥ निजनामाकि
त मुद्रडीरे लाल, वलि मुगताफलहार ॥
॥ १६ ॥ वेहु सहिनाणी लेइनेरे लाल, सा
हरषी मनमांहि ॥ वि ॥ ढाल कही चोत्रीस
मीरे लाल, मोहनविजयें उछाहि॥वि ॥१७॥

दुहा ॥ हारउदारने मुद्रडी, कवज करी
ने ताम ॥ ऊठी मानवती तदा, पियुने क-
री प्रणाम ॥ १ ॥ कहोतो जई आवु प्रभु,
रतनवतीने पास॥ हमणा पाछी फिरी तुर
त, आवीस इणें आवास ॥ २ ॥ नृपति भे
द जाणे नही, दीधीं शीख तिवार ॥ मान

वती पिण पाय नमी, आवी मंदिरबार ॥
॥ ३ ॥ ताराभर रयणी समे, आवी बागम
झार ॥ वेष उतारी वोणमे, संगोप्यो ति-
णिवार ॥ ४ ॥ योगणवेश फिरी सज्यो, चिं
ते चित्तमझार ॥ बोल सुबोल थयो माहरो,
धूत्यो प्राणआधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पेंतीशमी ॥ मुरलीनी देशी ॥ हि
वे पीउ पहेली पाधरी, जाऊं नगरी उज्जे
ण ॥ इहां रहेश्यो फायदो, पोहोचुं तात
पएण ॥ नारी धूतारी कहियें, पीयुने की-
धो पाधरो नेत्र ॥ त्रियाथी अलगा रहियें॥
॥ १ ॥ मातपिता तिहां माहरां, जोतां हो-
से वाट ॥ झंखर झुरी थयां हसे, माहरो
करिय उचाट ॥ ना० ॥ २ ॥ काम सरेन वि
लंबिये, डाह्यां एहिज काम ॥ मानवती वी
णा लेई, रयणियें चाली ताम ॥ ना० ॥ ३॥

एकाकी निर्भय थकी, कठिन करीने मन्न॥ इम अनुक्रमें दिन केटले, आवी तेणे वन्न ॥ना ॥४॥ तेणे सरोवरे ऊभी रही, जि हा पीयू कियो वृषभ स्वरूप॥ना०॥ तेपि ण दीठो जायगा॥ वलि आगल चाली चू प॥ ना०॥५॥ वोली विपमी वाटडी, आ वी मालवदेश॥ ना ॥ दिन केते निजनय रमा, आवी कीध प्रवेश॥ ना०॥६॥ मा- तपिताने जई मिली, कोइन जाणे जेम॥ ॥ना ॥ पाम्या हर्ष सहु रंजता, हेजन होवे केम॥ ना ॥७॥ वल्लभ जे विछड्या हुवे, तस फिरी मेलो होय॥ ना ॥ ते सु ख जाणे केवली, केजाणे दिल दोय ॥ना० ॥८॥ मातपिता आगल कही, पीयु धूर्यो ते वात॥ ना ॥ माभलीनें सहको हस्या, पुत्रीनो अवदात॥ ना ॥९॥ वेश योगण

नो परहरी, आदरयो मूलगो वेश ॥ ना० ॥ अन्नादिक आरोगियां, हर्ष धरी सुविशेष ॥ ना० ॥ १० ॥ रातें सुरंगे होइने, गइ एक थंभे आवास ॥ ना० ॥ पोहोरायतनें जगाडिया, वातो करे सुविलास ॥ ना० ॥ ११ ॥ या सिकक्कहेंदिनएटला, जगव्यो महि अम केम ॥ ना० ॥ सुं कांइ पोढी रह्यांहतां, तव साबोली एम ॥ ना० ॥ १२ ॥ मौनव्रत आदरयो हतो ॥ वीरा एतादीह ॥ ना० ॥ तेव्रत आज पुरोथयो, तारे खोली जीह ॥ ना० ॥ ॥ १३ ॥ इम करतां पगडो थयो, साचव्यो ग्रही अचार ॥ ना० ॥ आंबिल तप मांड्यो फिरी, पाले समकितसार ॥ ना० ॥ १४ ॥ निज वालमने धूतता, जेकांइ लागो पाप ॥ ना० ॥ १५ ॥ मन वच काया शुद्धथी, आलोचते आप ॥ प्रतिक्रमणा बिहुं टंकना,

करे अहनिश मन शुद्ध ॥ ना ॥ जेहीवे भ वि प्राणियो, तेहने हुवे प्रबुद्ध ॥ ना ॥१६॥ जिनधर्मना महिमायकी, पामे मगलमाळ ॥ ना ॥ मोहनविजयें वर्णवी, ये पेंत्रीशमी ढाल ॥ ना ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मानतुग हिवे गुरुणिनी, जोवे अहनिश वाट ॥ चिंते किम नथी आवती, गर्भ धरया पछि माट ॥ १ ॥ नृपतो ति हा रह्यो झुलतो, एतो आवी गेह ॥ हिवें सहु कोइ साभलो, निपट घरीने नेह ॥२॥ मानवर्ती यामिकभणी, कहे निसुणो एक वात ॥ अत पुरमा जइकहो, मुझ गर्भत-णो अवदात ॥ ३ ॥ यामिक चमक्या सा भली, गभधरयो इणे केम ॥ पुरुषप्रवेश नहीं इहा, तोका बोल एम ॥ ४ ॥ जिम म च्छी जलथी थइ गिरथी जिम हरिनार ॥

तिमसुं एहने पिण गरभ, थयो हसे निरधार ॥ ५ ॥ पोहोरायत दोड्या थका, आव्यां पुर दरबार ॥ नृप पटराणी आगले, कह्यो गर्भ अधिकार ॥ ६ ॥ तालीदेई सहुको हसी, निसुणी कौतुक एह ॥ पिउविण गर्भएं किम धर्यो, रहि एकथंभे गेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल छतीशमी ॥ बिंदलीनी देशी ॥

सोले नरपति नारी, तेणे मिलीने बुद्धि विचारीहो ॥ धणधणनी हूंषी ॥ पियुने पत्र लिखीजे, इण कामे ढीलन कीजेहो ॥ ध० ॥ १ ॥ कागल लिखवासारु, पटराणी बेठीतेवारुहो ॥ ध० ॥ कुशलक्षेम परिपाटी, लिखि करीने लिपि करणाटीहो ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ अपरंच समाचार एक, तुमे प्रिछजो पीउ सुविवेकहो ॥ ध० ॥ तुमे दक्षिण देशे मोह्या, रही रतनवती संगसोह्याहो॥

ध० ॥ ३ ॥ पिण घरनी खवरनथीलेता, कोइ साथे शुद्धनथी केताहो ॥ ध० ॥ तेवा रु नथी करता, परदेशें रहोछो फिरताहो ॥ ध० ॥ ४ ॥ वेहेला वलजो कता, रखे र हो तिहा थई निचिंताहो ॥ ध० ॥ मानव ती तुम त्रीअछे, तेतो आपभ ससत्वा हु ईन्छेहो ॥ ध० ॥ ५ ॥ वेंचजो तेहनी वधा- इ, खोटु मतमानजो काइहो ॥ ध० ॥ य- ढी अमने खबरपठाइ, अमे वेंची पान मि ठाईहो ॥ ध० ॥ ६ ॥ जेहनी होये अतिहीं पण्याइ, तमघर हुये येहवी वाईहो॥ ध०॥ पियुविण पत्र जेआवे येहवी नारी कुण पा मेहा ॥ ध० ॥ ७॥ तमघर ये त्रिय राजे, करे पटराणीना छाजेहो ॥ ध० ॥ देवी हो य तेहनी पातरी तम पाहाच तहवीहो॥ ध० ॥ ८ ॥ तम तिहा मगनथईमने प्रे

सदा इहां बालिक प्रसवेहो ॥ ध० ॥ तो परे शानेआवो, जव वेहु लाभ कमावोहो ॥ ध० ॥ ९ ॥ सीमंत उपर वहेला, आवजो मतथाजो गहेलाहो ॥ ध० ॥ लेख लिखीने सीधो, कर प्रेक्षने वाली दीधोहो ॥ ध० ॥ १० ॥ पत्रये नृपकर देजे, मुख वचनें प्राणिपति कहेजेहो ॥ ध० ॥ चाल्योते कागल लेइ, हरषे हिवे नारी सवेइहो ॥ ध० ॥ ११ ॥ माहोमांहेकरे वातो, सहु बेठी दिवसने रातोहो ॥ ध० ॥ आपण जोतांये हिलसे, पियु मानवतीने मिलसेहो ॥ ध० ॥ ॥ १२ ॥ पिणआपण वडवखती, थइ आपणा मननी रुखतीहो ॥ ध० ॥ कागल वांचसे प्यारो, तव रहेसे येहथी न्यारोहो ॥ ध० ॥ ॥ १३ ॥ विरुइ सोक्य सगाई, जोतीरहे छिद्र सदाइहो ॥ ध० ॥ सोक्य सुलीथी भुंडी,

सोक्य खटके भाली उडीहो॥ध०॥१४॥
ते नरने दुख भारी, होये जस मदिर वे-
नारीहो॥ध ॥दत कलहे दिन जाये, येक
येकथी वढवा धायेहो॥ध ॥ १५ ॥ मुडो
वोलेने विखोडे, सामोसामा कटका मोडे-
हो॥ध०॥नारीकहे दीन होइने, प्रभु शोक्य
मदेजो कोइनेहो॥ध०॥१६॥नामे वहिन
कहिजे, पिण वेरण थइने छिजेहो॥ध०॥
ढाल मोहनें कही हरषी, पटत्रिशमी सा-
कर सरिखीहो ॥ ध० ॥ १७ ॥

दुहा॥ पोहोतो प्रेष्य अनुक्रमे, मानतुं
ग नृपपास ॥ करी प्रणाम कागल तुरत,
दीधो धरि उल्लास॥१॥वान्यो कागल खो
लने प्रिछ्यो सत्रिविरतत॥मानवतीकेरी
कथा, वाचत चमक्या चित॥२॥युवतीये
एशी लिखी, मानवतीनी वात॥ संतो मा

नवती घरे, यंत्र जड्याछे सात ॥ ३ ॥ तो कौतुक वातडी, एकिम मानीजाय ॥ किण हिक शोकें वेधथी, होसे लिख्यो बनाय ॥ ॥ ४ ॥ जिहां कीडी नविसंचरे, जिहां नही पवन प्रगल्भ ॥ तेहवे गेहरह्ये थके, गोरी किमधरे गर्भ ॥ ५ ॥ एहवे वलि बीजो ति- मज, कागल आव्यो जत्त ॥ मानवतीनी वा ततव, चोकस बेठी चित्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल सदतीशमी ॥ नृपती विचारेहो लाल, एसवि साचुं राज ॥ कागल कूडोरे राणीमांने नालिखे ॥ १ ॥ मेंतो एनारीहोला ल,असती नजाणी राज ॥ खीचडी वखाणीरे एतोलागी दांतडे ॥ २ ॥ धिगधिग एहनेहो लाल, एहसुं कीधुं राज ॥ कीधुं इणेंरे लोकमांहे लजामणुं ॥ ३ ॥ फिट कुलहाणीहोलाल, ला जन आवी राज ॥ ते नवि जाण्युंरे मुंडो

छानो नारहे ॥ ४ ॥ वली नृप जाणेहोलाल, ग्राकन एहनो राज ॥ वाकये माहारोरे ना-री मूकी येकली ॥ ५ ॥ योवन आवेहोलाल, विरह जगावे राज ॥ रहे केम नारीरे मोहे लें येहवें येकली ॥ ६ ॥ हु पिण इहाथीहो-लाल, सीपरे चालु राज ॥ हजियन परणेरे हुया महिना पट थया ॥ ७ ॥ गोत्रज पूज्या होलाल, विण पटमासें राज ॥ दक्षिण रा जारे मूने नदिये सीखडी ॥ ८ ॥ सीपरें की जेंहोलल, नृप नदेजावा राज ॥ मदिरे ये हवारे नारीकेरा सूलडा ॥ ९ ॥ मुखे करी ग्रा सीहोलाल, अहियें छुलुदरी राज ॥ तेहने न्यायेंरे राजा सांचे सोचना ॥ १० ॥ काग ल पाछोहोलाल, नृपें लिखि दीधो राज ॥ चाल्यो सीधोरे लेई प्रेष्य उतावलो ॥ ११ ॥ अवती आवीहोलाल, राणीने कागल राज ॥

॥ आगल दीधोरे जईने भाखी वातडी ॥ ॥ १२ ॥ राणीउं रंजीहोलाल, कागल वांची राज ॥ पिउडो वहेलोरे हिवे घरे आवसे ॥ १३ ॥ सोकडलीने साहीहोलाल, पिउडो बांधसे राज ॥ कूटसे गाढीरे घोडाके रे चाबखे ॥ १४ ॥ आपणे हससुंहोलाल, देईदेई ताली राज ॥ इमकरे नारीरे खुण वेठी वातडी ॥ १५ ॥ एहवे महिनाहोलाल, पटथया जाणी राज ॥ मानतुंग राजारे दक्षिणसायने वीनवे ॥ १६ ॥ हिवेतो गोत्रजहोलाल, रह्या हसो पूजी राज ॥ तेमाटे आपोरे हिवे मुने सीखडी ॥ १७ ॥ सुसरो भाखेहोलाल, गोत्रजे केही राज ॥ पूजवुंछे केहनेरे येतो आज मैं सांभल्युं ॥ १८ ॥ साहमुं तुमारेहोलाल, जईने उज्जेणी राजे ॥ पूजवीछे गोत्रजरे छटे मासे साहिबा ॥ १९ ॥

अमेतो सु जाणहोलाल, तुम घर वातो राज॥राउली वडारणरे आवी माने कही गई॥२०॥ ढीलतो अमारीहोलाल, कोई नथी जाणो राज॥ढील तुमारीरे हूती ए ता दींहनी॥२१॥मानतुग राजाहोलाल, सुसराने जपे राज॥गोत्रज कोइरे अमारे नथी पूजवी॥२२॥गुरणी तुमारीहोलाल, परण्या तिणे दिन राज॥एठु खवाडीरे मु ने एहवु कहि गइ॥२३॥छटे महीनेहो-लाल, घरणी मिलसे राज॥सुसरो इहा-थीरे थाने जावा नही दीए॥२॥तेहना क ह्यार्थी होलाल, इहा अमे रहिया राज॥मा हरे वडारणरे मगे आणीको नथी॥२५॥ दलथभण राजाहोलाल, जमाईने जपे रा ज॥गुरुणी अमारीरे इवी कोइछे नही॥ ॥२६॥ तुमने अमनहालाल, कोइगइ धू

ती राज ॥ ढाल साडत्रीसमीरे सारी भा॰
खी मोहनें ॥ २७ ॥

दुहा ॥ सभा सहू खडखडहसी, बिहु नृ
पनी सुणिवात ॥ सहुको कहे कोइ धूतणी,
धूती गइ करिघात ॥ १ ॥ मानतुंग राजा
हिवे, मागी शीख तिवार ॥ दलथंभण नि
ज पुत्रिने, संप्रेडे सुविचार ॥ २ ॥ दीधो ब
हुलो दायजो, हयगयरथ धन कोडी ॥ पु
त्रीयें निज मातथी, करी शीख करजोडी
॥ ३ ॥ रतनवती उज्येणपति, चाल्यो लेई
शीख ॥ बंदी जन कहे जोडए, रहेजो को
डी वरीष ॥ ४ ॥ दलथंभण नृप पुत्रीने, सं
प्रेडी वलियांह ॥ मानतुंग नृपनारिले, मा
लवदेस खडियांह ॥ ५ ॥ जवते वाडी आग
ले. नीसरीउ भूपत ॥ तदा सुरंगी योगणी,
चढी नृपतिने चित्त ॥ ६ ॥ योगण जोई बा

गमा, नरपति आपोआप ॥ पिण क्यांही ढोठी नहो, तव करे भूप विलाप ॥ ७ ॥

॥ ढाल अडतीशमी ॥ चादलिया सदेसोरे कहेजे मारा कतनेरे ॥ एदेशी ॥ किहारे गुणवती मारी गोगणीरे, गई मुझने ईहा छोडरे ॥ कोईछे उपगारी वाल्हो साझनोरे, मुझने मेलवे दोडरे ॥ किहा० ॥ १ ॥ नेहडलो करीने छेह देईगईरे, ए दु ख केम खमायरे ॥ वाहलानो विछोहा अधक्षणमात्रनोरे, धीरपणे नसहायरे ॥ कि० ॥ २ ॥ छानीउपाने रहीहोय जिहारे, तो देदरिसण आयरे ॥ वीणाना झणकारा तारा सामरेरे, तुझ विरहो नसहायरे ॥ कि ॥ ३ ॥ इणेवाटडिये तुझ थकी वातडोरे, करतो हु आव्यो एमरे ॥ तिणहीज वाटडिये तुझ विण चालनारे, सागलमे केमगे ॥ कि ॥ ४ ॥ ता

शीतो हुं करतो अहनिश चाकरीरे, लोपं॰ तो नही तुझ काररे ॥ हाथनी हाथेलीपर राखतोरे, दुहवतो नहिकोई वाररे॥ कि॰॥ ॥५॥ तो किम एहवुं तुझने ऊकल्युंरे, जे गई देई छेहरे ॥ उडी तुं मननी मिलति गइ नहीरे, प्रीछ्यो ताहरो नेहरे ॥ कि॰ ॥ ॥६॥ वाडीमां वसुधाता पूछे रुंखनेरे, सामिणि दीठी केणरे ॥ वाटलडी वतावो जिहां तेगई हुवेरे, इमकहे नृप उझेणरे ॥ ॥ कि॰ ॥ १७॥ ज्यारेते डोले पवनथी रुंख डारेत्यारे जाणे भूपालरे ॥ कहेछे शिरधुणी अमें दीठी नहीरे, अहोअहो विरह जजालरे ॥ कि॰ ॥ ८ ॥ केकीने पूछे तिमहिज भूधणीरे, किहां किहां बोले वाणरे ॥ राजा तवजाणे एकहे रीसथीरे, किहांछे योगण इण ठाणरे ॥ कि॰ ॥ वाडीमांहे फिरतो ग-

जा वियोगियोरे, सुभट करे अरदासरे ॥ स्वामीशी चिंताकरो एवडीरे, गाठथी नगयोछे ग्रासरे ॥ १० ॥ योगणीयें जो त्रोडी तुमथी प्रीतडीरे, तो जावाद्यो तासरे ॥ पायडीउ वहोतेरी मिलसे आयनेरे, सिरजो छो काइ इम खासरे ॥ ११ ॥ आवी केइ मिलसे एवी तुमनेरे, मकरो खोटो विखासरे ॥ विलप्या इहा तुमने आवी नही मिलेरे, चालो ज्यु पोहोचो आवासरे ॥ कि० ॥ १२ ॥ योगणनो स्वामी वाकस्यो काढियेरे, तुमने पिण लागा पटमासरे ॥ पुरमाहें परवरिने शुद्धकरी नहीरे, मिलवो इच्छोछोहिवे तासरे ॥ कि० ॥ १३ ॥ आदरना भूख्या योगी साहिबारे निणआदर रहे केमरे ॥ सुभटें इम दीधी नपने धारणारे, चाल्या आगल तेमरे ॥ कि० ॥ १४ ॥ क्षणक्षणमा समारे

थीगणने सदारे, मानतुंग महीपालरे ॥भा खीए मोहनविथें छेजर्थीरे, ए अडत्रो- समी ढालरे ॥ कि० ॥ १५ ॥

दुहा ॥इम अनुक्रमे चालतां, पाम्या काननतेह ॥ आवीयाद नरेशने, अवछर प रणी जेह ॥ १ ॥ चरणोदक पीधुं जिहां, ते पिण दीठी भूम ॥ सामिण अपछरने विर ह, अवनीपति रह्यो घूम ॥ २ ॥ एहवे आ व्यो दोडतो, दलथंभणनो दूत ॥ लांबी जं घा धरणीनो, आशाधर अवधूत ॥ ३ ॥ मा नतुंग नृपने कहे, तेह दूत तिणवार ॥ मुं गीपट्टन सांमुहा, पाछा फेरो तुपार ॥४॥ नृप कहे दूतभणी इस्युं, पाछा वाले केम॥चोरीने आव्या नथी, कांइ सुसरानुं हेम ॥ ५॥ उंल घी अरधी धरा, वोल्यो विषमो घाट॥कारण कहोतो इहांथकी, पाछी लीजे वाट ॥ ६ ॥

॥ढाल एकोणचालीशमी॥दूतकहे कर जोडिनेर, कारण सुण कहु देव ॥महाराजा॥खद वुरो जगमा अछेहोलाल॥चदेरी नगरी धणीरे, जितशत्रु नामे देव ॥ मा ॥खे० ॥ १ ॥ तेहने रतनवतीभणीरे, विवाहनो कीधो थाप॥मा०॥पिण तेहने देवातणीरे, पाडीन हूती छाप ॥ मा० ॥ खे०॥२॥ रतनवतीये एहवेरे, पण तुम ऊपर कीध॥मा०॥तुमे पिण परण्या आवीनेरे, सकल मनोरथ सिद्ध॥मा०॥खे० ॥ ॥३॥ रतनवती लेइ करीरे चाल्या तुमे जब साम॥मा०॥ तव जितशत्रु भूपतिरे, मेली सेन्या ताम॥मा०॥खेद० ॥ ४ ॥ आव्यो मुगीपट्टणेरे, करवा अतिहि विरोध॥मा० ॥ कहेछे घोते कन्याकारे, नही ना करसु युद्ध॥मा०॥खे०॥५॥ दलथ

भणराजा कनेरे, तेहवो नथी कांइ सेन ॥ मा० ॥ अगिए बांधी सांह्मीरे, भीडे जितशत्रुथी जेण ॥ मा० ॥ ६ ॥ तेमाटे तुमे तेडवारे, मूक्योछुं कारण तेण ॥ मा० ॥ मानतुंगे सवि सांभलीरे, दूतनी वात रसेण ॥ मा० ॥ खे० ॥ ७ ॥ नृप मूछे वल घालिनेरे, भुजबल तोली कृपाण ॥ मा० ॥ सुभटने कीधा सावतारे, पाछा खेड्या केकाण ॥ मा० ॥ खे० ॥ ८ ॥ रतनवती रमणीभणीरे, वोलावी उझेण ॥ मा० ॥ नृप दक्षिणादिश सांमुहोरे, मूक्यो उपाडी सेन ॥ मा० ॥ खे० ॥ ९ ॥ मुंगीपट्टन आवियारे, वेहेता केते दीस ॥ मा० ॥ निसाणे डंका दीयारे, हयवरनी हइ हींस ॥ मा० ॥ खे० ॥ १० ॥ दलथंभण राजा भणीरे, खबरथई तिणवार ॥ मा० ॥ आव्यो उझेणीनो धणीरे, कुमर लेइ परिवा

र॥ मा॰ ॥ खे ॥ ११ ॥ सुसरो जमाइ वि-
हुमिल्यारे, थरक्यो जितशत्रुराय॥ मा॰ ॥
चित चिंते एबिहुं थर्कारे, जीती केम ज-
वाय॥ मा॰ ॥खे॰ ॥ १२ ॥ जो जाउ चदेरी-
येरे, युद्ध कस्याविण दोड॥ मा॰ ॥ तो स-
हुको हासीकरेरे,अने वली भीडु केणे मोड
॥ मा॰ ॥ खे॰ ॥ १३ लिखित हसे ते था
यसेरे क्षत्री वट छोडे कोय ॥ मा॰ ॥मो
ठायी हारघा भलारे, साहमु शोभा होय॥
मा ॥ खे ॥१४ सैन्यलेई हु आवियोरे,
किण मुख जाउ फेर ॥ मा ॥ पाछो फिरे
लाजे पितारे, हमणा करीश बेहु जेर ॥
॥ मा ॥ खे ॥१५ ॥कायर हूआनछूटियेरे,
वेरी वश पडियाह ॥ मा ॥ योगमायाछे-
जो पाधरीरे, वरसतो वाहनी छाह॥ मा ॥
खे ॥ १६ ॥ इम करे बेठो आलोचनारे,

जितशत्रु भुपाल ॥ मा०॥मोहनविजयें कही भलीरे, उगणचालिशमी ढाल॥ मा० ॥ १७॥

दुहा॥ दक्षिणपति उज्जेणपति, एबिहुं एकण पास॥ चंदेरीपति एकलो, भीरन कोई तास॥ १ ॥ फोज मिली तव चिहुं दिसे, कूदे चपलतुरंग॥ पाखरियां तलपो भरे, वनना जेम कुरंग॥ २ ॥ सज्या छत्तीसे आ-युधें, जरदाला झुंझार॥ तंगकसी ताजीतणा, उपरहुवा असवार॥ ३ ॥ बिहुं सेन्या आणियें अडी, पडी नगारेठोर ॥ जाणे गयणे गाजतो, ऊनहियो घनघोर॥ ४ ॥

॥ ढाल चालीश मी ॥ राग सिंधु ॥ सेन बिहुं उलटी आमुही सामुही, गुणियणें राग सिंधु बजाया॥ रजचडी अंबरे अश्व पडतालथी, तरणीना किरणने तेण छा-या॥ १ ॥वडा योधजूटा घटामांहे छूटेपटा,

लटपटा लाल शिरथी लपेटा॥ अटपटा ल टपटा लपटकरता भटा, खटपटा तेह्नवा भे ट भेटा॥ वडा०॥ २॥ ह्राककरी ताकते डा कमाहे ग्रहे, झाक खगवाहीयें राकफेरे॥ ताणीने बाण अरिप्राण उपर दीये; फस मसे धसमसे घालिघेरे॥ वडा०॥ ३॥ धढ हडे धरणिनें नालि पिण गडगडे, अडवडे योध रणमाहि फिरता॥ खडखडे ढाल अ रि तुड केई रडवडे, झडपडे कुतनी आगि खिरता॥ वडा०॥ ४॥ धमधमे धिंग तिहां कायरा कमकमे, चमचमे घाववहे शोण- धारा॥ सुभट सग्राममा विकटयइ आफले विकटभट थाट रोपें अटारा॥ वडा०॥ ५॥ हारिया सुभट जितशत्रु नृप रायना, दत तृणलेइ ऊभा वीचारा॥ रण रह्यो हाथ उ ज्जेणपतिनि तदा, जीतना दीध मोटा न-

गारां ॥ वडा० ॥ ६ ॥ नयरी चंदेरीपति प्राण
ऊगारवा, लेइ निज सैन्य नाठो विचारो॥
मानतुंग महीपने सुसर करजोडी कहे, आ
जनो दीह मुझ गृहे पधारो ॥ वडा० ॥७॥
स्वामी उज्जेणनो सुसरानें आग्रहें, नयर
मां आवी दीधा उतारा ॥ अशन आरोग
या खेद उतारिया, सांसतो कीध मोटा तु
खारा ॥वडा०॥८॥एहवे अवसरे गगन घन
उंनह्यो, चपल चपला घटामांहि चमके ॥
गडडगडडाट करी गाजतो दह दिसें, घड
ड तरु गिरिधरा धडकी धमके॥ वडा० ॥
॥९॥ बांधी कज्जल जिसि जिहां तिहां को
रणी, धोरणी बगतणी शुभ्रभावें ॥ नीर
दादुरमिसें काज बकने चड्या, मानीयें वि
रही नरने बिहावे॥ वडा० ॥ १० ॥ झटक-
री प्रच्छटें विकट घट प्रछटा, प्रगट जल-

धारं प्रगट पपोटा ॥ जाणायें नीर भूपण धरयो धराणियें, तेहना झगमगे रत्न मोटा॥ वडा ॥११॥ क्षणकमांहे करी नीरमयी मेदिनी, विहग पिण नवि उडे नीड छडी ॥पथिके पथकर खेदपण परहरयो, मेह झड एहवो जोर मडी॥ वडा० ॥ १२ ॥ मान तुगे तव मार्ग विपमा लिखि, श्वशुरकुल माहि रहियो चोमासो ॥ ढाल चालीशमी मोहनें एभणी, मानवतीनो सुणो हिवे तं मासो ॥ वडा० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ मानवती हरपे रहे, जिहा एक थवो वाम ॥ गर्भस्थितिपुरण थई, प्रसव्यो बालक ताम ॥१॥ पोहोरायते जइ विनव्यु, पटराणीने समाज ॥ मानवती एकथभिथ, बालक प्रसव्यो आज ॥ २ ॥ एह हकीगत भूपने, लिखजो विस्तररीत ॥ जि-

म नृप बालक जोइने, पामे मनमां प्रीत ॥ ३ ॥ राणीयो भेलीमिली. मूक्यो तिमहि ज लेख ॥ केते दिवसें ग्रेक्षकें, नृपने दीधो देख ॥ ४ ॥ कागल वांची चित्तमां, नृप पा म्यो विश्लेष ॥ बालक केम प्रसव्यो इणे, कोइक कारण एष ॥ ५ ॥ सीख लही सुसुरा कने, कागल वांचत खेव ॥ नृप चिंते बाल कभणी, जइ जोउं स्वयमेव ॥ ६ ॥ छडे प्र याणे चालतो, धरतो योगण चित्त ॥ पाम्यो ऊज्जयणीपुरी, मानतुंग महिपत्त ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥ पुरमां पेसारो कस्यो, भूपें निज परिवार ॥ पुरकन्याये मो-तियें, वधाव्यो वसुधार ॥ सुगुणिजन सां भलोरे ॥ १ ॥ नृपने लोक पगेंपगें, प्रणमे धरिने नेह ॥ इण आडंबरें आवियो, मानतुंग निजगेह ॥ सु० ॥ २ ॥ सुभटसवे कीधा बि

रा, सनमानी सोच्छाहि ॥ एकाकी नृप अ
वियो, निज अतेउरमाहि ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतन
वती आदें प्रिया, पियुना प्रणमी पाय ॥
लाजकरी ऊभी सहू, आसने वेठो राय ॥
सु० ॥ ४ ॥ पूछे नृपप्रेमदा भणी, मानवती
विररत ॥ अगज केम जायो इणे, कहा मु
झ आगल तत ॥ सु० ॥ ५ ॥ खडखडखड स
हुको हमी, कत भणीकहे एम ॥ स्वामी मा
नवती तणी, कुडी कथा हुए केम ॥ सु० ॥
॥ ६ ॥ ए गुणवती गोरडी तनुज रमाडे वि
शाल ॥ अमथीतो पिउडा विना नवि प्रसवा
ए वाल ॥ सु ॥ ७ ॥ भाग्यरत पियुडा तुमे,
जेए पाम्या नार ॥ तो सुतनोस्यो आसरो,
धन्यधन्य तुम अवतार ॥ सु० ॥ ८ ॥ एहना
पुत्रने आपजो, पाट तुमारो नाह ॥ ए तुम
ने अजुवालशे, राखजो एहवो चाह ॥ सु ॥

॥९॥ जुवो मुख तुम पुत्रनो, जइ एकथंभे गेह ॥ इहां सुं आव्या पाधरा, चूक्या अव सर एह॥ सु०॥ १०॥ तुमथी मानवतीसती, रीसाणी महाराज ॥ तेमाटे जावो वहि, मक रो अमारी लाज ॥ सु० ॥ ११ ॥ इम सघली हासीकरे, पिशुनी वारंवार ॥ राजाएं निज मंत्रिने, तेडाव्यो तिणिवार ॥ सु० ॥ १२ ॥ कहेरे केम अंगज इणे, प्रसव्यो केहीरीत ॥ सचिवकहे जाणुं नही, जथइएह अनी-त ॥ सु० ॥ १३ ॥ मुझने पिण कह्यो राणि-यें, नजरें निरख्यो नांही ॥ साच झुठनो पारिखो, चालो जोइयें क्षणमांहि ॥ सु० ॥ ॥ १४॥ जोजोधर्म प्रभावथी, होसे मंग-लमाल ॥ मोहनविजयें वरणवी, एकता-लीशमी ढाल ॥ सु० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ उठ्या अंतेउरथकी, मंत्रीने म-

इराज॥ आव्यो एकथभे गृहे, बालक जो त्र काज ॥ १ ॥ सहिनाणी घरनी सकल, अचल धरापती दीठ॥ तिम तिमहृदये भूप ने, विस्मय अतिहि पईठ॥ २॥ जाणे नृप निजचित्तमा सहिनाणी मुझतेह॥ प्रसव्यो केम बालक इणे दैवगति कोई एह॥ ३॥ यत्र उघाड्या घरतणा, पेठो नृप घसि माहि॥ दीठी तनुज हुलरावती, मानवती सोछाहि॥ ४॥ मानवतीयें कतने, दीठो न यणे नाम॥ सेजथकी ऊठी करी, लज्जाक री रहि ताम॥ ५ ॥ पियु बेठो पर्यकपरे, दीठ् बालक रूप ॥ कोपें दृग त्राकीकरी, भाखे त्रियने भूप ॥ ६ ॥

॥ढाल वेतालीशमी ॥ पियु पद्मिणि ने पूछेजी, बोलो मधुरी वाण ॥ हाथ लगाडी मूछेजी ॥ बो ॥ कहे सा रु इहा तुछे

जी॥बो०॥सुतनुं कारणसुंछेजी॥बो०॥हुं परदे
श गयोहतो मुग्धे, किम प्रसव्योतें बाल ॥
पियु० ॥बो०॥ १॥पुरुष प्रवेश विशेषेंजी ॥
बो० ॥ सुहणेपोण नवि दिसेजी ॥ बो० ॥ गृह
तल बांध्यो शीसेजी ॥ बो० ॥ किम धर्यो
गर्भ जगीशेजी॥बो०॥ के इहांरहि कोई देव
आराध्यो, पियुविण थयोजे पुत्र ॥ पी० ॥
॥ बो० ॥२ ॥जैनधर्मी कहेवाइजी॥ बो०॥ कर
णी भली कमाइजी ॥ बो० ॥ कुलने लाज
लगाइजी ॥ बो० ॥ हुं धन्यजे तुझपाइजी
॥ बो० ॥ मुझनेतें चरणें नलगाड्यो,
वोढीहती किणें मुख॥ पी० ॥ बो०॥ ३ ॥ तात
कवणछे एहनोजी॥ बो०॥ एअंगजछे केह नो
जी॥बो०॥सोंपो होवे जेहनोजी॥ बो०॥गृह प
ण सेवो तेहनोजी ॥ बो०॥पूरो तुमारो अमथी
नपडे, छो तुमे देवीसरूप ॥पी० ॥ बो०॥४

क्रोधेंकरी राय धारयोजी ॥ वो. ॥ ऊंचे श
ब्द पुकारयोजी ॥ वो. ॥ नृप कहे इम अवि
चारयोजी ॥ वो. ॥ तू जीती हु हारयोजी ॥
वो ॥ फिट कुलहिणी निर्लज्ज निगोडी, उ
भी सु मुखलेय ॥ पी. ॥ वो. ॥ ५ ॥ हु पिण
चूको पहेलीजी ॥ वो. ॥ जे योगण गई मेली
जी ॥ वो. ॥ तस सोंपत करी चेलीजी ॥ वो. ॥
होत तदा तुं सेलीजी ॥ वो. ॥ पिण योगण
ना पेटमा उभी, होत तु नारि निदान ॥
पी० ॥ वो० ॥ ६ ॥ वोली नाहशुं नारीजी ॥
वो० ॥ इम फाकहो अविचारीजी ॥ वो० ॥
जाउ तुम वलिहारीजी ॥ वो० ॥ मकहो व-
हतु भारीजी ॥ वो० ॥ ए अगजछे स्वामी
तुमारो, मतआणो विक्षेप ॥ पी० ॥ वो. ॥
॥ ७ ॥ हुछ राउली दासीजी ॥ वो ॥ छु तु
म तननी विलासीजी ॥ वो ॥ तुम करुणा

अभ्यासीजी ॥ बो० ॥ थयो सुत एमुविला
सीजी ॥ बो०॥ आपण किहां मिल्याहता स्वा
मी, जुउ उघाडी नेंण ॥ पी० ॥ बो० ॥ ८ ॥
तुमे चूकोकां कामीजी ॥ बो० ॥ हुं किम चू
कुं स्वामीजी ॥ बो० ॥ मुझमां नहि काई खा
मीजी ॥ बो० ॥ सहि जाणो गुणधामीजी ॥
बो० ॥ कहोतो तुमारी दियुं सहिनाणी, ता
रे मानसो साच ॥ पी० ॥ बो० ॥ ९ ॥ भाखे
भूप भराडोजी ॥ बो० ॥ त्रिय मत बोलो
आडोजी ॥ बो० ॥ मुझ सहिनाणी सरा
डोजी ॥ बो० ॥ होएतो कोई देखाडोजी ॥
बो० ॥ तव तिणें हार नामांकितमुद्रडी,
दीधी पिउडाने हाथ ॥ पी० ॥ बो० ॥ १० ॥
तव नृप विस्मय ग्रहियोजी ॥ बो० ॥ नी-
चो जोइने रहियोजी ॥ बो० ॥ पाछो फिरी
॥ बो० ॥ कांईक

जी॥वो॰॥सा कहे जीवन ऊचो जूवों, लाजोक्ता महाराज॥पी॰॥वो॰॥११॥जुउ मुद्रडी सारीजी॥वो॥निरखो हार निहारीजी॥वो॥होवे सहिनाणी तुमारीजी॥वो॰॥बोलो जाऊहु वारीजी॥वो॰॥ नृप चिंते एधाणी माहरी, इहा किम एहने पास॥पी॥वो १२॥ एहने मुद्री नदीधीजी॥वो॥तो इणे किहाथी लीधीजी॥वो॥इणे कोई बुद्धि कीधीजी॥वो॰॥रही नथी दीसती सीधीजी॥वो॥मोहनविजयें सुदर भाषी, बेतालीसमी ढाल॥पी॥वो॥१३॥

दूहा॥मानतुगकहे नारिने, प्रिया भाषो निरधार॥तारेपासे किहा थकी, मुझ मुद्रीने हार॥१॥तुझ मुझ मेलो सुहणे, पिण नथयो एकवार॥तोसहिनाणी माहरी, किम पामी तंनार॥२॥एतो कौतुक वातडी

तैंकीधी सुजगीश॥ केह साचुं मुझ आग
ळें, गुनह करयो बगशीस॥ ३॥ तव सा
मानवती सती, करी घुंघट पटलाज॥ कर
जोडी पिउने कहे, वातसुणो महाराज॥४॥

॥ढाल मेतालीशमी॥ चंदनकी कटकी
भली॥ ए देशी॥ जे योगण मिलीहती, तु
मने इण पुरमांहे॥ पिउडाहोराज, तस च
रणे तुमेंलागता, करीने अतिहे उच्छाह
॥पी०॥ सुगुणसनेहा सुणो वातडी॥ १ ॥
तुमनेजे टुंबे मारती, पगपग देती गाल॥
पी०॥ ते योगण मत जाणजो, तेहुं हुंती
महीपाल॥ पी०॥ सु०॥ २॥ अने वलि दाक्षि
णपंथमां, आव्युंहतुं सरएक॥ पी०॥ खेच-
री तिहां परण्या तुमे, एकाकी तजी टेक
॥पी०॥ सु०॥ ३॥ चरणोदक पीधुं तुमें, थई
फेन्या वृषभसरूप॥ पी०॥ तेपण खेचरी

हुहती भूलाछो तुमे भूप॥ पी.॥ सु.॥४
रतनवतीने तुमे वलो, परण्या थइ भरता
र॥ पी.॥ तस गुरुणियें तुमने, येठो स्वा
ध्यो कसार॥ पी.॥ सु.॥ ५॥ गुरुणियें तु
मने भोलव्या, रास्या मास छमास॥ पी.
॥ तिहां तुमें मास्यो तेहशुं, विषयिक भो
ग विलास॥ पी.॥ सु.॥ ६॥ गुरुणियें ग
र्भ तुमारडो, धार्योहतो सुविचार॥ पी.॥
तस सहिनाणी दीधी तुमें, येमुद्रडी एहा
र॥ पी.॥ सु ॥ ७॥ तेपिण गुरुणी हुह
ती, बीजीन हती कोय॥ पी.॥ जेतमे ति
हा दीधी हती, ते सहिनाणी जोय॥ पी
॥ ८॥ जो खोटुं येहमा होवे, तो घाल
माहरे गोद॥ पी ॥ हु तेहीज तेहीज त
मे, विसरी गयाशु विनोद॥ पी.॥ सु.॥९
पाल्यामें माहरा बोलडा, साभली खोटे

राजायें तिणिवार ॥ विरह टल्या दंपति मि ल्या, हुउ जयजयकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चंमालीशमी ॥ छेडोनांजी एदे शी ॥ मानतुंगने मानवतीनें, रंगरली थइ सारी ॥ मांहोमांहे वातां मांडी, कंते कपट निवारी ॥ १ ॥ अलगा रहोने, हांरे मुने शाने बोलाबो ॥ अ० ॥ हांरे सा मानवती इम भाखे ॥ अ० ॥ एटेक ॥ पहिला लाड लडावी मुझनें, हिवे कां बोलावो वाहाला ॥ एकथंभो घरनां जे दुखडां, शालेछे थइ माला ॥ अ० ॥ २ ॥ इजत माहेरी शोक्यो माहे, सो पियुडा तुसे राखी ॥ काढी नाखी हूं ति अलगी, जिम घृतमांथी माखी ॥ अ० ॥ ३ ॥ हसी करी तव पीउडो बोले, गुही रे सादे गाढे ॥ हजी लगण तुं वांक अमारो, बेठो [illegible] काढे ॥ अ० ॥ ४ ॥ ए

ती मान मुकाव्यो, वलि कह्योछो दावे ॥ कहे तो परगट पाए लागु, पिणका निपट कहावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ मानवती तव पियुनें पाए, लागी हसीने ताम ॥ दोगवक सुरनीपरें बेहु, विलसे सुख अभिराम ॥ अ० ॥ ६ ॥ हसे रमेगाए करे क्रीडा, वन उपवन भई खेले ॥ एक येकनें नयणथी अलगा, कोइ कोईनें नमेले ॥ अ ॥ ७ ॥ नित नित नौतन वेस बनावे, शोक्यो सवि अवटाये ॥ पिण कोईनुं बल नवि चाले, अणख करेसुं थाये ॥ अ ॥ ८ ॥ राजा मानवतीने नेहें, अहनिश रहे लपटाणो ॥ जिम पंकजनें फूलें लीनो, भमररहे लोभाणो ॥ अ० ॥ ९ ॥ बालकनुं पिण नाम समर्प्युं, मदनभ्रम सुखकारी ॥ अनुक्रमे सुतने भणवा मुक्यो, सिरूपो कला अतिसारी ॥ अ० ॥ १० ॥ मान

जोवो में इणेमींदर रह्यां, केहवां कीधांछे काज॥पी०॥सु०॥११॥ए अंगजछे रा उलो, खोले लीउ साम॥पी०॥ हिवे संद ह मत्तआंणजो, जेए भुंडोछे वाम॥पी०॥ सु०॥१२॥हुंछुं पगनी मोजडी, तुमेछो शिरनामोड॥पी०॥हुं कंटाली बावली,तुमेंछो सुरतरु छोड॥पी०॥सु०॥१३॥हुंछुं रात्री जेहवी, तुमेंछो दीपक साफ॥पी०॥जे अ विनय कीधो हुवे, तेकरजो पीयु माफ॥ पी०॥ १४॥ एक वचनने आमले, तुमथी में खेडीजोर॥पी०॥ चाहोते मुझने करो, हुंलुं राउली चोर॥पी०॥सु०॥१५॥तुमे तो जाण्याए कामनी, केम छेतरसे मोय॥ पी०॥ होतांतो होये प्रभु, मतकरजो अं-दोय॥पी०॥ १६ ॥मानवंतीनां बोलडां, सांभलिया भूपाल॥पी०॥मोहनविजयें ए

कही, त्रेतालीसमी ढाल ॥ सु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ कर्ते निज कातातणी, सुणी वात सुविचार ॥ मुखमें घाली अगुली, धूणे शिर तिणिवार ॥ १ ॥ महिपति चिंते चित्तमा, अहो अहो नारिचरित्त ॥ मुझने इणे धूल्योखरो, कठिन करीनें चित्त ॥ २ ॥ हिवे नवि छेडु एहने, घर सरखी नहि जात ॥ जोहिवे छेडु एहने, तोवालि खेले घात ॥ ॥ ३ ॥ जोजो वुद्धिसीं केलवी, मुझने लगाव्यो पाय ॥ सुतपण सहेजें सापव्यो, थयो इहा धर्म सखाय ॥ ४ ॥ इम चिंती ऊठ्यो नृपति, आव्यो तव दरबार ॥ हयगयरथ सिणगारिया, सुभटादिक तिणिवार ॥ ५ ॥ इम आडबर करी घणो, मूक्यो सचिव तिणे गह ॥ नेडी आयो अतेउरे, मानवती धरि नेह ॥ ६ ॥ इम महोच्छव वहु कर्यो,

धती जिनमंदिर सुंदर, खरचे दाम सुभा
वे ॥ जिनभाषित समकित आराधे, भावे
भावना भावे ॥ अ० ॥ ११॥इम दंपती-वि
षयालु रमतां, केई दिवस गमाया ॥ एहवे
धर्मघोष गुरु फिरता, पुरनें परिसर आ-
या ॥ अ० ॥ १२ ॥ मानतुंगने मानवती
बेहु, पाम्या मंगलमाल ॥ मोहनविजयें रू
डी भाखी, चंमालीसमी ढाल॥ अ० ॥१३॥

दुहा ॥ पुरजनऋषिनें वांदवा, पोहोता
धन्नपझार ॥ भुपें कारण पुछिउं, तेह कहे
सुविचार ॥ १ स्वामी तुम वनमें सुभग,
श्रीधर्मघोष ऋषिराय ॥ तस पदपंकज प्र
णमवा, नागरिक तिहां जाय ॥ २ ॥ नृप
पिण मानवती प्रमुख, लेई निज परिवार॥
बहु आडंबरें वांदवा, आव्यो तिहां वसुधा
र ॥ ३ ॥ पंचाभिगम साचवी, प्रणम्या ऋ

पिने ताम ॥ राजा मानवती प्रमुति बेठा उ
चिते ठाम ॥ ४ ॥ धर्माशीष देइ करी, प्रार-
भे उपदेश ॥ भविक तरे ससार जिम, ते
उपदेश विशेपे ॥ ५ ॥

॥ ढाल पचेतालीशमी ॥ भविजन ध-
र्मकरोरे, भविजन धर्मकरो ॥ पापेंका पिंड
भरोरे, ए हित शीखधरोरें ॥ जेम शिवना
रवरोरे, भविजन धर्मकरोरे ॥ धर्मकरो ॥ए
आकणी॥ कूडी माया कूडी छाया, कूडा बां-
धव लोक, कूडी जेहवी वादल छाया॥ गते हों
ए फोकरे, भविजन धर्मकरो॥ १॥ पखीनीपरे
मेलोमिलिउ, उडता केही वार॥ तेम सगाइ
स्वारथ केरी, मिटता स्यो विचाररें ॥ भ॰ ॥
॥ २ ॥ तात कहे कोइ मात कहेको, दास
कहेको स्वाम ॥ थोडे थोडे वेइंची लीघो,
आतमने सुख आमरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ प्रीत क

रीको वैर करोको, साच करोको कूड ॥ थासे सहुने अंते आखर, धूल भेली ए धूल रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्राणथी वालो जाणियें जेहने, राखीये नेह निग्रंथ ॥ ते पिण पूछवा नरहे ऊभो, जातां लांबे पंथरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ केइ गयाने केइ जासे, केई जावणहार ॥ इणी वाटे पुण्य विहुणा, मानवीया अणपाररे ॥ भ० ॥ ६ ॥ भूपतणी पिण रंकतणी पिण, आखर एकज वाट, साथें आवे सुकृत कीधुं, उतरतां भवघाटरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ काचा कुंभतणो स्यो भरोसो, धननो केहो मद ॥ संध्याराग तणीपरें देखत, उवटी जाय असदरे ॥ भ० ॥ ८ ॥ दस दृष्टांतें मानवकेरो, पाम्यो जनम कदाय ॥ ए अवतार करी फिरी दुर्लभ, भ्रमराक्षरनें न्यायरे ॥ भ० ॥ ९ ॥ दान शीयल तप भाव प्रकाश्यो, चारे भे

र्दें धर्म॥ तेहने आदरे जेभवि प्राणी, तो॰
ड सघला कर्मरे॥ भ०॥ १०॥ आप आप
नें तुव तरसो, इहा नाहि कोइ सखाइ॥
पाप करीतो नोइने करजो, ते अधिकार
कहाइरे॥ भ०॥ ११॥ इम उपदेश सु-
णीनें राजा, प्रतिबोध पाम्यो तिवार॥ क
रजोडी ऋपिनें इम भाखे, वीनलडी अवधा
ररे॥ भ ॥ १२॥ मानवतीयें मुझनें स्वामी,
पाय लगाड्या केम॥ पाल्या बोल इणें मु
झसेंति, कारण कहो तस तेमरे॥ भ ॥
॥ १३॥ माहरू चूक्यु काइ नचाल्यो, तेझा
माटे स्वामी॥ एह कथानो आस थो मुझ
ने, कहुछु हु शिरनामीरे॥ भ ॥ १४॥ गु
रुकहे तुम विहुनो भूरवभव, साभल वहुं
भूपाल॥ मोहनविजयें भापी रूडी, पें॰
तालीसमी ढालरे॥ भ०॥ १५॥

दुहा ॥ कहे गुरु जंबुद्वीपमां, क्षेत्र भरत कहेवाय ॥ प्रथ्वीभूषणपुर तिहां, तिलकसेन तिहां राय ॥ १ ॥ धनदत्तसेठ वसे तिहां, तुमे अंगज तसबाल ॥ वड बंधव जिनदत्त जी, न्हानोते जिनपाल॥२॥अनुक्रमें जिनपालने, सद्गुरु मिल्या सुजाण ॥ लीधो तेहना मुखथकी, मृषावाद पच्चखाण ॥ ३ ॥ कूड न बोले वणजतां, हसतां नकहे कूड ॥ जाणे इम जिनपाल मन, जिहां कूड तिहां धूड ॥ ४ ॥ सत्यवदे व्यापारमां, लाभ, उपावे नांहि ॥ छानो धर्मकरे सदा, मुगन रहे मनमांहि ॥ ५ ॥ वडबांधव जिनदत्त जई, बेठो नांमा जोट ॥ अधिक लाभ देखे नहि, देखे साहमी खोट ॥ ६ ॥ तेडीने जिनपालने, पूछे जिनदत्त एम ॥ लाभ अधिक दूरे रह्यो, खोट गई पिण केम ॥ ७ ॥

र्दे धर्म॥ तेह्नने आदरे जेमवि प्राणी, तो॰
ढ सघला कर्मरे॥ भ० ॥ १० ॥ आप आप
नें तुव तरसो, इहा नहि कोइ सखाइ ॥
पाप करोतो जोइने करजो, ते अधिकार
कहाइरे ॥ भ० ॥ ११ ॥ इम उपदेश सु-
णिनें राजा, प्रतिबोध पाम्यो तिवार ॥ क
रजोडी ऋषिनें इम भाखे, वीनतडी अवधा
ररे ॥ भ ॥ १२ ॥ मानक्तीर्ये मुझनें स्वामी,
पाय लगाड्या केम ॥ पाल्या बोल इणें मु
झसेंति, कारण कहो तस तेमरे ॥ भ० ॥
॥ १३ ॥ माहरु चूक्यु काइ नचाल्यो, तेशा
माटे स्वामी ॥ एह कथानो आस धो मुझ
ने, कहुछु हु शिरनामीरे ॥ भ० ॥ १४ ॥ गु
रुकहे तुम विहुनो भूरवभव, सामल कहु
भूपाल ॥ मोहनविजयें भापी रूडी, पें॰
तालीसमी ढालरे ॥ भ० ॥ १५ ॥

दुहा॥ कहे गुरु जंबुद्वीपमां, क्षेत्र भरत कहेवाय॥ प्रथ्वीभूषणपुर तिहां, तिलकसेन तिहां राय॥ १॥ धनदत्तसेठ वसे तिहां, तुमे अंगज तसबाल॥ वड बंधव जिनदत्त जी, न्हानोते जिनपाल॥२॥ अनुक्रमें जिनपालने, सद्गुरु मिल्या सुजाण॥ लीधो तेहना सुखथकी, मृषावाद पच्चखाण॥ ३॥ कूड न बोले वणजतां, हसतां नकहे कूड॥ जाणे इम जिनपाल मन, जिहां कूड तिहां धूड॥ ४॥ सत्यवदे व्यापारमां, लाभ, उपावे नांहि॥ छानो धर्मकरे सदा, मुगन रहे मनमांहि॥ ५॥ वडबांधव जिनदत्त जई, बेठो नामा जोट॥ अधिक लाभ देखे नहि, देखे साहमी खोट॥ ६॥ तेडीने जिनपालने, पूछे जिनदत्त एम॥ लाभ अधिक दूरे रह्यो, खोट गई पिण केम॥ ७॥

॥ ढाल सेंतालीशमी ॥ जिनदत्त भा-
खेरे एम जिनपालने, रेरे मुरख भाइरे ॥
व्यापार एहवोरे किहा तू शीखियो, किहां
सिस्यो एह कमाईरे ॥ जि०॥ १ ॥ ए व्या-
पारेरे पुरु पाडवु, करसो केमकरी वीररे ॥
केसु लुब्ध्योरे परदारायकी, ईणे गुणे था
सो फकीररे ॥ जि॰ ॥ २ ॥ साचु कहे तुंरे घ
न किहा वावरयो, तवबोल्यो जिनपालरे ॥
द्रव्य कुठामेरे में नथी वावरयो, खोटीकरे
तू षकचालरे ॥जि ॥ ३ ॥ धननी तृष्णारे जो
छे तुझने, तो तुमे करो रोजगाररे ॥ करसो
सुं तुमे घर सोवनतणा, लेई जासो साथे
एमाररे ॥ जि॰ ॥ ४ ॥ धनते रहेसेरे व्यापीने
धरा सगे काई नही आवेरे ॥ आवसे सा-
थेरे अघने अनर्थ ए, लूणे जेहवो कण खे
रे ॥ जि ॥ ५ ॥ मेंतो दीठोरे सघलो कार

मी, रे बांधव गुणवंतरे ॥ परने मुसवोरे मु
जथी नवी होए, कहुंछुं तुमनें एकंतरे ॥जि.
॥६॥ इम बांधव जनपालनां बोलडा, जि
नदत्त सांभली कोप्योरे ॥ भाईने माटेरे क
हियें कोईने, तामस अतिघणो व्याप्योरे
॥जि०॥७॥ पांचसेरी जिनपालभणी त-
दा, पापी जिनदत्तें नांखीरे ॥ लागी तेहरे
कोय कुठामनी, लघु बांधव रह्यो सांखीरे
॥जि०॥८॥काल कर्यो जिनपाले प्रहार-
थी, कीधो लघुभव एकरे ॥ बीजे भवेंत जी
व चवी थयो, मानवंती सुविवेकरे ॥ जि०॥
॥९॥ हिवे जिनदत्तरे बांधव विरहथी, के
ते कालें विपन्नरे ॥ उपनो जीवते राजपणे
इहां, नृप तूंहीज उत्पन्नरे ॥ जि०॥१०॥
पूरव जन्मने वैर वसेकरी, तें एहने दुःख
दीधोरे ॥ इणे पिण पूर्वेरे सत्यवचन थकी,

बोल सुबोलते कीधोरे ॥ ११ ॥ नृपकहे कू
ड वचन विरम्यातणो, एहवोछे फल स्वा
मीरे, तोएता दिन फोगट हु रहियो, भू
लो भम्यो भव कामीरे॥ जि.॥ १२॥ ऋपि
तव भाखेरे एहवा व्रतअछे, पच भला अ
ने वाररे॥ अधिक फल तेहतणा अछे, द्वि
तीय एह व्रत साररे॥ जि ॥ १३ ॥ बीजा
व्रतथीरे पिण कोईतरथा, पाम्या मुगती-
नो ठामरे॥ गुरुना मुखथकी वचनसुणी इ
स्या, वीनवे नरपति तामरे॥ जि. ॥ १४ ॥
स्वामी तारोरे मुझने ससारथी, दियो दी
क्षा सुविसालरे॥ मोहने भापीरे वैरागरग
नी, सैंतालीशमी ढालरे॥ जि० ॥ १५ ॥

दुहा॥ राज्य समर्पी पुत्रने, मानतुग म
हिपाल॥ सुदरी साथे सचरी, थयो दीक्षा
[illegible]जमाल ॥ १ ॥ मानवती नृपतिसहित,

परिहरे राज्य तिवार ॥ चरण ग्रहे मुनिवर कने, जाणी अथिर संसार ॥२॥ पंचमाहाव्रत परगडा, पाले निरतीचार ॥ विनयादिक सवि अभ्यसे, करता उग्रविहार ॥ ३ ॥ मानतुंग मुनिवर थयो, द्वादशअंगी जाण ॥ मानवती साधवी भली, संजम वहे सुजाण ॥ ४ ॥ पंचमाहाव्रतने उभय, नविहुं लागडे दोष ॥ शत्रु मित्र सरखा गिणे, धरे सदा संतोष ॥ ५ ॥ पाठांतरे ॥ सत्तर भेद संजमतणा, ॥ पाले विरती चोख ॥ शत्रु मित्र सारिखा गिणे, धरे दीस संतोष ॥६॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ वाथाना भाव मनीदेशी ॥ शम दम खंति तणा गुणपूरा संजमरंगे रंगाणाहे ॥ ससनेहा भ बीजुं व्रत चित्तलाइयें ॥ एआंकणी ॥ पुनो खप करता विचरे, पाले

आणाहे ॥ १ ॥ स० ॥ राजऋद्धि गृहवासत
णा सुख, ते सुहणे नविचारेहे ॥स० ॥ जिम
आहिकचुकी विरमी अलगी, तिम फिरीने
न निहारेहे ॥ स० ॥ २ ॥ मानतुंग ऋषि मा
नवती तिम, मोहादिकने रोहेहे ॥ स० ॥क
रे विहार भलो जिनकल्पी, भवियणने प-
डिवोहेहे ॥ स० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें मासतणी स
लेपण, करिने बिहु गहगहताहे ॥ स० ॥
अयर तेंत्रीसने आयु समूहे, सवठसिद्धे पो
होताहे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिहांथी पिणते बेहु च
वसे, महाविदेहे अवतरसेहे ॥ स० ॥ मनुष्य
जनम लहेसेते रुडु, उतम करणी करसे-
हे ॥ स० ॥ ५ ॥ लेसे दीक्षा वरसे केवल, र
चसे सुरपति कमलाहे ॥ अते मुगति लेसे
बिहुए, जेहें शास्त्रमा विमलाहे ॥ स० ॥६॥
नउ मानवतीयें पिउने, इणभवे पाय लगा

छ्योहे ॥स० ॥ एके वचन वृथा नवि हूउं, अंते शिवपद पाम्योहे ॥ स० ॥ ॥७॥ इहलोके परलोकें सुखनो, दायक व्रतेछे बीजोहे ॥स० ॥ सत्यवचनजे बोले प्राणी, तेउपर मत खीजोहे ॥स० ॥ ८ ॥ सत्यवचननां एहवां फलछे, मनमानोते चाखोहे ॥स० ॥मृपावाद परहरवाकेरी, प्रज्ञा सहुको राखोहे ॥स० ॥९॥ मानतुंगने मानवतीनो, रास रच्योमें रूडोहे ॥स० ॥ लेजो कविजन एह सुधारी, होयेजे अक्षर कूडोहे ॥स०॥ १०॥ मेंतो करीछे बालक क्रीडा, हंसुं जाणुं जोडीहे ॥स० हासो कोइ मकरसो कोविद, मतको नाखो विखोडीहे ॥स०॥ ११॥चउविह संघना आग्रहथकी में, कीधो रास रसीलोहे ॥स० ॥ जेकोइ भणसे सुणजे प्राणी, ते लहेसे शिवचेलो हे

॥स०॥ १२ ॥ समत सतरेसे साठ सुवर्षे, रुद्धिमाम शुद्धपर्क्षेहे ॥ स० ॥ अष्टमी कर्म्म वाटी उदयिक, सौम्यावर सु प्रत्यर्क्षेहे ॥ स ॥ १३ ॥ श्रीविजयसेनसुरिपाय सेवक, कीर्तिविजय उवजायाहे ॥स०॥ तास शीस सजम गुणलीना, मानविजय वुद्ध रायाहे ॥ स ॥ १४ ॥ तास शिष्य पडित मुकुटमणि, रूप विजय कविरायाहे ॥ स० ॥ तास चरण करुणाथी करीने, अक्षरगुण में गायाहे ॥ स० ॥ १५ ॥ अणहिल्लपुर पाटणमा रहिने, मानवतीगुण गायाहे ॥स ॥दुर्ग्ग दास राठोडने राजे आणद अधिक उपायाहे॥ स ॥ १६॥ सडतालीशें ढालें करीने, कीधो राम रमालाहे ॥ स ॥ मोहनविजयकहे नित होजो, घरघर मगल मालाहे॥ स०॥ १७॥

इति मानतुग मानवती रास समाप्त ॥

अगाऊ सही देवण वाळानें किंमत.

पोर्थीया छपावणी छे तिणारो तपसील.

१ श्री जैनधर्म सिध्धात सार पुस्तक. ....किंमत १। रुपाय।.
१ श्रीपाळ राजाको चरीत्र अथ साहित किंमत ८ १४ आणें.
२ श्रीपाळ राजाकों रास च्यार खडको किंमत ८१० आणें.
३ श्रीराम चरित्र ... ... किंमत १ रुपाया.
४ चंद राजाकी चोपाई .... किंमत ८ १४ आणें.
५ करकंडू आदिकच्यार राजाको रास किंमत ८९ आणें.
५ मकतावर ... ... किंमत ८६ आणें.
६ चंद्रगुप्त राजाकी चोपाई ... . किंमत ८४ आणें.
७ रतन कवरकी चोपाई .... किंमत ८४ आणें.
८ केवली नाथजी कयवन्नाशेठकी चोपाई किंमत ८४ आणें.
९ एलापुत्रकी चोपाई तथा विजय शेठ विजया रे णिंकी किंमत ८४ आणें.
चोढाळीयो .... .. किंमत ८४ आणें.
१० उत्तम चरित्र कुमारकी चोपाई किंमत ८४ आणें.
११ विविधपूजा छोटी तथा विसस्थानकनी पुजा किंमत ८४ आणें.
१२ सिलोका सग्रह भाग १ ला .... किंमत ८९ आणें.
१३ स्तवन मझाय सग्रह भाग २ जो किंमत ८४ आणें.

फेर नवा नवा पुस्तक छपावेंना छे.

मारवाडी तथा गुजराथी हस्त अक्षरका कीता.

एकमतकी किंमत ८— आणा.

इण रातसु पुस्तक छपावणाछेसु आगाऊसही सुमार १०० चाहि- जे सही आयासु छापणने सुरवात हुसी पुस्तक तयार हुया पछि लेवणारन पुस्तगरी किंमत उपर लिख्या किंमतसुं दिडपट ज्यास्त पडसी.

नाना दादाजीगुंड पुणें.

पोथीया, तयार हुइ छे तीणाकी किंमत

१ श्री जैन धर्म ध्यान प्रदीपक पुस्तक किमत १॥ रुपया
२ श्री विनय रत्न मञ्जुषा पुस्तक किमत १२ आने
३ हंसराज वछराजको रास किमत ९ आने
४ अंमडको तथा राणी पदमावतीको रास किमत ॥४ आने
५ सतवारी राजा हरीचंदकी चोपाई किमत ४ आने
६ धन्ना सालभद्र सेठकी चोपाई किमत ४ आने
७ मेघरथराजानी चोपाई किमत १ आने
८ मगृगा कळसकी चोपाई किमत ४ आने
९ देवकी राणीको रास [छे भाइनो रास] किमत ४ आने
१ लिलावती राणीकी चोपाई अने महावीर स्वामीनो सतावीस भव वर्णन स्तवन किमत ४ आने
११ अमरसेन वयसेन राजाकी चोपाइ किमत ४ आने
११ चन्दन मलीयागीरिकी चोपाइ किमत ४ आने
१३ परदेशी राजाको रास किमत ४ आने
१४ श्रीचोवीसी वरमण तथा आणापुरवीकी पोथी किमत ८ आने
१५ श्री आणापुरवी किमत १ आना
१६ पुञ्ज धन्न भगवानको गडो किमत ॥१ आने
१७ चोवीसीका पाठ्ये किमत १ आना
१८ महिरनी राजा अन ममिसागर प्रधानकी चापाई किमत ॥४ आने
१९ दानद सगीयागकी चोपाइ तथ कर्म चंध निवारक रास
२ स्तवन सज्झाय संग्रह भागपहिला किमत ॥४ आने
२१ स्तवन सज्झाय संग्रह भाग दुसरा किमत ॥४ आने
नाना ग्रहरामी गुरु पुणें नामाषी पेथ,